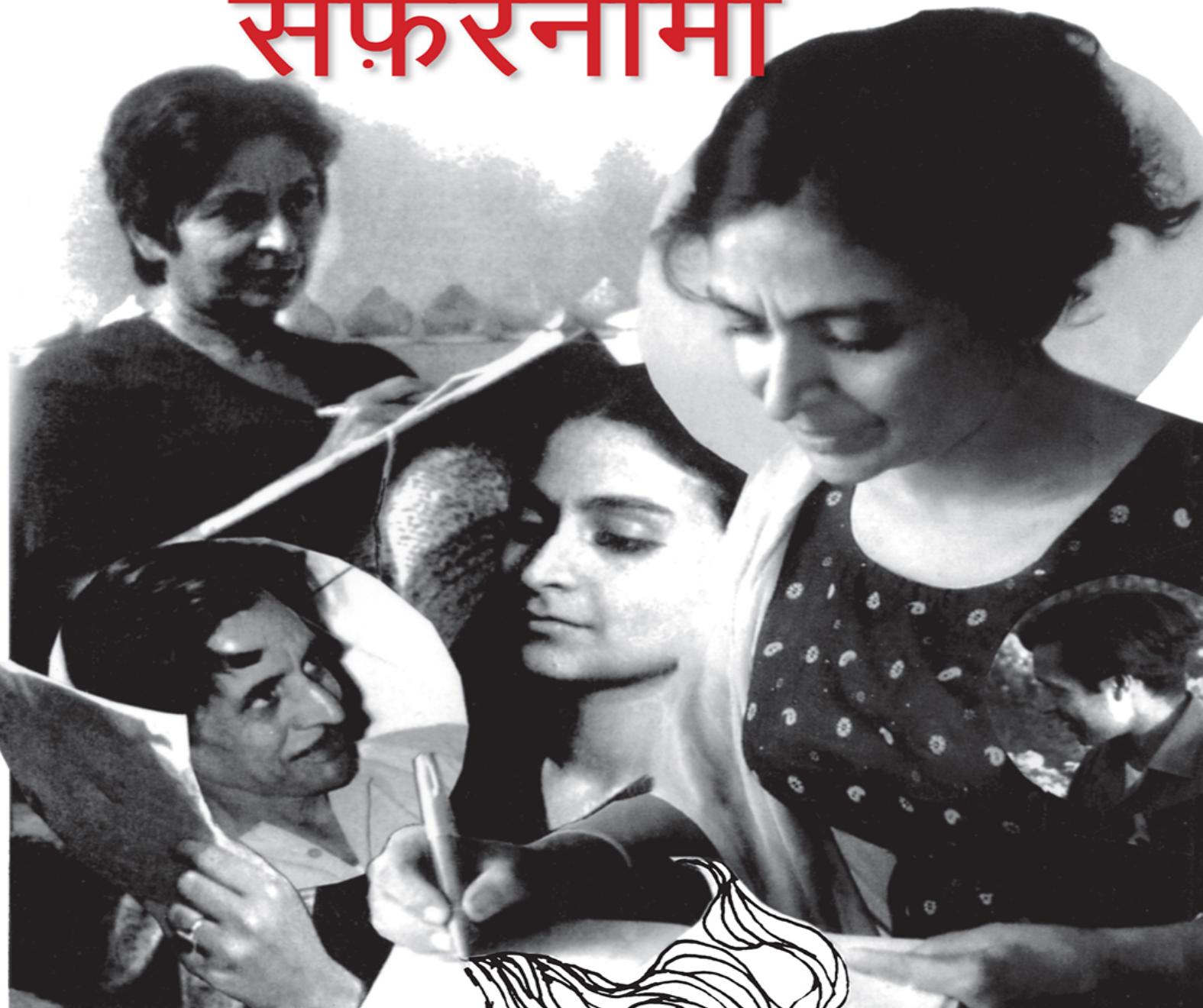




अमृता प्रीतम  
और इमरोज़ के

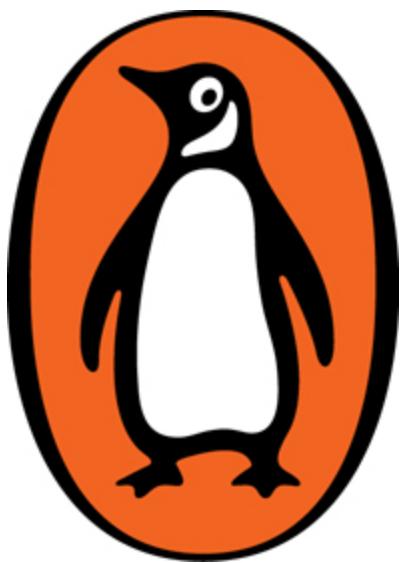
# ख़तों का सफरनामा



सतयुग  
मनचाही जिन्दगी  
का ही नाम है,  
किसी आने वाले  
युग का नहीं...

संपादक  
उमा त्रिलोक





अमृता प्रीतम  
इमरोज

---

## खतों का सफरनामा

प्रस्तुति  
उमा त्रिलोक



# विषय-सूची

लेखक के बारे में

किताब के बारे में....

सम्पादक की कलम से....

चित्र

फॉलो पेंगुइन

कॉपीराइट

## हिन्द पॉकेट बुक्स

### खतों का सफरनामा

अमृता प्रीतम पंजाबी के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक थीं। पंजाब (भारत) के गुजराँवाला जिले में पैदा हुई अमृता प्रीतम को पंजाबी भाषा की पहली कवयित्री माना जाता है। उन्होंने कुल मिलाकर लगभग 100 पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें उनकी चर्चित आत्मकथा रसीदी टिकटभी शामिल है। अमृता प्रीतम उन साहित्यकारों में थीं, जिनकी कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। अपने अंतिम दिनों में अमृता प्रीतम को भारत का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान पद्मविभूषण भी प्राप्त हुआ। साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाली भी वे पहली महिला लेखिका हैं।

## किताब के बारे में...

यह किताब एक प्रेम कहानी हैं, जो सुविख्यात लेखिका व कवयित्री अमृता प्रीतम व उनके दोस्त, साथी, चित्रकार इमरोज़ के आपसी प्रेम-पत्रों द्वारा बयान की गई है।

यह अद्भुत संबंध 1959 में बना, परवान चढ़ा और 45 साल की लम्बी अवधि तक फलाफूला।

एक प्रकार से यह संबंध अब भी कायम है, जबकि अमृता प्रीतम की मृत्यु हो चुकी है। इमरोज़ अक्सर कहते हैं

“हम दोनों आज भी उन अनुपम क्षणों को जी रहे हैं। मेरे बीच अमृता आज भी जिन्दा हैं।”

अमृता जब इमरोज़ से मिलीं, वह दो बच्चों की माँ थी। वह इमरोज़ से सात साल बड़ी थी और एक नाखुश शादीशुदा जिन्दगी जी रही थी, इमरोज़ कुंवारे थे और एक उभरते चित्रकार थे।

कब और कैसे यह संबंध प्रेम में परिवर्तित हुआ, कोई नहीं कह सकता।

यह किताब इन्हीं दो व्यक्तियों के प्रेम से ओत-प्रोत ख़तों का संकलन है।

ये दोनों, एक लेखिका व एक चित्रकार अपनी ही दुनिया के रंगों, विचारों, शब्दों और कविताओं के बीच जीते रहे।

अमृता पंजाबी साहित्य की एक बड़ी लेखिका अपने ही जीवन में एक लीजेंड बन गई और इमरोज़ उनके पीछे एक स्तंभ की तरह खड़े रहे, ताकि वह अपने आपको कभी

अकेला महसूस न करे।

अमृता इमरोज़ के ये खत मूल रूप में पंजाबी में हैं। अमृता इमरोज़ की दोस्त उमा त्रिलोक ने इन खतों का हिन्दी में सम्पादन कर संकलित किया है।

डॉ. उमा त्रिलोक ने यूं तो प्रशासन में डॉक्टरेट किया है और कई प्रशासनिक पदों पर कार्यरत रही हैं, लेकिन वह स्वयं एक कवयित्री, कहानीकार, स्क्रिप्ट राइटर व गीतकार हैं। उन्हें प्रशासनिक व साहित्यिक कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। उमा त्रिलोक दो भाषाओं में लिखती हैं। अब तक उनके चार कविता संग्रह ‘द माइंड स्केप’, ‘ऑफ ऑटम रोज़िज़’, ‘ख्यालों के साये’, व ‘तीसरा बिंदु’ छप चुके हैं। उनकी बहुचर्चित पुस्तक ‘अमृता इमरोज ए लव स्टोरी’ छः भाषाओं में छप चुकी है और दो विदेशी भाषाओं में छप रही है।

## सम्पादक की कलम से...

अमृता ने जो इमरोज़ को पहला खत लिखा था, वह सिर्फ एक लाइन का था। यह खत इमरोज़ को तब मिला था, जब वह गुरुदत्त के साथ काम करने के लिए दिल्ली छोड़कर बम्बई चले गए थे।

### वह एक लाइन का खत था –

‘बम्बई अपने आर्टिस्ट को ‘जी आया’ (स्वागतम) कहती है।’

इस खत में अमृता ने न तो इमरोज़ को किसी नाम से संबोधित किया था और न ही अपना नाम लिखा था।

जिस दिन यह खत इमरोज़ को बम्बई में मिला, उस दिन उन्हें यह लगा, जैसे अमृता के अस्तित्व का नाम बम्बई भी है।

इमरोज़ अमृता को बहुत से नामों से बुलाते रहे हैं। आशी’ से लेकर ‘बरकते’ तक, कितने ही नामों से। उन्हें जो भी सुन्दर लगता, वह उन्हें उसी नाम से पुकारने लगते। जो भी पसन्द आता, वही नाम रख देते।

जब उन्होंने ‘जोरबा-द-ग्रीक’ नॉवल पढ़ा, तब वह उन्हें ‘ज़ोरबी’ पुकारने लगे। स्पेनिश आर्टिस्ट गोया पर लिखे नॉवल ‘द नेकिड माजा’ को पढ़ने के बाद कितने ही समय तक इमरोज़ अमृता को ‘माजा’ कहकर पुकारते रहे। यह नाम उन्हें बहुत अपना-अपना लगता था। बाद में उन्हें पता लगा कि मराठी भाषा में ‘माझा’ का अर्थ मेरा होता है। शायद इसीलिए उन्हें यह बहुत अपना-अपना लगा।

वैसे घर में, खासकर रसोई में उन्हें ‘बरकते’ कहकर ही बुलाते थे, वह सचमुच उनकी बरकत थीं।

इमरोज़ स्वभाव से ही नौकरी नहीं कर सकते थे। कभी-कभी काम की कमी भी हो जाती थी, लेकिन इमरोज़ को कभी कमी महसूस नहीं हुई। उनका थोड़ा भी ‘बरकते’ के स्पर्श से बहुत हो जाता था। एक रात को बातें करते-करते दो बज गए थे। उस दिन सुबह से ही अमृता के कंधे में दर्द था। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी और इमरोज़ खिड़की में बैठे थे। तभी अचानक जैसे कोई बात बन गई हो, एक किताब की बात, अमृता एकदम उठकर बैठ गई। फाइल संभाली और उसी समय बिस्तर पर बैठे-बैठे किताब तैयार करने लगीं। इमरोज़ चकित हो उन्हें देखते रह गए।

अमृता बिल्कुल ताज़ा और स्वस्थ दिखने लगी थीं। पीड़ा जैसे दूर हटकर हैरान हो गई थी। इमरोज़ हैरानी में उठे और चाय बनाने लगे, फिर चाय का प्याला अमृता के हाथ में थमाते हुए बोले, “तुम किस पर गई हो ?”

तो उन्होंने सहज में उत्तर दिया,

“खुदा पर”!

उस दिन इमरोज़ ने जाना कि उनका एक नाम ‘खुदा’ भी हो सकता था, लेकिन इस नाम से उन्होंने कभी अमृता को पुकारा नहीं सिर्फ देखा और लगातार देखते रहते, जब वह काम करती रहती।

**खत के बारे में अमृता ने लिखा था –**

‘मेरे महबूब’, मेरे तसव्वुर, मेरी सारी ज़िन्दगी मुझे ऐसी लगती है, जैसे मैंने तुम्हें एक खत लिखा हो। मेरे दिल की हर धड़कन, एक अक्षर है, मेरी हर सांस जैसे कोई यात्रा, हर दिन जैसे कोई वाक्य और सारी ज़िन्दगी जैसे एक ख़त। अगर कभी यह ख़त तुम्हारे पास पहुंच जाता, तो मुझे कभी भी भाषा के शब्दों की मोहताजी न होती।

इसके अतिरिक्त अमृता की कई ऐसी रचनाएं हैं, जो खतों की सूरत में हैं, जैसे – सुनेहड़े. एक लम्बी कविता है, जो साहिर के खत के आने पर शुरू होती है। यह कविता उन्होंने 1953 में लिखी थी और सन् 1953 को ही समर्पित कर दी थी।

‘आखिरी खत’ अमृता ने साहिर को संबोधित किया, लेकिन उसका नाम नहीं लिखा। यह खत उन्होंने 1956 में लिखा था। यह साल अमृता से इमरोज़ की पहचान का पहला साल था। उन दिनों इमरोज़ उर्दू की पत्रिकाओं ‘शमा’ और ‘आईना’ के लिए काम करते थे। जब ‘आखिरी खत’ ‘आईना’ में छपने के लिए आया, तो इमरोज़ ने अमृता से पूछा, “यह खत तुमने किसे लिखा है? अगर तुम बताओ, तो मैं उसकी तस्वीर भी बना दूं।”

तब अमृता कुछ कहने से झिझक गई थी और इमरोज़ ने उस आखिरी खत के साथ कोई एक तस्वीर बना दी।

कविता ‘एक खत’ अमृता ने वर्तमान दशा की ओर से धरती के भविष्य के नाम लिखी थी, जो उनके कविता संग्रह कागज़ और कैनवास में शामिल है।

‘एक खत लेख अमृता ने अपने वारिस के नाम लिखा। वह सफरनामा किताब में शामिल है।

‘एक खत’ ‘लिखतुम तमाम धरती पढ़तुम तमाम लोग’ अमृता ने दुनिया के शासकों और वैज्ञानिकों के नाम लिखी थी।

कविता ‘अहदनामा’ भी एक खत है, जिसमें अमृता ने कहा है – ‘अमन का एक अहदनामा, आओ दुनिया वालो, दस्तखत करो! यह खत उन्होंने सितंबर 1965 में ताशकंद में हो रहे हिंद-पाक के अहदनामें के अवसर पर लिखा था। (कविता-संग्रह ‘मैं जमा तू’))।

‘एक खत’ अमृता ने नवंबर, 1965 में पाकिस्तान के नाम लिखा था। (‘आरसी’, संग्राम अंक, 1965), और ‘नामा-ए-खुलूस’ लेख 10 फरवरी, 1970 को पाकिस्तान के हमकलम दोस्तों के नाम लिखा था, (नागमणि, मार्च, 1970)।

ये सारे खत उनकी रचना के हिस्से हैं, इसलिए इस किताब में शामिल नहीं किए।

अमृता की कविता ‘साल मुबारक’ इमरोज़ के लिए एक खत थी, जो उनकी आपसी नाराज़गी के दौरान जनवरी, 1961 में अमृता ने इमरोज़ को बम्बई भेजी थी। वह सिर्फ कविता थी। उसके साथ कोई खत नहीं था। यह कविता ही खत थी।

अमृता ने अपनी कहानी ‘रौशनी का हावका भी उसी महीने डाक द्वारा इमरोज़ को भेजी थी, जो उनके लिए एक खत थी। वह भी अमृता की रचनाओं के रूप में है। इसलिए वह खत भी यहां शामिल नहीं है।

इस किताब में वही खत शामिल किए गए हैं, जो सीधे डाक से उन्हें मिले और जो इमरोज़ ने सीधे अमृता को लिखे थे।

यह बहुत कम लोग जानते हैं कि अमृता की ठंडे कोहरे जैसी विछोहभरी ज़िन्दगी इमरोज़ के आते ही गुलाबी हो गई।

अमृता की शख्सियत के इर्द-गिर्द जो सुनहरा रंग दिखाई देता रहा, वह इमरोज़ के प्यार की परछाई था।

इमरोज़ के आते ही अमृता की कलम की चिंगारी-शोला बन गई। इमरोज़ ही उनकी हिज़-भरी ज़िन्दगी में रोशनी की किरण थे।

अमृता ने यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं किया कि उन्हें एक प्यार करने वाले की तलाश थी। इमरोज़ तक पहुंचते ही जैसे अमृता की प्यास को मुकाम मिल गया

अमृता अपने नॉवलों और कहानियों के किरदारों के ज़रिये अपने इस विछोह को बयान करती रहीं। यहां तक कि एक दिन उन्होंने इमरोज़ से यह पूछ ही लिया कि क्या हर जन्म में सुंदरा का यही हश्र होगा, इसी वाक्य ने बयान कर दिया कि वह किस क़द्र उदास थीं, परेशांथीं।

इमरोज़ ने फिर से अमृता के लिए एक ज़रखेज ज़मीन पर प्यार का एक सपना बुना, जहां वह फिर से प्यार का आशियाना बना सकती थीं।

अपनी ज़िन्दगी के पिछले 45 सालों में अमृता ने इमरोज़ की मोहब्बत को भरपूर जिया और उसी प्यार की खुशबू में महकती रहीं।

जब-जब वे एक दूसरे से दूर गए, उन्होंने अपने खतों से इस मोहब्बत के चिराग को जलाए रखा।

अमृता को जीने के लिए अपने पाठकों, आलोचकों, या प्रशंसकों की वाह-वाह काफ़ी नहीं थी।

उन्हें प्यार चाहिए था, उस शख्स का, जिसे वह अपना रांझा या मिर्जा बना सकती थीं।

अमृता खुद प्रेम-गीत लिखती रहीं, विरह-गीत लिखती रहीं, अपने बंधु, अपने मितवा को बुलाती रहीं।

अमृता जानती थी कि वह इमरोज़ की मनचाही थी, लेकिन फिर भी उन्हें अपना, इमरोज़ से सात साल बड़ा होना चुभता रहा। उन्हें यह बात कचोटती रही कि जब उन्हें प्यार मिला उनकी ज़िन्दगी की शाम हो चली थी। वह अपनी बकाया ज़िन्दगी इमरोज़ के साथ भरपूर जीना चाहती थीं। जब कि इमरोज़ उन्हें अपनी उम्र को अपने प्यार के पैमाने से नापने को कहते, सालों से नहीं।

अपनी विदेश यात्राओं के दौरान अमृता इमरोज़ को बहुत याद करती। चाहे वह समुद्र की लहरें देखते वक्त हो या फिर हैनरी मिलर की किताब पढ़ते वक्त। वह चाहती रही कि इमरोज़ उनके साथ हमेशा रहें।

जब इमरोज़ उनके साथ नहीं होते, तो उनके साथ इमरोज़ की यादें होतीं। अमृता उन्हीं यादों के साथ सोती, उन्हीं यादों के साथ जागतीं और यादों से बातें करतीं।

बहुत हैरानी की बात है कि यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं कि अमृता की रचनाओं में प्राण फूंकने वाले का नाम इमरोज़ है।

इस किताब में दिए गए अमृता इमरोज़ के वह मोहब्बत भरे खत हैं, जो इन दोनों की प्यार-भरी ज़िन्दगी के अंदर झाँकने के लिए एक झरोखा हैं।

अमृता इमरोज़ को अपनी ज़िन्दगी की नाव का मल्लाह मानती थीं, लेकिन फिर भी पार उतरना नहीं चाहती थी। वह उनके साथ ढूब जाना चाहती थी।

और कायनात ने कुछ ऐसा ही कर दिया। अमृता बीमार हो गई, फिर शुरू हो गई तीमारदारी। इमरोज़ ने उन्हें बच्चों की तरह, संभाला, हाथों से खिलाया, हाथों से उठाया और अमृता ने उन्हीं हाथों में दम तोड़ा।

एक खुशनसीब रूह ने अपना मुकाम पा लिया।

इमरोज़ कहते हैं कि अमृता मरी नहीं, क्योंकि वह खुद ज़िन्दा हैं। इमरोज़ की हस्ती में अमृता कायम हैं और रहेंगी।

**उमा त्रिलोक**

## संदर्भ

अमृता के उन खतों को, जो उन्होंने इमरोज़ को लिखे थे, जब इकट्ठा किया जा रहा था, तो अमृता ने इमरोज़ से कहा था :

‘इमरोज़, यह जानकारी अधूरी है। याद है, जब आर्थर काउंसिलर, काफका की प्रेमिका पर लिखी जाने वाली किताब का ‘प्रीफेस’ लिख रहा था, तब उसने कहा था, मेरे पास काफका के पत्र हैं, लेकिन मैलिना के खतों के बिना, काका की तस्वीर अधूरी है। वह कहा करता था, “मैलिना के खत मेरे जलते शरीर पर बारिश की बूंदों जैसे हैं और मैं उन बारिश की बूंदों को खो चुका हूं।” पर शुक्र है, मेरे पास तुम्हारे खत महफूज हैं, जो मैं तुम्हें उधार दे सकती हूं।’

यह किताब उन्हीं खतों का संकलन है।

## खत इमरीज़ का

मेरी अपनी,

इतनी पुख्ता ज़बान लिखने वाली,

इतना अनोखा सोचने वाली,

तुम्हारे साथ डर और सहम जैसे लफ़्ज़ लगे हुए अच्छे नहीं लगते और न ही देखे जाते हैं,  
फिर मेरे होते हुए ऐसा नहीं हो सकता। मेरी मानो, एतबार, को और बड़ा करो और देखो,  
ज्यों-ज्यों एतबार को और बड़ा करोगी, डर छोटे और छोटे हो जाएंगे।

क्यों उम्र को सालों में गिनती हो? क्यों नहीं मेरी लगन के हिसाब से गिनती?

मेरी सारी, ‘इंटेंसिटी’ मेरी सारी धड़कनें तुम समेट लो। मेरी लगन तुम्हारी उम्र है, मेरी  
इंटेंसिटी तुम्हारी सेहत।

तुम अपने माझी को और माझी की तल्खियों को छोड़ने की तकलीफ़ सह रही हो। यह  
तकलीफ आरज़ी है।

आओ, मुस्तकबिल में आ जाओ। मुस्तकबिल अपनी सारी मुस्कराहटों के साथ अपना  
दर और दिल खोले तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है...

2.10.59

किस्मत का इंतजार कर रहा  
मुस्तकबिल

## खत इमरीज़ का

मेरी कायनात,

मेरी लगन,

सजदा,

इस सजदे के बाद अपने आप ही हमारे बीच से यह नौ सौ मील का रेगिस्तान हट जाता है।

तुम मेरी किस्मत बनी रहना, फिर किसी बदकिस्मती की मुझे परवाह नहीं।

बम्बई, 24.10.59

तुम्हारा  
जीती

## खत इमरोज़ का

आशी,

किस्मत को अपनी यह पहली दीवाली मुबारक! उन सब को भी जो हमारे अपने हैं।

अपना सब कुछ संभाल कर रखना। यह मेरी अमानत है। मेरी इस अमानत के साथ उदासी की ज्यादती मत करना।

देखो, मैं कितना मजबूत हूं। रूठे हुए रिज़क से किस तरह परदेस में परदेसी बन कर जूझ रहा हूं।

मैंने कभी निगेटिव नहीं सोचा, न यह मेरी फितरत में है।

मैं किसी मुश्किल के आगे झुकना नहीं चाहता, मेरे सारे रास्ते मुश्किल हैं। तुम्हें भी जिस रास्ते पर मिला, मुश्किल था, लेकिन यही मेरा रास्ता है और यही तुम्हारा। मुश्किलें भला कितनी देर हमारा साथ देंगी, हमारे साथ चलेंगी, हमारे कदम इतने मजबूत, दिलेर और तेज़ हैं।

हम किस्मत के बच्चे हैं।

कभी हारना नहीं चाहेंगे...

बम्बई, 29.10.59

तुम्हारा  
जीती

## खत अमृता का

तुम्हारे इतने खूबसूरत खत जीती,  
मेरे तसव्वुर से भी कहीं खूबसूरत, जिनका मैं तमाम उम्र इंतज़ार करती रही। चाहे वह  
इंतज़ार, इंतज़ार ही रहा।

कितनी ही कविताओं में मैं उनका जवाब भी लिखती रही आज वे सच हो गए।

आज मेरा दिल मेरे वश में नहीं आ रहा। आंखें भर-भर आती हैं। मेरी उम्र के साल, इस  
सच को देखने के लिए ठहर क्यों नहीं गए? वो क्यों बढ़ते गए? आज वो तुम्हारे साथ मेल  
नहीं खाते।

तुम मुझे उस जादू-भरी वादी में बुला रहे हो, जहां से मेरी उम्र लौटकर नहीं आती। उम्र  
दिल का साथ नहीं दे रही। दिल उसी जगह ठहर गया है, जहां ठहरने का तुमने उसे इशारा  
किया। सच, उसके पैर वहां ही रुके हुए हैं, पर आजकल मुझे लगता है, एक-एक दिन में  
कई-कई बरस बीते जा रहे हैं।

और अपनी उम्र के इतने बरसों का बोझ मुझसे सहन नहीं हो रहा है...

30.10.59

तुम्हारी  
अमृता

## खत इमरीज़ का

ज़ालिम,

एक बार आवाज़ दो कि तुम मुझे अपने पास बुला ले जाओ।

मेरी किस्मत,

मैं सिर्फ उस आवाज़ का इंतजार कर रहा हूं। मेरा ‘आज’ इंतजार कर रहा है। मेरा ‘मुस्तकबिल’ इंतजार कर रहा है।

एक आवाज़ दो, सब कुछ निछावर कर दूंगा।

1.11.59 शाम सात बजे

तुम्हारा सब कुछ  
जीती

## खत इमरोज़ का

यह खत होनी के घर से लिख रहा हूं।

तुम बत्ती और मैं चिराग।

इस तरह हम बहुत कुछ हैं, लेकिन रोशनी नहीं।

आओ, एक-दूसरे से मिलकर जग उठे।

अपना सब कुछ जगा लें।

एक-न-एक दिन, बत्ती और चिराग की मिन्नतें भी पूरी होंगी।

12.11.59

तुम्हारा  
जीती

## खत इमरीज़ का

ऐ, हाज़री लगाने वाली,

आकर रजिस्टर ही क्यों नहीं संभाल लेती?

एक मकान, बहुत खूबसूरत जगह ले लिया है। आकर इसे घर बना दो। अपना और  
अपने सपनों का घर।

ज़िन्दगी में पहली बार घर चाहा है मैंने। तुम नामुमकिन जैसी जगह पर थीं, जब मैं तुम  
से मिला।

मुझ पर और भरोसा करो, मेरे अपने पन पर पूरा एतबार करो।

जीने की हद तक तुम्हारा।

तुम्हारी ज़िन्दगी का ज़ामिन

तुम्हारा  
जीती

मैं अपने माझी, अब और मुस्तकबिल का पल्ला तुम्हारे आगे फैलाता हूं, इसमें तुम  
अपना माजी, अपना अब और अपना मुस्तकबिल डाल दो।

मेरे जुनून, मेरी वहशत का इम्तहान तो लो। अपने हुस्न की अज़मत का इम्तहान तो लो।

## खत इमरीज़ का

ना उम्मीद मत हो आशी,

मैं आ रहा हूं।

उम्मीदों की तस्वीर को माझी के टूटे हुए शीशे में मत देखो। टूटे हुए एतबारों की किरचें फेंक दो। साबुत दिल से मेरी तरफ देखो।

मेरी, सारी कायनात तुम्हारा इंतज़ार कर रही है, सिर्फ तुम्हारा। परदेस में मेरा यह पहला दिन है।

मुश्किल राहों पर मैंने पहला कदम साबुत दिल से और साबुत कदम से शुरू किया है।

मुझे अपनी तरह का आर्टिस्ट बनना है। तुम मेरे साथ मिलकर मेरी सारी किस्मत, मेरी कला और मेरी हिम्मत बन जाओ।

इस नौ सौ मील की दूरी पर मेरे विश्वास का हाथ थाम कर पुल बना लो।

यह थोड़ी-सी फुरसत हमारे मिलन के रंग और गहरे और पक्के कर देगी। इसी विश्वास के साथ...

22.01.60

तुम्हारा

.....

## खत अमृता का

मेरी तकदीर,

इस धरती पर ‘राजन’ का वजूद कहीं नहीं था, उसने सिर्फ मेरे सपनों को अपना बना रखा था।

और फिर... जिस दिन तुमने ‘अशु’ पढ़कर मुझे फोन किया था –

‘मैं तुम्हारा राजन बोल रहा हूं।’

उस दिन यह धरती की बात बन गई।

इस बात ने करम भी किया है, कहर भी।

तुम्हारी नज़र ने मेरे ऊपर से बरसों का पड़ा हुआ कोहरा झाड़ दिया है और आज जब मैं उस नज़र को नौ सौ मील की दूरी पर भेज कर आई हूं, एक कोहरा-बसा फिर मुझ पर पड़ता जा रहा है।

यह नज़र जिन मजबूर हालात में मुझसे बिछुड़ी है, उस का एहसास भी मेरे पास है और उसी के सहारे मैं तुम्हारे बिछोह के दिनों में पड़ने वाले कोहरे को अपने ऊपर से झाड़ती रहूंगी। और जब मेरे सामने फिर तुम्हारी नज़र होगी, मेरे मन का रंग उसी तरह गुलाबी हो जाएगा...

21.01.60

तुम्हारी बेगम

---

राजन एक प्रेमी है, अमृता के नॉवल 'आशु' का पात्र, जिसे पढ़ने के बाद इमरोज़ ने अमृता को फोन किया था। खत में उसी वाकिये का जिक्र है।

## खत इमरोज़ का

मेरी खूबसूरत ज़िन्दगी,

आज इस खूबसूरती का एक खूबसूरत खत मिला।

एक हसीना का हसीन पैगाम मिला। यह जन्मदिन, यह खत, मेरा नाड़ा है।

तुम मेरे जीने का खूबसूरत फरेब भी हो और खूबसूरत हक्कीकत भी।

26.01.60

जीती

---

इसे 26 जनवरी को इमरोज का जन्मदिन है।

## खत इमरीज़ का

मैं जितना कल खुश था, उतना ही आज उदास हूं।

जी करता है, सब कुछ छोड़कर, यह सारी दूरियां लांघकर तुम्हारे पास आ जाऊं और फिर तुम्हारे बगैर कहीं न रहूं।

आशी, तुम्हारे बिना जीना, जीना नहीं लगता, एक सज़ा लगती है। किसका जी करता है कि ज़िन्दगी रहते, सज़ा काटे!

काम में अगर कभी मन लगता भी है, तो काम के बाद सख्त डिपरेशन हो जाता है कि मैं यहां क्यों हूं, तुम्हारे बगैर क्यों हूँ? अपने आप पर गुस्सा आता है, बेहद गुस्सा।

27.1.60

**सिर्फ तुम्हारा**

.....

## खत अमृता का

मेरे यकीन, मेरे बादबां,

तुम्हारे मिलन ने मेरी कलम की चिंगारी को भोला बना दिया

कल नेपाल ने इस कलमी आग का फूलों से सत्कार किया और मुझे जितने फूल मिले,  
मैंने सब-के-सब तुम्हारी याद पर चढ़ा दिए।

‘हिज्र की इस रात में कुछ रोशनी-सी आ रही है। मेरी इस कविता में तम्हारी याद की बत्ती लपक लपक कर जल रही थी। रात के साढे ग्यारह बजे तक इसी रोशनी का ज़िक्र चलता रहा। साथ ही कितनी ही नेपाली, हिन्दी और बंगाली कविताएं भी जगमग करती रहीं।

एक फारसी का शेर भी था, जिसका मान था –

‘रेगिस्तान में हम धूप से चमकती हुई रेत को पानी समझकर भागते हैं, धोखा खाते हैं; तड़पते हैं, पर लोग कहते हैं, रेत रेत है, पानी नहीं बन सकती और कुछ सयाने लोग उस रेत को पानी समझने की गलती नहीं करते। वो लोग सयाने होंगे, लेकिन मैं कहता हूं, जो रेत को पानी समझने की गलती नहीं करते, उनकी प्यास में ही कोई कमी होगी, उनके होंठों पर वह शिद्दत नहीं होगी।’

सच, मेरे जीती, मुझे वह सयानापन नहीं चाहिए। मुझे अपनी प्यास मुबारक है। चाहे सारी उम्र वह मुझे रेगिस्तान में भटकाती रहे।

मेरे जीती को, मेरी प्यास के छलावे को, मेरी सारी यादें पहुंचें।

27.1.60, काठमांडू

आशी

## खत अमृता का

राही,

तुम मुझे संध्या के समय क्यों मिले?

ज़िन्दगी का सफर खतम होने वाला है। तुम्हें अगर मिलना था, तो ज़िन्दगी की दोपहर को मिलते, उस दोपहर का सेंक तो देख लेते।'

काठमांडू में किसी ने यह कविता हिन्दी में पढ़ी थी। कई बार कई लोगों की पीड़ा एक-जैसी होती है।

मेरी ज़िन्दगी के खतम होते इस सफर में अब मुझे सिर्फ तुम्हारे खतों का इन्तज़ार है।

मेरा यह इंतज़ार तुम्हारे इस बम्बई शहर की जालिम दीवारों से टकराकर हमेशा ज़ख्मी होता रहा है।

पहले भी चौदह बरस, राम बनवास जितने, इसी तरह बीत गए। बाकी रहते बरस भी लगता है, अपनी पंक्ति में जा मिलेंगे। आज तक तुम्हारा एक ही खत आया है। शायद तुम्हें काठमांडू का पता भूल गया है। रोज़ वहां मैं तुम्हारे एक लफ्ज का इंतज़ार करती रही। वहां मेरे लिए लोगों के पास बहुत शब्द थे, दिल को छू लेने वाले, पर उन्होंने इंतज़ार की चिंगारी को और सुलगा दिया और जला दिया। मुझसे उसका सेंक सहा न गया। तीन दिन के बाद मुझे बुखार हो गया।

कल वापिस आई, रास्ते में हवाई जहाज बदलकर। सीधे सफर की सीट नहीं मिली थी। रात को सवा नौ बजे पहुंची। इंतज़ार कह रहा था कि पहुंचने पर मेरे लिये कोई संदेशा तो जरूर होगा।

न जानें तुम्हारे लफ़ज़ों ने इतनी कंजूसी वर्यों कर ली है? आज की डाक भी आ चुकी है।

सवाल का जवाब बनने वाले, मुझे इस चुप का मायना तो समझा जाना।

1.2.60

.....

## खत इमरीज़ का

मेरे इन्तजारों की तस्वीर,

बोलती क्यों नहीं? बोलो तो सही चाहे गुस्से में ही बोलो, शिकायत के साथ बोलो, पर कुछ कहो तो सही।

तुम कुछ हुक्म करो, एक बार मुँह से कहो, तो तुम्हारे कहे को पूरा करने के लिए सब कुछ कुर्बानि किया जा सकता है।

मेरी वहशत, मेरे जुनून, मेरी हक्कीकत का इम्तहान तो लो, दुनिया की सारी खूबसूरती और सारी मुस्कराहटें तुम्हारे होंठों पर देखने के लिए मैं जी रहा हूं ...

4.2.60

तुम्हारा  
जीतो

## खत इमरोज़ का

अभी-अभी तुम्हारा खत मिला है,

अपनी मलिका का पैगाम।

मैं अपने सब खत पोस्ट करने चला ही था, जो कि रोज़ मैं तुम्हें लिखता था, तुम्हारे साथ बातें करता था। सुन और पढ़कर देखो, फिर जो जी करे कहना।

उदास मत होना, गुस्सा मत होना।

मैंने 25 तारीख को तुम्हें एक लम्बा खत नेपाल में भी लिखा था। शायद वह तुम तक नहीं पहुंचा। नहीं तो मेरे लिए तुम ऐसा न सोचतीं।

तुम मेरी शाम हो, मेरा सवेरा हो या दोपहर हो, मुझे नहीं मालूम, पर तुम मेरी मंज़िल हो, मेरी किस्मत हो।

अब, और कई बार पहले भी, मुझे लगता है, जैसे बम्बई आकर मैं अपनी मलिका से गुस्ताखी कर बैठा हूं।

यह सोचकर मन हर चीज़ की तरफ से, अपने काम से, अपने फ़न और सब कुछ से हट गया है।

तुम खूबसूरत शाम ही सही, मगर भूलो मत, तुम ही मेरी सुबह हो, तुम ही मेरी दोपहर हो।

पूरे मन से मेरे साथ, अपने जीती के साथ जीकर तो देखो....

3.2.60

.....

## खत अमृता का

मेरे गीतों की जान,

आज तुम्हारा खत मुझे नसीब हुआ है।

मैं ज़िन्दगी की शुक्रगुजार हूं, जिसने मेरे खतों के जवाब मुझे लाकर दिए, पर मेरे सारे खत तुम्हें क्यों नहीं मिले?

यह मेरा सातवां खत है। तीन मैंने नेपाल जाने से पहले लिखे थे। एक तो उसी दिन लिखा था, जिस दिन मैं अपना चैन नौ सौ मील दूर भेजकर आई थी, 21 तारीख को और फिर रोज़ एक लिखती रही। कभी मैंने दिल के सारे उलाहने के साथ लिखा था, ‘यह मेरा उम्र का खत बेकार हो गया। हमारे दिल ने महबूब का जो पता लिखा था, वह हमारी किस्मत से पढ़ा न गया।’

पर आज... जब वह पता सामने है, तो इन डाकखाने वालों ने लगता है, किस्मत से सांठ-गांठ कर ली है। इनसे भी यह पता पढ़ा नहीं गया।

नेपाल में टैगोर का एक गीत सुना था –

‘तू ही मेरा सागर है, तू ही मेरा मल्लाह  
और मैं एक नाव हूं।  
तुम्हें किनारे लगाने को क्यों कहूं?  
झूब भी जाऊं तो तुझ में ही झूबूंगी,  
क्योंकि तुम मेरा सागर भी हो....’

इस गीत ने बड़ा सहारा दिया।

5.2.60

.....

## खत अमृता का

कल दोपहर जवाहरलाल नेहरू ने खुश्वेव को लंच पर बुलाया था।

वहां गई थी।

पंडित जी मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, मानवता की सारी खूबसूरती की तस्वीर।

कुछ देर खुश रही मैं, फिर तुम्हारा बिछोह सामने आकर खड़ा हो गया और मुझे सारा दिन सारे काम, सारे मेल-जोल, बेमायनी लगने लगे...

13.2.60

आशी

## खत इमरीज़ का

.....,

रात के दो बज चुके हैं। ऐसा लगता है, ज़िन्दगी की कोई दौलत पास न हो।

कोई कितना गरीब हो गया है, तुम नहीं समझतीं।

ऐ मेरी दौलत, आओ...

जितनी खर्ची जाए, उतनी जीने के लिए खर्च लें। आओ, एक-दूसरे का नोट भुना लें।

16.2.60

.....

## खत अमृता का

.....,

तुम्हें आना था 14 तारीख को तुम नहीं आए।

यह वह सवेरा जबकि सूरज नहीं चढ़ा! मेरी और सूरज की किस्मत, तुम्हें क्या..?

मेरी तरह पूरन की सुंदरा ने भी कहा था, ‘एक बार वन को चले गए, तो फिर सुंदरा के पास नहीं आए। अरे, लोगों, जोगी किसी के मीत नहीं होते।

कला के जोगी, क्या हर सदी में सुंदरा<sup>1</sup> का यही हाल होगा?

तकदीर की लकीरों को कोई नहीं बदल सकता, जीती, कल मैंने तुम्हारा कमरा साफ़ किया, शीशे को पांछा कि शायद इसमें मेरी किस्मत का मुँह दिखाई दे जाए।

‘सपने नए बन सकते हैं। तुम्हारे ये शब्द मेरे कानों में बोल रहे हैं। एक शोर-सा बनते जा रहे हैं, एक भयानक शोर और मैं शायद इस शोर में पागल हो जाऊंगी। नहीं-नहीं, तुम्हारे नए सपने का महल बनाने के लिए अगर मुझे अपनी ज़िन्दगी खंडहर भी बनानी पड़े, तो मुझे कुछ एतराज नहीं होगा।

कोशिश करूँगी, मेरा एक हावका भी तुम्हारे शहर न पहुंचे, तुम्हारी तरक्की के रास्ते में मेरा कोई दर्द हायल न हो।

**बदनसीब आशी**

---

1. सुंदरा अमृता की नायिका हैं।

## खत इमरीज़ का

.....,

अब और उधार नहीं जिया जाता।

होनी हमारे साथ काफी दिलफरेब खेल, खेल चुकी है, अब हमारी बारी है। होनी से अब हम खेलेंगे।

मेरी हसीन शाम,

आओ, यह शाम जी लें, सारे तन से, सारे मन से, सारे फ़न से...

बदनसीब आशी तो मेरी किस्मत है, मेरी खुशनसीबी है....

अगर यह हसीन शाम है, तो मैं इस शाम को मन की मजबूती के साथ मर्दानगी के साथ और अपनी दोपहर के साथ गुज़ारूंगा जीऊंगा।

वक्त चाहे दूर खड़ा होकर देखता रहे और चाहे हमारे साथ होकर देखे, पर हम जीएंगे और वक्त से कहीं ज्यादा खूबसूरत जीएंगे।

इसी वफ़ा के साथ, इसी यकीन के साथ...

19.2.60

तुम्हारा  
जीती

## खत अमृता का

ओ, मिर्जा,

अपनी नीली को भी संभाल लो और अपनी साहिबां को भी।

जो चार दिन ज़िन्दगी ने दिए हैं, उनमें से दो की जगह तीन आरजू में गुज़र गए और बाकी एक दिन सिर्फ इंतज़ार में ही न गुज़र जाए।

अनहोनी को होनी बना लो मिर्जा।

परसों शाम मुझे हलका-सा बुखार था। कल बढ़ गया। रात भी इसी तरह कटी...

‘जिगर’ ने शायद मेरी हालत पर ही लिखा था –

‘इस दर्जा बेकरार थे, दर्द-निहां से हम।

कुछ दूर आगे बढ़ गए उम्रे-रवां से हम।’

मेरी जान उड़कर आ जाओ, मेरे दिल से पंख उधार ले लो,

मेरी जान, तुम्हारा यह रूपयों वाला चैक मैं कैश नहीं कराऊंगी। सिर्फ तुम्हारी मोहब्बत का चैक कैश करवाना है, अगर ज़िन्दगी के बैंक ने कैश कर दिया तो !

21.2.60

तुम्हारी  
आशी

## खत इमरोज़ का

.....,

तुम्हारा खत नहीं आया, न सही।

मुझे खतों का इंतजार नहीं।

मुझे तुम्हारा इंतजार है।

तुमने क्या कहा... बदनसीबी ?

बदनसीबी तो बहुत आसानी से आ जाती है। बदनसीबी तो अपने आप ही बिन बुलाए आ जाती है, पर तुम तो आती ही नहीं हो।

सो तुम बदनसीबी नहीं, ज़रूर मेरी खुशनसीबी हो।

20.2.60

## खत इमरीज़ का

.....,

तुम्हें ट्रंककाल किया कि तुमसे बात करके कुछ मन ठहर जाएगा, पर वह उलटे और बेचैन हो गया।

मन किसी चीज़ में नहीं लगता, घर खाली लगता है।

बाहर जाता हूं, तो बाहर भी मन नहीं लगता, वापिस आ जाता हूं।

अपने आप में से उड़-उड़ तुम्हारे पास जाता हूं और जब जाया नहीं जाता, तो अपने आप से लड़ता हूं और बेचैन हो जाता हूं।

काम कुछ कमाने के लिए कर सकता हूं, लेकिन पूरे मन के साथ नहीं होता।

सारा मन पास है ही कहां!

मेरे मन को हथियाकर कोई दूर खामोश बैठा हुआ है। न जाने उसे ऐसे बेचैन करने, तड़पाने से क्या मिलता है? न जाने कैसी तसकीन! तुम सब कुछ जान-बूझकर उससे यह करवा रही हो।

कोई क्यों इतना पागल होता है, किसी के लिए?

क्यों?

पर तुम्हें क्या?

ओ, चुप हो जाने वाली,  
ओ, खत न लिखने वाली,  
ओ, मेरी सेबों वाली,  
तुम्हें क्या? कोई तुम्हारे लिए हाल से बेहाल हो जाए!  
अच्छा, तुम एक बार आओ तो सही,  
मैं अपनी बदनसीबी से दो-दो हाथ कर लूंगा।  
अगर तुम मेरे पास आ जाओ, मैं कभी किस्मत का, वक्त का ला नहीं करूँगा।

जीती

## खत इमरीज़ का

वह क्या करे, जिससे तुम्हारे बिना रहा न जाए?

क्या तुम मुझे पागल करके छोड़ोगी? ।

इस दोपहर<sup>1</sup> को क्यों गवां रही हो इंतज़ार में, इसे जी क्यों नहीं लेती?

क्या बिछोह तुम्हें बहुत प्यारा है? क्या उसके बिना तुम्हारी कविता जी नहीं सकती?

विरह की कविता तुम्हें शोहरत देती है। इसी ने तुम्हें यह ऊंचा मुकाम दिया है। तुम इसके बिना नहीं रह सकतीं, पर जिए बिना रह सकती हो।

तुम्हें यह जिन्दगी सराप क्यों है?

अच्छा, जब तुम्हें कविता से फुरसत मिले, दिल-भर जाए, तो मुझे बुला लेना... जो कुछ मेरे पास होगा, तुम्हारे लिए-तुम्हारे जीने के लिए, हाज़िर कर दूंगा।

शाम<sup>2</sup> तक तो आ जाओगी?

शाम तो जी कर देख लो...

अब मैं पागल हूं और तुम शायरा!

मजा तब आएगा, जब तुम भी पागल के लिए पागल हो जाओगी।

उस वक्त तक उस तुम्हारी और मेरी शायरा को सलाम!

21.2.60

तुम्हारा पागल जीती

---

इसे 1. ज़िदंगी की दोपहर

इसे 2. जिदंगी की शाम ।

## खत अमृता का

तुम्हारी फूल जैसी चिट्ठी मिली।

वफा की खुशबू आई और मैंने इस खुशबू के कितने ही लम्बे छूट भरे।

एक घूट भर रही थी कि सेठी<sup>1</sup> का फोन आया मेरी आवाज सुनकर वह कहने लगा,  
‘आज आपकी आवाज खुश है।’

मैंने कहा, ‘अभी चिट्ठी आई है, मेरी आवाज में उसी की परछाई होगी।’

सेठी खूब हँसा।

आज सचमुच हिज्र की रात में रोशनी आने वाली बात है।

तेरी इस प्यारी चिट्ठी ने मेरी याद की बत्ती को भरपूर जलाया हुआ है।

जी करता है तुम अभी कहीं से उजागर हो जाओ,

चाहे धरती से उगो... चाहे अंबर से गिरो।

22.2.60

तुम्हारी सदा से  
आशी

---

1. एक कलाकार मित्र।

## खत अमृता का

मेरी तकदीर

गाड़ी में सीट न मिले, तो हवाई जहाज में सीट ले लेना। पैसे का ख्याल मत करना। जो ज्यादा लगें, वे पैसे मेरे ज़िम्मे॥

मुझे बिरहा के गीतों से प्यार नहीं, मिलन की उस मंजिल से प्यार है, जिसकी कठिन राह को काटने के लिए मैंने बिरहा के गीत लिखे।

मुझे शोहरत प्यारी नहीं, जो बिरहा के गीतों से मिली है।

मैं ज़िन्दगी के उस जलवे का इंतज़ार करती हूं, जो मेरी मंजिल मुझे दिखाएगी।

आओ, मुझसे अपनी दीवानगी को माप लो।

मुझे लगता है, जैसे साहिर की मोहब्बत के चौदह साल भी तुम तक पहुंचने की एक राह थी।

24.2.60

तुम्हारी अपनी  
आशी

## खत इमरीज़ का

.....,

मैं अपनी ज़िन्दगी के नोट को तुम्हारी दहलीज़ पर चढ़ा आया हूं।

वह अब तुम्हारे हाथों के रहमो-करम पर है, भुना लो, खर्च लो या दहलीज पर ही पड़ा रहने दो।

तुम नोट को खर्चा भी नहीं और उलाहना भी दो, कोई तो तुक की बात करो।

मेरा तो हुनर भी तुम्हारी दौलत है, तुम्हारे खर्चने के लिए है।

मेरी उम्र भी ले लो, मुझसे इसका सेंक सहा नहीं जाता।

मुझसे अपनी यह अमानत ले लो।

ओ, सांब्रोवाली,

कभी मेरी बेसब्री लेकर तो देखो...

22.2.60

तुम्हारा  
जीती

## खत इमरीज़ का

तुम्हारे इन्तज़ार में शाम होने लगी है।

तुम्हारा खत नहीं आया, खैर तो है?

ओ, मेरी आशा, के रंगों की रखवाली, देखना इन रंगों पर कोई परछांवा न पड़े और न कोई सेंक ही पहुंचे।

इन रंगों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं देखो, सब कुछ गवां चुका हूं और अब ये रंग मेरे हो चुके हैं।

इस किस्मत की खुशी में मुझे कुछ खोने का गम नहीं

मेरी रहमत,

मेरा इंतजार रखो।

सारा हाल, घड़ी-घड़ी का पल-पल का, मेरे रंगों की खबर देती रहा करो।

26.4.60

इन्हीं सब रंगों का  
जीती

## खत अमृता का

मेरे अच्छे जीती,

आज, मेरे कहने से, अभी अपने सोने के कमरे में जाना, रेडियोग्राम चलाना और बर्मन की आवाज सुनना ‘सुन मेरे बंधु रे, सुन मेरे मितवा, सुन मेरे साथी रे!

मुझे बताना कि ‘वो लोग कैसे होते हैं, जिन्हें कोई इस तरह आवाज देता है?

मैं सारी उम्र कल्पना के गीत लिखती रही, पर यह मैं जानती हूं, मैं वह नहीं, जिसे कोई इस तरह से आवाज़ दे।

मैं यह भी जानती हूं, तुम वह हो, जिसे मैं यह आवाज़ दे रही हूं। जानती हूं, मेरी आवाज़ का कोई जवाब नहीं आएगा।

कल एक सपने जैसी तुम्हारी चिट्ठी मिली, पर मुझे तुम्हारे मन के ‘कॉन्फिलक्ट’ का भी पता है। यूं तो मैं तुम्हारा अपना चुनाव हूं, लेकिन फिर भी मेरी उम्र, मेरे बंधन, तुम्हारे ‘कॉन्फिलक्ट’ की वजह हैं।

तुम्हारा मुंह देखा, तुम्हारे बोल सुने, तो मेरी भटकन खत्म हो गई, पर आज तुम्हारा मुंह इनकारी है, तुम्हारे बोल इनकारी हैं।

क्या इस धरती पर मुझे अभी और जीना है,  
जहां मेरे लिये तुम्हारे सपनों का दरवाज़ा बन्द है?

तुम्हारे पैरों की आहट सुनकर मैंने ज़िन्दगी से कहा था –  
अभी दरवाज़ा बन्द मत करो हयात,

रेगिस्तान से किसी के कदमों की आवाज़ आ रही है।'

पर आज मुझे तुम्हारे पैरों की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही है।  
अब ज़िन्दगी से क्या कहूँ कि सारे दरवाज़े बद कर ले... ?

26.6.60

## खत अमृता का

मेरे सब कुछ,  
मैं कहीं नहीं जा रही हूँ।<sup>1</sup>  
तुम्हारे बिना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।  
मुझे परदेसों की शोहरत नहीं चाहिये।  
मैंने जिसके लिये मोहब्बत के गीत लिखे, अगर मेरे गीत उसे मंजूर नहीं, तो उन गीतों की  
बेगानों से तारीफ़ पाकर क्या करूँगी?

एक गुजराती गीत है –

‘माथे के तुम्बे में लाख-लाख मोती, पर दिल तुम्हारे बिना खाली।’  
सयानेपन के लाख-लाख मोती, पर दिल तुम्हारे बिना खाली।  
हर जगह जाने के लिये मुझे पासपोर्ट का फार्म भरना पड़ता है और मैं उस तरह का कुछ  
भी भरने को तैयार नहीं, जो तुम्हारी खुशी छीन ले।<sup>2</sup>  
जहां मेरी सारी उम्र तुम पर कुर्बान है, वैसे मैं परदेसों की प्रसिद्धि भी कुर्बान कर दूँगी।  
मैं कहीं नहीं जाऊँगी।  
तुम्हारा इंतज़ार करूँगी सारी उम्र।

26.4.60

तुम्हारी आशी

- 
1. इस वर्ष अमृता को रूस से बुलावा आया था।
  2. पासपोर्ट व वीज़ा के फॉर्म भरते हुए औरत को अपने खाविन्द का नाम भरना पड़ता है, जो अमृता को रास नहीं आता था। वह इस तरह इमरोज़ का दिल नहीं दुखाना चाहती थी।

## खत इमरीज़ का

लो मलिका,

अब मैं अपना सब कुछ तुम्हारे आंचल में एक नोट की तरह बनाकर दे रहा हूं, तुम्हारी बेएतबारी के पल्ले में...

अपनी ख्वाहिशें, अपने चाव, इस शहर से हमेशा के लिए उधेड़कर तुम्हारे शहर, तुम्हारी चाहतों, तुम्हारी खुशियों के साथ जोड़ रहा हूं।

और अपना एतबार भी तुम्हारी बेएतबारी के साथ।

मैं तो आ रहा हूं।

अब एतबार देखिए कब आता है?

29.4.60

.....

## खत अमृता का

मेरे जीती,

जीवी<sup>1</sup> मेरे सामने बैठी हुई है, सुंदर, चंचल और गले में झूला-झूलने वाली जीवी, फिर वह एक चेहरा देख बैठी और बावली हो गई। किस्मत ने वह मुंह तो दिखा दिया, पर उस राह की ठोकरें नहीं दिखाई और जीवी उसके मुंह के पीछे-पीछे चल दी, जहां भी वह ले गया। ना जाति मिले, ना राह। वह हालात के हवाले हो गई। जिस चेहरे को देखकर चल पड़ी थी, उसने भी खबर न ली। कितनी ही पीड़ा पीती रही और अंत में उसे ज़िन्दगी की ठोकरों ने पागल कर दिया।

पागल जीवी को उसके प्यार ने देखा। सुंदर बांकी जीवी को उसने समाज की खातिर छोड़ दिया था, पर गलियों के टुकड़े बीनने वाली पागल जीवी को वह न छोड़ सका। उसका हाथ पकड़कर खड़ा हो गया समाज के सामने, सारे सामाजिक मूल्यों के सामने। जीवी मेरे भीतर समाई जा रही है, मेरी कलम में, मेरी कल्पना में, मेरी हक्कीकत में।

मेरे जीती,

जब मैं जीवी की तरह सारा होश गवां बैलूंगी, फिर शायद तुम्हारे मन में उस दिन वाला फैसला जागेगा, जिस दिन तुम मेरा हाथ पकड़कर अंगूठियां खरीदने चल पड़े थे। तुम्हारा वही अपनत्व जागेगा, तुम्हारा वही रिश्ता जागेगा और उस रिश्ते की लाज जागेगी।

26.4.60

तुम्हारी दुःखी आशी

1. उन दिनों अमृता गुजराती नॉवल 'जीवी' का तर्जुमा कर रही थी।

## खत अमृता का

मेरे विश्वास,

ज़िन्दगी के दुख-सुख, अपने और मेरे दो, नदियों की तरह मिल जाने दो और फिर जैसे पानी की लकीर नहीं पड़ती, तुम्हारे-मेरे बीच कोई लकीर न खींची जा सके।

29.4.60

तुम्हारी सलामती चाहनेवाली  
आशी

## खत इमरोज़ का

मेरी किस्मत, मेरी मलिका,  
मैं खुद तुम्हारे पास आ रहा हूं, इसी वीरवार को 15 मई, सुबह 10 बजे तुम्हारे शहर पहुंच  
जाऊंगा।

तुम तैयार रहना मेरी साहिबां, मैं तुम्हें अपनी नीली<sup>1</sup> में बैठाकर अब हमेशा के लिए अपने  
पास ले जाऊंगा, तुम्हें संभाल लूंगा।

अपनी दोपहर के सारे रंग तुम्हारी शाम में मिलाकर तुम्हें और हसीन और रंगीन बना  
लूंगा।

एक दिन और इंतजार, सिर्फ एक दिन और, जहां पहले तीन साल का इतना लंबा  
इंतजार किया है, उम्र जितना लम्बा।

3.5.60

सारा तुम्हारा  
जीता

---

<sup>1</sup>. ‘नीली’ अमृता और इमरोज़ की कार का नाम था।

## संदर्भ

मई 1960 में अमृता और इमरोज़ बम्बई गए अपनी पहली नीली कार में। पहली रात ग्वालियर में आई और दूसरी इन्दौर में।

उन दिनों अमृता नवतेज को अपना अच्छा दोस्त मानती थी। इसलिए अपने मन की खुशी सबसे पहले उसी से बांटना चाहती थी।

उस रात इन्दौर के लैन्टर्न होटल से अमृता ने नवतेज को एक खत लिखा।

## खत अमृता का

प्यारे नवतेज

1953 ने एक सवाल उठाया था, नौ सौ मील रेत-ही-रेत बिछी हुई है?

अब 1960 की डाची ने अपने गले की घंटी बजाकर कहा है, ‘मैं उस रेगिस्तान को पार करूँगी।’ उसने 8 तारीख सवेरे नौ का आठ और आठ का सात बना दिया।

आज 9 तारीख को उस डाची ने 7 का 6, 6 का 5, 5 का 4 और 4 का 3 बना दिया है। बाकी 370 मील रह गए हैं।

इन नौ सौ मीलों ने कभी मुझसे ‘सुनेहड़े’, ‘आखिरी खत’, ‘एक सवाल’ और ‘कस्तूरी’ लिखवाए थे।

हैमिंगवे का उपन्यास ‘ओल्ड मैन एंड द सी’ पढ़ रही थी। परसों-चौथ, 84 दिनों की भूख और तलाश के बाद वह मछेरा कहता है, ‘क्या मैं आज पचासीवें दिन थोड़ी-सी किस्मत नहीं खरीद सकता? मेरा ख्याल है किस्मत को खरीद लेना अब मेरा हक बनता है। 84 दिनों की भूख और तलाश से मैं उसकी कीमत चुका बैठा हूँ।’

यह ‘सुनेहड़े’, ‘आखिरी खत’, ‘एक सवाल’ और ‘कस्तूरी’ लिखकर क्या मैं भी नौ सौ मीलों को पार कर लेने की कीमत नहीं चुका बैठी हूँ? अब इन मीलों को पार कर लेना मेरा हक्क बनता है।

मुझे ऐसा लगता है दारजी<sup>1</sup> इस रेगिस्तान में मुझे चूंट-घूट पानी देते रहे हैं। उनके बोल मेरे कानों की अमानत हैं। उनसे कहना, मैं यह अमानत संभालकर रखूँगी।

इस सफर में मेरा यह पहला खत आपके और मेरे दारजी के लिए है।

लैन्टर्न होटल, 9 मई, 1960

आपकी  
अमृता

---

1. नवतेज के पिता और प्रीत लड़ी मासिक पत्रिका के सुविख्यात सम्पादक सरदार गुरबख्हा सिंह।

## खत इमरीज़ का

सुनो,

टू लव समबड़ी इज़ नॉट जस्ट ए स्ट्रांग फीलिंग, इट इज़ ए डिसीज़न, ए जजमैट...

मैं आज भी सिर्फ तुम्हें ही बता सकता हूं और बता रहा हूं कि मैं कितना बेआराम हूं और किसी की समझ में नहीं आ सकता।

चाहे तुम्हें इस समय मेरा कुछ भी सुनाई न दे, पर मैं किसे बताऊं?

चाहे हक कहीं दूर जा बैठा है, बेमायनी होकर शायद इस खत की तरह बेजान।

3.11.60

.....

## खत इमरीज़ का

.....,

बड़े काले ट्रंक में तुम्हारी चीजें संभालकर रख रहा हूं।

पहले तुम्हारी साड़ियां रखीं, फिर तुम्हारी कमीजें, सलवारें, रूमाल, चूड़ियां रखीं। तुम्हारी फाइलें रखीं, फिर कहानियों और कविताओं की किताबें रखीं और सब के बाद सबके ऊपर सफेद ऊन की गुच्छियां और सलाइयों में पड़ी हुई अपनी अधूरी बनियान रखी।

अगर कभी वह पूरी हो जाती... अब मेरी भी अधूरी ज़िन्दगी में तुम्हारी याद की सलाइयां इस अधूरी बनियान की तरह टंगी हुई हैं और शायद हमेशा के लिए टंगी ही रहेंगी।

ट्रंक में अभी और बहुत जगह थी। मैं अपनी बन रही अधूरी बनियान में अपने दोनों हाथ डालकर कितनी ही देर तक उस ट्रंक में सिर रखकर और अपना दिल रखकर पड़ा रहा। अपने सारे अधूरे सपने उस अधूरी बनियान से मिलाता रहा।

यह ट्रंक कभी पूरे होने वाले सपनों से भरकर बम्बई आया था...

मेरी अधूरी तस्वीरें जब भी तुम्हें दिखाई दें, ज़रूर देखना, तुम्हारी आंखों में ये तस्वीरें थीं, नहीं तो फ़क्त लकीरें...

4.11.60

.....

## खत इमरीज़ का

वो दिन,

वो रातें,

वो तुम,

वो मैं,

वो तुम्हारी बातें,

वो मेरी अमानतें,

वो मेरे लम्हे,

क्या पता था मेरा जीती ही ले जाएंगे, मेरा मर्द ही ले जाएंगे।

मेरा चैन मेरा हौसला सब कुछ ले जाएंगे।

पर मैं तुम्हारी तरह खामोश नहीं रहूंगा।

मैं अपना सब कुछ ले जाने वाली को, दिलेरी की हद तक, हिम्मत की हद तक, ज़िन्दगी की हद तक, नज़र की हद तक, तसव्वुर की हद तक खोजूंगा।

खोजकर ले आऊंगा।

नसीब के लिए भटकने वाला  
जीवी

## खत इमरोज़ का

.....,

स्टूडियो साफ़ कर रहा हूं।

छोटी मेज पर रखी हुई तुम्हारे पोर्टेट को पोछते हुए हाथ रुक गए। आंखें ठहर गईं।

तस्वीर की तरफ देखता ही रहा, जिसे बनाकर कितना गर्व का अनुभव करता था।

पर आज आर्टिस्ट खुद, उस तस्वीर का क्रियेटर, तस्वीर के आगे, अपने क्रियेशन के आगे झुक गया।

आंखों में मेरी नज़रें झुक गईं। इनमें मेरा मान झुक गया।

अब मैं उस तस्वीर से आंखें नहीं मिला पा रहा।

पर मैं रोज़ उसे पूजता हूं, मेरी पूजा न जाने कब कबूल होगी।

14.11.60

.....

## खत इमरीज़ का

.....,

रात को सपने में देखा, तुम किचन में गोभी के पराठे बना रही थी।

मैं और सैली तुम्हारे दाएं-बाएं बैठे हुए खा रहे थे।

तुम खिला रही थी, खुश थी....

आज सवेरे से कमरे में लेटते-बैठते सोचता रहा।

आज मैं कुछ नहीं खा सका।

रात को तुम्हारे हाथों से बहुत खा चुका था न...

18.11.60

.....

## खत इमरीज़ का

...,

मेरे खत तुम्हें नहीं ला सके,

तुम्हें नहीं बुला सके,

तुम्हारी तकलीफ और तुम्हारी हालत को मैं समझ सकता हूं।

आशी,

न जाने क्यों मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, नहीं जी सकता।

मैंने देख लिया है, परख लिया है।

तुम्हारे पास से, जिस दिन से आया हूं कुछ भी काम नहीं किया है, न होता ही है।

तुम्हारे बिना कुछ भी सोचा नहीं जाता। ज़िन्दगी तो कहां रही...

मैं तड़प रहा हूं अपनी आग में आप ही... उसी यकीन और उसी दिलेरी से, जिससे तुम्हें अपनाया था।

26.11.60

तुम्हारा वक्त तुम्हारा  
जीती

## खत इमरीज़ का

.....,

तसव्वुर की खिड़की में से तुम्हें देख रहा हूं।

तुम खामोश हो, सिर झुकाए हुए।

तुम तो तब भी मुझसे सब बातें कर लिया करती थीं, जब मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं लगता था।

अब तो तुम्हारा कुछ हूं।

जन्म से तुम्हारा सारा अपना।

सिर्फ कुछ दिनों से कुछ गैर।

यह खामोशी एक अंधेरे की तरह मेरे तसव्वुर पर छा जाती है। कई बार कितनी-कितनी देर तक खिड़की में से कुछ दिखाई नहीं देता।

कब तुम नज़र भरकर मुझे देखोगी और कब मेरी रोशनी मेरी तरफ़ देखेगी।

कब मैं और मेरा तसव्वुर रोशन होंगे?

21.11.60 सुबह

.....

## खत इमरीज़ का

मेरे प्यार,

इस चुप के अंधेरे में मैं और नहीं रह सकता।

28 तारीख, सोमवार सवेरे साढ़े दस बजे मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं।

तुम्हें, अपनी रोशनी को, बजाते-खुद लेने के लिए आ रहा हूं।

अपनी खुदी भी तुम्हारे बगैर बेजान लगती है, बेमानी लगती है।

जो कुछ भी हूं, अच्छा-बुरा तुम्हारा हूं।

तुम जो कुछ भी हो मेरी हो।

मेरी अमानत, मेरी खूबसूरत शाम।

जहां भी रहना चाहो, मुझे साथ गिन लेना।

अलग अब कोई नहीं रहेगा।

21.11.60

तुम्हारा समय  
जीती

## खत इमरीज़ का

...,

तुम्हें ज़िन्दगी एक अजनबी मोड़ पर ले आई है।

तुम चुप हो मुझसे, सब कुछ से।

और अब मैं चुप हूं, अपने आप से।

आंखें बंद करता हूं, तुम्हें आशी के रूप में देखने के लिए, पर आंखें न बंद हो रही हैं, न कुछ दिखाई दे रहा है।

न मैं तुम्हें अजनबी देख सकता हूं, न अपने-आपको.....

23.11.60

जीती

## खत इमरोज़ का

आशी,

तुम्हारी नज़में, तुम्हारी कहानियां, तुम्हारे उपन्यास, तुम्हारी फाइलें, तुम्हारी साड़ियां, तुम्हारी कमीजें, तुम्हारी चूड़ियां, तुम्हारे पर्स, तुम्हारी तस्वीरें, तुम्हारा जीती, अधूरी बनियान, हम सब अधूरे आ रहे हैं।

सवेरे साढ़े दस बजे डीलक्स से हम नई दिल्ली स्टेशन पर पहुंच रहे हैं। तुमसे मिलने के लिए, देखने के लिए इंतजार करेंगे। खुद आकर ले जाना हमें। जब तक तुम नहीं आओगी, हम वहीं स्टेशन पर तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।

मैं जीती, कभी तुम्हारा सारा अपना, अब एक अजनबी तुम से मुखातिब है।

कभी तुमने बम्बई आते समय तीन दिन मांगे थे, आज मैं मांग रहा हूं।

चाहे तीन दिन-दो,  
चाहे तीन पहर,  
चाहे तीन घंटे  
या चाहे तीन मिनट ही....

29.11.60

जीती

## खत इमरीज़ का

रात की रोशनी तुम,  
दिन का अंधेरा मैं,  
पाक हांडी तुम,  
गीली लकड़ियाँ मैं,

मेरी हार की कहानी, मेरी मोहब्बत की कब्र और कांटे-कांटे अपने मन की कमीज़ मैं ही  
तो हूं।

अपनी हार की कहानी पढ़कर संभालकर रख ली है, जैसे तुम्हारे प्यार के खत रखता  
था, जैसे तुम्हारी तस्वीरें रखता हूं।

मैं डिज़ाइन बनाता था, पर मोहब्बत की कब्र की तस्वीर जो कहानी में तुमने लिखकर  
बनाई है, जो मेरे नाम डेडिकेट की है।

तुम क्या नहीं लिखकर कर रहीं! तुम इतना प्यारा लिखती हो, मैं सारी पीड़ा सह जाता  
हूं।

24.12.60

जीती

## संदर्भ

ये 1961 के शुरू के खत हैं, जिन पर न कोई तारीख है, न कोई दस्तखत।

उन दिनों अमृता ने एक कहानी लिखकर भेजी थी, जिसका नाम था ‘रोशनी का हावका’। इसमें एक खत था, फिर एक कविता लिख भेजी, ‘साल मुबारक’। यह भी एक खत था।

फिर एक नॉवल भेजा, ‘फाउनटैन हैड’ आइनरेंड का।

यह भी इमरोज़ ने एक खत समझकर पढ़ा।

यह खत जिन पर अमृता ने न तारीख लिखी, न नाम, अपने गुस्से की शिखर दोपहर में लिखे। शायद गुस्से में न वक्त याद रहता है, न नाम।

## खत अमृता का

जीती,

तुम्हारे और मेरे नसीबों में बहुत फर्क है।

तुम वह खुशनसीब इन्सान, जिससे तुमने मोहब्बत की, उसने तुम्हारे एक इशारे पर सारी दुनिया वार दी।

पर मैं वह बदनसीब इन्सान हूं, जिसे मैंने मोहब्बत की, उसने मेरे लिए अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

दुःखों ने अब मेरे दिल की उम्र बहुत बड़ी कर दी।

अब मेरा दिल उम्मीद के किसी खिलौने के साथ नहीं खेल सकता।

हर तीसरे दिन पंजाब के किसी-न-किसी अखबार में मेरे बम्बई में बिताए हुए दिनों का ज़िक्र होता है, बुरे-से-बुरे शब्दों में, पर मुझे उनसे कोई शिकवा नहीं है, क्योंकि उनकी समझ, मुझे समझ लेने के काबिल नहीं।

केवल दर्द इस बात का है कि मुझे उसने नहीं समझा, जिसने मुझे कभी कहा था, ‘मुझे अपने सारे सवालों का जवाब बना लो।’

मुझे अगर किसी ने समझा है, तो वो तुम्हारी मेज़ की दराज़ में पड़ी हुई रंगों की बेज़बान शीशियां हैं। जिनके बदन मैं रोज़ पोंछती हूं, उन्हें दुलारती हूं।

वो रंग मेरी आँखों में देखकर मुस्कुराते हैं, क्योंकि उन्होंने मेरी आँखों की नज़र का भेद पा लिया है।

उन्होंने समझ लिया है कि मुझे तुम्हारी क्रियेटिव पावर से ऐसी ही मोहब्बत है।

वो रंग तुम्हारे हाथों के स्पर्श के लिए तरसते थे और मेरी आँखें उन रंगों से उभरने वाली तस्वीरों के लिए।

वो रंग तुम्हारे हाथों का स्पर्श इसलिए मांगते थे, क्योंकि दे वांटड टु जस्टीफाई देयर एग्ज़िस्टैंस।

मैंने तुम्हारा साथ इसलिए चाहा था कि मुझे तुम्हारी कृतियों में अपने अस्तित्व के अर्थ मिलते थे। ये अर्थ मुझे अपनी कृतियों में भी मिलते थे, पर तुम्हारे साथ मिलकर अर्थ बड़े शक्तिशाली हो जाते थे।

तुम एक दिन अपनी मेज़ पर काम करने लगे थे कि तुमने हाथ में ब्रश पकड़ा और पास रखी हुई रंग की शीशी को खोला। मेरे माथे ने जाने तुमसे क्या कहा तुमने हाथ में लिए हुए ब्रश पर थोड़ा-सा रंग, लगाकर मेरे माथे से छुआ दिया। न जाने वह मेरे माथे की कैसी खुदगर्ज मांग थी, आज मुझे उसकी सज़ा मिल रही है।

आदम ने जैसे गेहूं का दाना या सेब खा लिया था, तो उसे बहिश्त से निकाल दिया था...

## एक और खत और एक दिन

.....,

कल एक रूसी आर्टिस्ट आया था। उसने मुझे सामने बैठाकर मेरा एक स्कैच बनाया।

उन पलों की पीड़ा को कोई नहीं समझ सकता। मैंने एक निगाह उस स्कैच को देखा, फिर मेरी आँखें भर आईं।

पैंसिल भी मेरी तरह रोई होगी कि काश वह तुम्हारे हाथ में होती, सिर्फ तुम्हारे हाथ में।

फैज़<sup>1</sup> को इस बदनसीब औरत का सलाम देना, जिसने उसकी जीवनी लिखी।

---

1. बम्बई का आर्टिस्ट फैज़, जिसकी ज़िन्दगी पर अमृता ने ‘बुलावा नॉवल लिखा था।

## एक और खत और एक दिन

.....,

तुम्हारा खत मिला। जीती दोस्त, मैं तुमसे गुस्सा नहीं हूं।

तुम्हारा मिलना दोस्ती की हद को छू गया।

दोस्ती मोहब्बत की हद तक गई।

मोहब्बत इश्क की हद तक और इश्क जुनून की हद तक।

जिसने यह जुनून की हद देखी हो, वह कभी गुस्सा नहीं हो सकता। अगर यह अलग होना कोई सज़ा है, तो यह सज़ा मेरे लिए है, क्योंकि यह रास्ता मेरा चुना हुआ नहीं है। मेरा चुना हुआ रास्ता मिलन का था। अलग होने का रास्ता तुम्हारा चुना हुआ है, तुम्हारा अपना चुनाव, इसलिए तुम्हारे लिए यह सज़ा नहीं है।

यह मैंने कभी नहीं सोचा कि तुम्हारी मोहब्बत पाक नहीं थी, लेकिन उस मोहब्बत में एक प्यास थी, जवानी की प्यास। इस प्यास को तुम्हें तृप्त करना होगा, जीती, तुम और मैं दोनों इस प्यास का भयानक रूप देख चुके हैं। तुम जैसे मुझे तड़पती को एक ‘पराये घर’<sup>1</sup> में.... यह तुम्हारा रूप नहीं, तुम्हारी प्यास का भयानक रूप था।

तुम दस बरस तक जी भरकर इस प्यास को मिटा लो, फिर तुम्हारे जिस्म पर पर पड़े सारे दाग मैं अपने होंठों से पोंछ दूँगी।

अगर तुमने फिर भी चाहा, तो मैं तुम्हारे साथ जीने के लिए भी तैयार हो जाऊंगी और मरने के लिए भी....

---

1. ‘पराया घर बलवंत गार्गी के घर के संदर्भ में इस्तेमाल किया गया है।

## खत इमरोज़ का

.....,

तुम ज़िन्दगी से रूठी हुई हो।

मेरी भूल की इतनी बड़ी सज़ा नहीं, आशी!

यह बहुत ज्यादा है, यह दस साल का बनवास नहीं। नहीं, मेरे साथ ऐसा ना करो।

मुझे आबाद करके वीरान मत करो।

6.12.60

जीती  
तुम्हारा

## खत इमरोज़ का

.....,

वह मेज़, वह दराज़, वो रंगों की शीशियां, उसी तरह अपने उस स्पर्श का इंतज़ार करते हैं, जो उन्हें प्यार करती थी, जो इनकी चमक बनती थी।

वह ब्रश, वह रंग, अभी भी उस माथे को तलाश करते हैं, उसका इंतज़ार करते हैं, जिसके माथे का सिंगार बनकर ताजा रहते थे, नहीं तो अब तक सूख गए होते।

तुम्हारे इंतजार का पानी डालकर मैं जिन्हें सूखने नहीं दे रहा हूं, लेकिन इनकी ताज़गी तुम्हारे साथ से ही है, तुम जानती हो।

ताज़गी! मैं भी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं, रंगों में भी और ज़िन्दगी में भी।

1.1.61

जीती

## खत इमरीज़ का

.....,

तुम्हारे दोनों खत मिले।

पहले खत में तुम्हारी नज़म मिली, तुम्हारे दर्द की नज़म, अपनी पीड़ा की नज़म, जो हर पल तुम जी रही हो, मैं जी रहा हूं।

दूसरे खत में तुम्हारी चिट्ठी मिली। आँखें भरती रहीं और ‘दस बरस’ पर ठुलक गई।

दस बरस मेरे रंग और मैं और मेरी मेज़ की दराज़ अपने दरवाजे खोले तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।

आज का तुम्हारा खत एक फैसला है, तुम्हारी पीड़ा का और मुझे तुम्हारी मोहब्बत की तरह कबूल है।

यह लंबा, तल्ख इंतज़ार दस बरस का अपनी हद और तुम्हारा मेल लेकर मुझे बुला रहा है।

खुदा हाफिज़

2.1.61

जीती

## खत इमरोज़ का

.....,

तुम्हारा यह दस बरस का सराप आज मुझे वरदान जैसा लगा है।

मेरे आगे से सारा अंधेरा हट गया है, एक रोशनी की किरन चमकती हुई दिखाई दी है।  
आज दस बरस के इंतज़ार की ऊँची दीवार पर।

विचारों को राह मिल गई है। मंज़िल का खोया हुआ पता मिल गया है।

इस जुनून पर, इस अपनेपन पर, इस यकीन पर एक दस बरस तो क्या, कई दस बरस  
कुर्बान किए जा सकते हैं।

2.1.61, रात।

जीती

## खत इमरीज़ का

.....,

एक बाग मैं था तुम्हारे साथ।

पीले फूलों के पेड़ के नीचे लेटा हुआ था लाल पर्स, सिर के नीचे रखे हुए। दस साल धीरे-धीरे बीत रहे थे कि एक तेज़ आवाज़ आई। मैं चौंककर उठा दरवाजे की घंटी बजी थी।

तार आया, तुम्हारा तार, तुम्हारा नाम पढ़कर एकदम कुछ हुआ, तेज़ी से, जैसे दस साल का वह धीरे-धीरे कटने वाला रास्ता तेज़ी से गुज़र गया हो। तुम्हारा मिलन जैसे मुझे जगा रहा हो, ‘उठो तुम्हारी रात खत्म हुई। मुझे कई बार ऐसे होता है, लगता है, मैं अपने कंधे पर उस जगह को कई बार देखता हूं, जहां तुम चूम-चूमकर निशान डाल देती थीं। बाहर वह निशान अब कहीं नहीं दिखता, पर अंदर, कहीं गहरे अंदर मिलता है... मैं अपनी आशी को खोजता हूं। वह काला जीती भी अब तुम्हें ही खोजता है, जो कभी और सोचता था।

वह अब आज़ाद है, पर वह और कुछ नहीं सोचता अब और कुछ नहीं खोजता। अब वह शर्मसार है, पर अब तुम देखना रंग काला नहीं रहा उसका, वह आशी रंगा हो गया है।

9.1.61, चार बजे सुबह।

जीती

## खत इमरोज़ का

आशी,

कल टाइम्स वालों से फिर बात हुई थी। सिर्फ पे का फैसला नहीं हो सका। मैं पन्द्रह सौ कहता हूं, वह बारह सौ तक तैयार हुए हैं, पर उन्हें मेरा काम पसंद है।

कल उन्होंने सारा प्रिंटिंग डिपार्टमेंट दिखाया, कैसे एक घंटे में उनकी मशीन बीस हजार कॉपियां छापकर स्टिच करके तैयार कर देती हैं।

पर कुछ अच्छा नहीं लग रहा तुम्हारे बगैर।

तुम पास होती, खुशी से घर भर देतीं।

जब भी मेरे काम की कद्र होती है, तुम्हारी मान और गर्व से भरी आंखें ढूँढ़ता हूं और ढूँढ़ने में मैं खुद खो जाता हूं।

जब भी कोई सुंदर वस्तु, सुंदर दृश्य, सुंदर तस्वीर, सुंदर औरत, सुंदर बच्चा और कुछ भी सुंदर देखता हूं, सारे अंतर में एक पीड़ा होती है। एक अंधेरा अंदर बाहर फैलता हुआ लगता है। इस पीड़ा, इस अंधेरे पर गुस्सा भी आता है। उस समय जी में आता है कि भूल जाऊं, सब कुछ भूल जाऊं, तुम्हें भी भूल जाऊं, लेकिन इस तरह भुलाने पर तुम और याद आती हो।

आशी!

समझ और पहचान क्या कुछ गंवाकर ही आती है?

क्यों ?

अपनी मोहब्बत का रियलाइज़ेशन आया, जब सब कुछ वीरान हो चुका था।

आशी, यह बहुत जुल्म है, दस साल के लिए अंधेरा न करो, मेरी निगाहों के आगे, मेरे हाथों के आगे, मेरे सब-कुछ के आगे।

कौन जाने यही दस साल का समय सारी उम्र हो।  
मैं जान चुका हूं, पहचान चुका हूं, सब कुछ खोकर।  
अब समझ, पहचान, रियलाइज़ेशन सब आ चुके हैं।  
तुम भी आ जाओ।

अपने सब कुछ के इंतजार में  
जीती

## संदर्भ

अमृता जब पहली बार 23 अप्रैल, 1961 को रूस गई थीं, तब वह इमरोज़ से नाराज़ थीं। इमरोज़ बम्बई से दिल्ली तो लौट आए थे, लेकिन फ़िज़ा अपनी नहीं हुई थी।

फिर भी उन्होंने अमृता को रूस जाते वक्त मोतिया के फूल दिए थे।

रूस से अमृता ने इमरोज़ को सिर्फ एक खत लिखा वह यही है।

## खत अमृता का

जीती,

ज़िन्दगी ने जो भी खूबसूरत पल मुझे दिए हैं, मैं उनकी शुक्रगुजार हूं।

कीमतों की परवाह नहीं।

तुम्हारी मोहब्बत के लिए मैंने कितने बड़े विद्रोह की कीमत अदा की है।

तब भी मैं उन पलों को महंगा नहीं कर सकती।

यहां आज बिल्कुल पराये देश ने जिस तरह फूलों से मुझे अपनाया है, राइटर्स यूनियन ने मेरे आने से पहले एक लेख छापा है, ‘खुशामदीद हमारी दोस्त अमृता’ और जुल्फिया ने जैसे मेहमाननवाजी की है, मैंने कहा, ‘कभी मैंने कविता लिखी थी, ज़िन्दगी की मेहमाननवाज़ी हम देख चुके, पर आज मैंने यह बात कही थी, उस समय मेरे बालों में तुम्हारे दिए मोतिया के फूल भी लगे हुए थे।

25.4.61, ताशकन्द

## खत इमरीज़ का

.....,

दुनिया में कितना कुछ दिलफ़रेब है बहलाने के लिए, पर जाने के लिए सिर्फ वह, जो मैंने  
तुम में देखा था।

वह तुम्हारे सिवाय और कहीं, कभी नहीं दिखाई दिया।

तुम्हें कैसे दिल दिखाऊं, जिसमें कुछ और नहीं ठहरता।

तुम्हारे तसव्वुर के आगे कुछ नहीं ठहरता। तुम कहां चली गई हो?

15.1.61

जीती

## खत इमरीज़ का

मेरी जान,

तुमने कुछ नया लिखा, तो ज़रूर होगा, फिर भेजा क्यों नहीं? मैं इंतज़ार कर रहा हूं।

मेरा काम भी, मेरी सेहत भी, मेरी आमदनी भी, मेरे विचार भी, मेरी उम्र भी, सब ठहर गए हैं।

ठहरे हुए हैं, शायद किसी का इंतज़ार कर रहे हों।

मुझे खुद यह मालूम नहीं था कि कोई किसी के लिए ऐसे सोच सकता है, तड़प सकता है, बंध सकता है, किसी एक के साथ।

पर जिये बिना सच कभी समझ में नहीं आ सकता, पर क्या सब कुछ गंवाकर, सब कुछ हारकर समझ आती है?

पर सिर्फ समझ से ही तो जिया नहीं जा सकता। अगर यह समझ सब कुछ लौटाकर नहीं ला सकती, तो यह समझ आई ही क्यों है ?

18.1.61

जीती

## खत इमरोज़ का

मेरे प्यार,

खूबसूरती से, जवानी से, यह शहर, यह दुनिया भरी पड़ी है।

काम की भी कोई कमी नहीं, फिर मेरे जैसे काम करने वाले के लिए, आर्टिस्ट के लिए।

पर किसी खूबसूरती की तरफ मन खिंचता नहीं। किसी काम के लिए दिल नहीं होता। सब कुछ जैसे एक भटकन बनकर रह गए हों मेरे लिए।

आशी, अब अपनी समझ, अपने मन की पहचान हुई है। अब वह ‘मैच्योरिटी’ आई है, इस ‘सफरिंग’ के कारण, जिसे तुम हमेशा चाहती थीं, कॉनफिलिक्ट गया, तो ‘मैच्योरिटी’ आई। सफरिंग मिली, तो समझ आई।

तुम गई, तो तुम्हारी कीमत जानी। तुम मेरे साथ इस तरह चुप न हो जाओ। अब कुछ भी मुझसे ऐसा नहीं होगा, जो तुम्हें बुरा लगे, जिससे कभी तुम्हें तकलीफ हो। तुम्हें मैंने हमेशा अपना आप बताया है, अपने कॉनफिलिक्ट भी बता देता हूं। तुम मुझे समझ लो। तुम्हारे सिवा मुझे कोई नहीं समझता।

कोई और समझे, मुझे इसकी ज़रूरत भी नहीं। सिर्फ तुम समझ लो मेरी आशी, अपने जीती को...

24.1.61

.....

## खत इमरोज़ का

आशी,

क्या मालूम था कि तुम, सिर्फ तुम ही मेरी कशिश का मरकज़ थीं और रहोगी।

मैं अपनी खता तस्लीम करता हूं, पर क्या तुम अपना जुल्म कभी नहीं लौटाओगी?

पर कितने समय तक... इस जुल्म के सेंक से तुम खुद कितने समय तक बचोगी?

क्या मेरे चुप होने तक ?

27.1.61

तुम्हारा अपने मरकज़ का  
जीती

## खत इमरीज़ का

मेरी आशी,

कभी मेरा घर था, अब नहीं है, इसका अहसास होता है, जब तुम याद आती हो।

कितने सपने बुने थे, कितना यकीन था पूरे करने का।

यकीन उसी तरह है, पर पूरा कुछ नहीं हुआ।

क्या सपने बुनने वाले सिर्फ सपने देख सकते हैं, हकीकत में तब्दील नहीं कर सकते ?

मैं नहीं मानता और मैं सपने बना सकता हूं, तो हकीकत भी बना सकता हूं। मैं सपना नहीं हकीकत हूं, एक ठोस हकीकत, एक तल्ख हकीकत, एक अटल हकीकत (और तुम भी) हकीकतों की किस्मत !

मुझे अपने अधूरेपन पर गुस्सा आता है। यह गुस्सा आदमी के लिए ललकार बनता है, फिर आदमी का कुछ जाग जाता है। वक्त हमेशा इंतज़ार करता है।

यह मिलन ज़रूर होगा...

27.1.61

जीती

## खत इमरोज़ का

मेरी आशी,

इस समय एक फिल्म का सीन याद आ रहा है। एक अंधी लड़की रस्सी के सहारे चलकर अपने बिस्तर पर पहुंच रही है। रस्सी का एक सिरा उसके बिस्तर से और दूसरा गुसलखाने के दरवाजे से बंधा हुआ है।

तुम्हारी कशिश की अदृश्य रस्सी से मैं भी चलता जा रहा हूं।

इस कशिश की रस्सी का एक सिरा मोहब्बत से 5 दिसम्बर, 1960 से और दूसरा सिरा दस साल के लम्बे अंधेरे रास्ते के पार 5 सितम्बर, 1970 से बंधा हुआ है... मेरे मिलने की कशिश ने न जाने मेरे अंदर कैसी रोशनी की हुई है कि किसी अंधेरे की परवाह नहीं।

जैसे यह दस साल लम्बा अंधेरा, अंधेरा न हो, एक रास्ता हो, सीधा रास्ता अपने घर का, जिसके दरवाजे में खड़ी हुई तुम इसी रास्ते की तरफ देख रही हो, मैं जिस पर चलता आ रहा हूं। अपनी औरत का मर्द अपने वक्त का समय।

4.2.61

अपनी आशी का  
जीती

## खत इमरीज़ का

.....

अभी स्टेशन पर अवतार को छोड़कर आया हूं।

तुम्हारा खत मिला, नज़रें झुक गई हैं, मर्द झुक गया है, मर्द की गैरत झुक गई है।

मेरे अंदर का सब कुछ झुका हुआ रो रहा है।

एक ही बात को जी कर रहा है, इस तरह बार-बार झुकने से ये नज़रें, यह मर्द और मर्द का सब कुछ हमेशा के लिए झुक जाए खत्म हो जाए...

तुम्हारा ज़ख्म अपना अंधेरा  
जीती

## खत इमरोज़ का

दोस्त बेगम,

यह नॉवल<sup>1</sup> तुम ने कब अमरीका जाकर लिखा था? मैं इस तरह यह नॉवल पढ़ रहा हूं, जैसे किस्मत पढ़ रहा होऊ। यह किस्मत किसी ईश्वर की नहीं, एक शायर की बनाई हुई है और वह भी तुम्हारे सिवा कौन बना सकता है।

ज़हे-किस्मत।

13.2.61

तुम्हारा  
जीती

---

1. नॉवल 'फाउटेन हैड अमृता' ने इमरोज़ को खत की जगह भेजा था।

## खत इमरोज़ का

....,

नौ सौ मील का फासला जो दिखाई देता था, वह अब नहीं रहा ।

पर जो दिखाई नहीं देता, वह फासला रहेगा? हमेशा एक जीती-जागती गैरफ़नी कशिश देगा।

जीती

नवम्बर, 1960 से दिसम्बर, 1963 तक अमृता इमरोज़ से नाराज़ रही।

उसका गुस्सा जायज़ था।

इमरोज़ पूरे तीन वर्ष दिल्ली में धूनी रमाकर रोज़ अपनी ही चिनाब<sup>1</sup> पार करते रहे।

रोज़ एक-दूसरे से मिलते रहे। कोई भी एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

अमृता ने 1961 में हौज़ खास में अपना मकान बनाना शुरू किया।

दोनों मकान बनता देखते रहे।

1962 में अमृता अपने नए मकान में रहने लगी।

8 जनवरी 1964 को दूरी की यह चिनाब नहीं रही। दोनों साथ-साथ रहने लगे।

इससे पहले के सालों के अमृता ने जो अकेलापन भोगा, उसी अरसे में लिखा हुआ यह खत है, 29 मार्च, 1962 का।

---

1. पंजाब की एक नदी।

## खत अमृता का

जीती,

यह मेरी ज़िन्दगी की सड़क कैसी है?

जिसके सारे मील के पत्थर हादसों के बने हुए हैं।

तुम थे, तो घर नहीं था, आज घर है, तो तुम नहीं हो।

थोड़े से मीलों की दूरी होती है, लेकिन कानून की छोटी-सी मोहर उसे दूसरी दुनिया की दूरी बना देती है।

मैं अजीब तरह से परेशान हूं और ऐसा लग रहा है, जैसे यह बेचैनी मेरी उम्र जितनी लंबी है या मेरी उम्र का नाम ही बेचैनी है।

29.3.62

आशी

## संदर्भ

जब राजिन्दर सिंह बेदी 'राणो' फ़िल्म बना रहे थे, तो एक शाम उनका फोन बम्बई से आया कि अमृता उनकी फ़िल्म के लिए एक गीत लिख दें। वह उस गीत के सिर्फ 500 रुपए दे रहे थे। फोन पर ही गाने की तर्ज बताई गई। अमृता ने गीत लिखा और दो दिन बाद डाक से भेज दिया।

उसके बाद गाने की रिकार्डिंग हुई या नहीं अमृता को कुछ पता नहीं लगा।

हफ्ते बीत गए, महीने बीत गए, न कोई खत, न कोई फोन।

गीत मिल जाने के बाद बेदी साहब भी चुप थे और उनका इकरार भी चुप था।

इमरोज़ ने एक बार बम्बई में सुखबीर से पूछा, "यह बोलने वाले बेदी साहब तो सुनाई देते हैं, पर क्या यह चुप बेदी साहब किसी को सुनाई देते हैं? बातों का बादशाह अपने ही कहे से खामोश है।"

हालांकि अमृता ने कभी-भी उनका वायदा उन्हें याद नहीं दिलाया था, लेकिन इस अगले खत में अमृता का इशारा उसी घटना की तरफ़ है।

## खत अमृता का

जीती,

आज न जाने क्या हो गया है जीती, समय खड़ा हो गया लगता है।

सवेरे के दस बजे हैं। अभी चिट्ठी आएगी, तब समय चलने लगेगा।

अवतार आई हुई है।

कल रात अवतार, सैली, कंदला और मैंने फिल्म देखी थी, ‘माई फेयर लेडी।

बड़ा जी किया मैं यह फिल्म तुम्हारे साथ देखती।

जीती, तुम्हारी फिल्म कभी बने-न-बने, तुम्हारी पेंटिंग्स की नुमाईश हो या न हो। तुम्हारे अंदर का हुनर और हुस्न स्क्रीन या कैनवास पर उतरकर कभी लोगों के सामने आए या न आए, पर तुम्हारे अंदर के हुस्न को मेरा सलाम हमेशा पहुंचता रहेगा।

मेरे एक ही दोस्त, तुम्हारे सिवा मुझे इस दुनिया में किसी ने नहीं जाना, किसी के न समझने का शिकवा नहीं, तुम्हारे समझ लेने की तसल्ली है।

अभी मुझे अवतार बता रही थी कि बेदी साहब का कहना था कि अमृता पैसे को प्यार करती है, हर चीज़ को पैसे से तौलती है।

तुम भी यह सुनकर हँस देना।

लोग कितने सतही हैं!

मैं बेदी को उन लोगों में नहीं गिनती थी। ख्याल था, उसे मानव मन की गहरी पहचान है, उसकी मान्यताएं अलग हैं, उसकी नज़र और है।

पर सब कुछ सतही है।

कमा सकने का गर्व अभी तक किसी ने नहीं जाना।

दान में लोगों का विश्वास है, मुफ्तखोरी में लोगों का विश्वास है।

यह दान और मुफ्तखोरी ‘लूट’ के बदले हुए रूप हैं। कमाई की खूबसूरती नहीं।

कमाई का गर्व जिन्हें हो, उनके होंठों पर यह शब्द नहीं आते।

मेहनत का मूल्य लेना और चुकाना दोनों चीजें एक ही खासियत से पैदा होती हैं।

पर कई लोगों के विश्वास एक तरफ़ा होते हैं, लेना उन्हें ठीक लगता है, पर चुकाना नहीं।

देना की जगह चुकाना शब्द मैंने जान बूझकर लिखा था, ताकि देना शब्द से दान की बून आए।

दान से दुर्गंध आती है, पर कमाई शब्द से महक आती है।

तुम्हारे महक भरे हाथों को प्यार।

27.4.65

माजा

## संदर्भ

1966 में अमृता के बलगारिया और मॉस्को से लिखे गए खत।

## खत अमृता का

जीती,

घर से जाने-पहचाने चेहरों से बिछड़कर पहला एहसास अजीब अकेलेपन का हो रहा है।

रात को जैसे ऊपर देखने पर बादल दिखाई दे रहे होते हैं... इस समय हवाई जहाज़ की खिड़की से नीचे देखने पर बादल दिखाई दे रहे हैं.... जैसे आसमान को फाड़कर आधा नीचे बिछा लिया हो और आधा ऊपर ओढ़ लिया हो, सिर्फ जिस्म ने नहीं, ख्यालों ने भी।

मॉस्को पहुंचने में अभी दो घंटे की देर है, ख्यालों को अकेलेपन से चलकर कहीं पहुंचने में अभी न जाने कितने घंटे बाकी हैं।

24.5.66, दो बजे दोपहर

.....

## खत अमृता का

.....,

मेरी घड़ी में हिन्दोस्तान का वक्त है। चार बजे हैं।

मॉस्को पहुंच गई हूं। यहां अभी दोपहर के एक बजकर पैंतीस मिनट हुए हैं।

पासपोर्ट की चैकिंग, सामान का टिकट, रात के खाने के कूपन, एक घंटा लग गया है।

अभी दर्शन को फोन किया है।

एक मुल्क का मेहमान बनकर आने में और राहगीर होकर गुज़रने में क्या फर्क है, बड़ा दिलचस्प अनुभव है।

एयरपोर्ट पर लगभग एक घंटा धूमते-धूमते पक गई हूं। अभी एक कूपन एयरपोर्ट के रेस्टोरेन्ट में जाकर इस्तेमाल किया है। कुल तीन कूपन मिले हैं। हर कूपन में एक रूबल और बीस कोपेक्स की चीजें ले सकती हूं।

एक बीयर की ओर एक अंडे की कीमत एक सी है। रात बिताने के लिए होटल का कमरा अच्छा है, पर यहां खाने का इंतज़ाम नहीं है। खाने के लिए रेस्टोरेंट में जाना होता है। इस समय यहां की घड़ी में साढ़े चार बजे हैं।

कमरे के बिस्तर पर बैठकर यह खत लिख रही हूं। अगर दर्शन आया, तो यह खत उसे ही पोस्ट करने को दे दूंगी।

इस समय रात के नौ बजे हैं, पर अभी तक धूप है। कभी धूप की तरफ देख रही हूं, कभी घड़ी की तरफ।

इस समय मैं और दर्शन एयरपोर्ट के रेस्टोरेंट में कॉफी पी रहे

24.5.66

.....

## खत अमृता का

दोस्त,

सोच रही हूं, यह लम्बे सफर अगर अकेले करने हों, तो जवानी में ही कर लेने चाहिए, नहीं तो हमें इकट्ठे करना चाहिए।

अजीब अकेलेपन का एहसास होता है, अकेले। अच्छा, अकेलेपन की लंबी बात नहीं करती, नहीं तो खत लिखते-लिखते पॉल पॉट्स बन जाऊंगी।

सोफिया होटल के कमरे में बैठकर यह खत लिख रही हूं। जिस होटल में ठहरी हूं, वह नया बना है, बहुत अच्छा है, पर यहां खाने का इंतज़ाम नहीं है। खाना खाने के लिए किसी और होटल में जाना पड़ता है।

सवेरे हवाई जहाज में चाय मिली थी, पर आज सारे दिन चाय नहीं मिली। शाम को कई जगहों से पता किया, चाय नहीं मिली। यहां लोग चाय नहीं पीते।

कंदला की बनाई हुई चाय याद आ रही है।

25.5.66

.....

## खत अमृता का

जीती,

सवेरे तड़के उठकर सबसे पहले ख्याल चाय का आया, इस तरह जैसे कंदला को आवाज दे सकूँ ‘भोपी, चाय पिला दे!’

साढ़े आठ बजे, एक होटल में जाकर चाय मिली। एक प्याले में चाय की पुड़िया डालकर उन्होंने गर्म पानी डाल दिया। पुड़िया के कागज़ में से छनकर चाय का जितना रंग पानी में आ सकता था, आया। पर कहां वह एक-आतिशा और दो-आतिशा चाय!

मेरा यह खत मिले, तो नाम पर कई प्याले चाय पीना...

26.5.66

.....

## खत अमृता का

जीती, ओ, मेरे जीती!

आज मैं सोफिया की सबसे खूबसूरत जगह पर बैठकर तुम्हें खत लिख रही हूं।

सारा शहर एक हरी घाटी है, जिस पर चारों ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की मोटी-मोटी झालर लगी हुई है। बहुत ऊँचाइयों पर बर्फ की लकीरें गोटे की तरह चमकती हैं।

आज जहां बैठकर खत लिख रही हूं। यह बितोशा पहाड़ी का रेस्टोरेंट है। सोफिया शहर से आधा घंटे की ड्राईव। वैसे बसें भी 45 मिनट में पहुंच जाती हैं।

पहाड़ी रास्तों का हर मोड़ अचंभों से भरा होता है।

झरनों और पहाड़ी नालों की आवाज़ और पानी जब तन-मन के जोर से पत्थरों के गले मिलता है, पानी नहीं पत्थर गाते हुए लगते हैं।

सोच रही हूं, अगर मेरी ज़िन्दगी के बाकी दिन तुम्हारे साथ किसी ऐसी पहाड़ी की कोख में गुज़रें, मैं ज़िन्दगी बिताऊं नहीं, पल-पल जिऊं।

आज तुम मुझे बहुत ही याद आ रहे हो। अगर इन जगहों पर तुम मेरे साथ होते... लकड़ी और पत्थर की एक झोपड़ी में मैंने तुम्हारा स्टूडियो तसव्वुर किया है।

परसों मैंने वह होस्टल भी देखा है, जहां परदेसी बच्चे पढ़ते हैं। बहुत ही बड़े बाग में बना हुआ है। वहां मैं सैली-कंदला की कल्पना कर रही हूं।

इस समय इस पहाड़ी रेस्टोरेंट में एक बहुत बड़ी मेज़ बल्गारियन लड़के-लड़कियों ने हथिया ली है। एक जना बांसुरी जैसा कुछ बज़ा रहा है, बाकी गा रहे हैं, कुछ नाच भी रहे हैं।

कल सवेरे दिल्ली के कुछ म्यूजिशियंस यहां से वापिस जा रहे हैं। उनके हाथ मैंने तुम्हें एक ख़त भेजा है। वो दिल्ली जाकर पोस्ट करेंगे।

मेरे सैली-कंदला को बहुत प्यार।

30.5.66, सोफ़िया।

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

मेरे इमरोज़,

आशिक्र दुनिया के हर मुल्क में होते हैं, पर आज मैं मॉस्को में आशिकों के आशिक देख रही हूं।

गोर्की, चेखव, टॉल्स्टाय, मायकोव्स्की और कितने ही और कलम के आशिक इस देश में हुए।

कलम के, स्वतंत्रता के और मनुष्यता के आशिक और देशों में भी होते हैं, पर सोवियत लोगों ने जिस तरह इनकी छोटी-छोटी यादों को भी संजोकर सिर-आंखों पर रखा है, इन्हें आशिकों के आशिकों से कम कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनके नामों पर सड़कें, इनके बुत और इनकी तस्वीरें बनाने के अलावा इनकी कलम द्वारा रचित कृतियां, इनके अंगों से स्पर्श किए हुए कपड़े और इनके हाथों से छुई हुई वस्तुएं, चाहे वह एक चाकू हो, ऐनक हो, कंघी हो, खत हो या चाय की केतली और एक प्याला ही हो, लोगों ने चूम-चूमकर रखी हुई हैं।

लोगों की अमीरी उनके खिले हुए चेहरों से हर जगह प्रत्यक्ष दिखाई देती है, पर इन संग्रहालयों में जा खड़े हों, तो लोगों के मन की अमीरी की थाह भी मिलती है।

आज मैं गोर्की के स्मृति-भवन में खड़ी, लेनिन की कढ़ और दोस्ती के हकदार लेखक गोर्की की तस्वीरें भी देख रही हूं और बाल-गोर्की के उस घर का नक्शा भी, जहां उसने अपने नाना का प्यार, गरीबी और मार झोली थी, और इसके बीच के समय में घटने वाले हर

हादसे के चिन्ह देख रही हूं। वह पहली मेज़ जिस पर कोहनी रखकर गोर्की ने पहली कहानी लिखी, वह अखबार जिसमें, उसकी पहली कहानी छपी।

1902 में गोर्की के घर के आगे 'जार' के लगाए हुए पहरे की तस्वीर और गोली से बिंधा हुआ चमड़े का वह बटुआ, जिसने दिसंबर, 1903 में, जब अचानक ज़ार के आदमी ने गोर्की की छाती में गोली मारी थी, तब उसकी छाती को बचा लिया था और 9 जनवरी, 1905 के उस खूनी इतवार की तस्वीर जब ज़ार की गोली ने मजदूरों की शान्तिपूर्ण हड़ताल का सामना किया था और गोर्की का वह रोषपूर्ण लेख, जो उसने मजदूरों की सहानुभूति में लिखा था और जिसके बदले में ज़ार ने उसे कैद में डाल दिया था, गोर्की, कैदी नम्बर-68-9-9 और जेल की उस लोहे की चारपाई का नक्शा मेरे सामने है, जिस पर बैठ कर गोर्की की कलम ने कितना कुछ रचा था।

गोर्की की 25,000 यादों का यह घर और ऐसा ही हर लेखक का संग्रहालय कोई ऐसा मुल्क ही बना सकता है, जहां आशिकों के आशिक बसते हों।

18 जून, 1966

अमृता

## संदर्भ

1967 में अमृता के यूगोस्लाविया, हंगरी, रोमानिया जर्मनी और तेहरान से लिखे खत।

## खत अमृता का

मेरे जीती,

जो अनुभव इस बार यूरोप को देखने का हुआ है, वह बिल्कुल नया है, अजीब भी।

कल शाम छह बजे टुबरोवनिक पहुंची थी।

उस समय हिन्दुस्तान में रात के साढ़े दस बजे होंगे। आधा घंटा एयरपोर्ट पर सामान लेने में लग गया और एक घंटा होटल तक पहुंचने में।

थकान और नींद से बेहाल-सी थी। आते ही सो गई।

सवेरे उठकर छह बजे रेस्टोरेंट से चाय मंगवाई।

होटल बिल्कुल समुद्र के तट पर है, सो बरामदे में बैठकर चाय पी।

साढ़े नौ बजे एक लड़की आई, मुझे अपने दफ्तर ले गई। वहां जाकर पता चला कि सिर्फ होटल का कमरा देते हैं, खाना अपने पास से खाना पड़ता है, जिसके लिए वह रोज़ सात हज़ार दीनार देते हैं, पर वे अच्छे होटल में खाना खाने के लिए काफी नहीं होते।

उन्होंने सलाह दी कि मैं खाना बाज़ार के सस्ते होटलों में खा लिया करूँ। यह बाज़ार मेरे होटल से काफी दूर है।

एक बीयर की कीमत तीन सौ दीनार है, सिगरेट का पैकेट भी तीन सौ दीनार में आता है और अमरीकन सिगरेट का पैकेट साढ़े आठ सौ दीनार में। अपने होटल वापिस आकर फिर बाज़ार जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही है, बहुत गर्मी है।

शाम को एक गाइड आएगा, कुछ जगहें दिखाने के लिए, उसी समय रास्ते में कुछ खा लूंगी। यहां रोज़ रात को नौ बजे नाटक होते हैं। बहुत टूरिस्ट आए हुए हैं। सारा दिन बेदिंग सूट पहने समुद्र-तट पर बैठे रहते हैं।

जगह बहुत खूबसूरत है, पर मैं बहुत अकेलापन महसूस कर रही हूं।

शाम को कोई साढ़े आठ बजे आया करेगा, जिसके साथ रोज़ रात को एक नाटक देख लिया करूँगी। यह दफ्तर का बंदोबस्त है।

पर दिन में दो-तीन बार बाज़ार जाना, घूमना किसी दुकान पर कुछ खरीद कर खाना... अकेले... और जहां किसी को अग्रेज़ी नहीं आती, बहुत अजीब लग रहा है...

शाम के छह बज गए हैं। बहुत भूख लगी हुई है। कोई रेस्टोरेंट खुला हुआ नहीं है। सब सात बजे के बाद खुलते हैं।

एक कैफे में एक गिलास बीयर और एक सैंडविच खरीदा, 370 दीनार में। बीयर पी ली, पर सैंडविच इतना सख्त था, खाया नहीं गया।

कंदला की बनाई हुई भिंडियां और पनीर की रोटी बहुत याद आती हैं।

10.8.67, ऐक्सेल्सियर होटल।

अमृता

## खत अमृता का

मेरे जीती,

अभी तुम से बातें कर रही थी कि जाग गई। इसलिए इस जागने को बीच में से हटाने के लिए खत लिख रही हूं।

जीती, इस बार अजीब अनुभव हो रहे हैं। एक बात को लेकर अच्छा भी है कि अकेले घूमते हुए मैं लोगों को बहुत निकट से देख सकती हूं।

बाज़ार में लोग हाथ पकड़-पकड़ कर चीजें खरीदने के लिए कहते हैं।

कल एक औरत लाल रंग के कढ़ाई वाले थैले बेच रही थी। पीछे पड़ गई कि एक ज़रूर खरीद लो। बिल्कुल साधारण थैला था, मुझे खरीदना नहीं था, पर कीमत पूछी, छह हज़ार दीनार थी।

शहर की मोटी दीवार को ढासना लगाकर बैठे कुछ आर्टिस्ट अपनी तस्वीरें दिखाते हैं, खरीदता कोई नहीं।

बार-बार तुम्हारा ख्याल आता है, आर्टिस्टों की ज़िन्दगी की जद्दोजहद हर जगह बहुत सख्त है।

साधारण लोगों को रोज़ के दो हजार दीनार मिलते हैं, पर इससे पेट नहीं भरता।

मैंने शाम को एक आमलेट और एक स्लाइस खाया, एक हज़ार एक सौ दीनार में।

बहुत अच्छा लगता, अगर तुम मेरे साथ होते।

हम चुपचाप समुद्र की ओर देखते रहते।

मैं बरामदे में खड़े होकर कभी जहाजों के बादबान देखती हूं और कभी कमरे में आकर हैनरी मिलर पढ़ने लगती हूं।

Perhaps it is the death instinct in me. (The life instincts are converted into death instincts.)

एक एहसास सा है, कि ज़िन्दगी के बहुत थोड़े दिन बाकी हैं, फिर वे थोड़े दिन भी तुम्हारे बिना क्यों..?

अकेलेपन को मैंने इससे पहले हमेशा एक तरल चीज़ की तरह महसूस किया है, बदन पर आते हुए पसीने की तरह, जिसे रूमाल से पोंछा जा सकता है।

इस तरह ठोस चीज़ जैसा कभी महसूस नहीं किया। यह अपने ही शरीर पर गूमड़े की तरह है, जिसे बार-बार हाथों से टोहा भी जा सकता है और जिसका बोझ उठाकर चलना पड़ता है...

22.8.67

माजा

## खत अमृता का

जीती,

इस बार तुम्हें ज्यादा ही उदास खत लिखे गए हैं। फोन पर नज़र जाती है, तो एकदम फोन करने को जी करता है।

यह सब दीवनगी है। इस दीवानगी को चीरकर मुझे बाहर आना चाहिए।

अभी लोक नृत्य देखकर आई हूं। बहुत अच्छे थे, पर तुम याद आते रहे... कंदला भी...

12 तारीख, रात साढ़े ग्यारह बजे।

अकेलेपन के अथाह सागर में तुम्हारा ख्याल एक लाइट-हाउस की तरह आ रहा है।

लाइट-हाउस की तरह भी और लाइट-बोट की तरह भी। इस समय तुम, समुद्र और हैनरी मिलर मेरे पास हैं।

हैनरी मिलर इस तरह पढ़ रही हूं, जैसे उस पर पीएच.डी. कर रही होऊँ...

आज बहुत बारिश है। समुद्र और आसमान एक हो गए लगते हैं....

13 तारीख, तड़के सवेरे।

अपने ऊपर तुम्हारी पकड़ जिस तरह है, वह नॉर्मल नहीं है।

पर नॉर्मलिटी क्या है?

हैनरी मिलर के शब्दों में – ‘Normality in the paradise of escapeologists, for it is a fixation concept, pure and simple. It is better, if we can, to stand alone and feel quite normal about our abnormality, doing nothing. whatever about it, except what needs to be done is order to be oneself...’

इस ‘एबनॉर्मलिटी’ के बारे में कुछ नहीं कर सकती, यह मेरी शख्सियत का हिस्सा है।

यही मैं हूँ।

13 तारीख, दोपहर।

यहां किसी लेखक से मुलाकात नहीं हो रही है। किसी को अंग्रेज़ी नहीं आती...

13 तारीख, शाम।

इस बार लगता है सिर्फ तुम्हें ही खत लिखने के लिए आई हूँ।

तुमसे बातें करने को जी कर रहा है...हरेक से बातें करने से बात खत्म हो जाती है। सिर्फ तुम्हारे साथ बात आगे चलती है, एक सांस में से निकलने वाली दूसरी सांस की तरह...

14 तारीख, तड़के सवेरे।

माजा

## खत अमृता का

जीती,

हँकीकतों की हदबंदी से घबराकर तलाश की हुई एक चीज़ होती है, फैटेसी

पर सोचती हूं, जो गंभीरता से पाया जाता है, वह इससे भी आगे है।

इसलिए तुम्हारा ज़िक्र उससे आगे है, बियांड फैटेसी।

हैनरी मिलर के शब्दों में सारे आर्ट एक दिन खत्म हो जाएंगे, पर आर्टिस्ट जरूर रहेंगे।  
ज़िन्दगी 'एक आर्ट' नहीं होगी – 'आर्ट' होगी।

अगर यह मान लिया जाए कि हैनरी की कल्पना का समय एक हज़ार साल में आ जाएगा, तो यह कहूंगी कि समय से एक हज़ार साल पहले पैदा हो जाना तुम्हारा कसूर है।  
यह हर उस व्यक्ति का कसूर है, जो सिर से पैर तक जीता है। इस दुनिया में सभी लोग ऐसे नहीं होते। हर किसी का आधा कुछ जन्म लेता है।

आधा मां की कोख में ही मर जाता है।

हर मनुष्य अपना बहुत-सा हिस्सा कोख की कब्र में दफ़नाकर जन्म लेता है और उसके लिए किसी पूरे मनुष्य को देखने से बढ़कर और कोई दुःखदायी बात नहीं होती।

सो इस दुनिया का तुम्हारे प्रति लापरवाह होना स्वाभाविक है।

या ऐसा कहूं कि हर वर्तमान की जड़ें केवल अतीत में होती हैं।

पर तुम्हारे जैसे उस किसी का क्या है, जिसके वर्तमान की जड़ें सिर्फ भविष्य में हैं। अगर एक हज़ार साल बाद छपनेवाले किसी अखबार की कॉपी मैं आज बाजार में खरीद सकू, तो मेरा यकीन है कि मैं उसमें तुम्हारे कमरे में बंद पड़ी हुई तुम्हारी कला-कृतियों का विवरण पढ़ सकती हूं।

‘परफैक्शन’ जैसा शब्द मैं तुम्हारे साथ नहीं जोड़ूँगी। यह एक ठंडी और ठोस-सी चीज़ का एहसास देता है और यह एहसास कि इसमें से न कुछ घटाया जा सकता है, न इसमें बढ़ाया जा सकता है।

पर तुम एक विकास हो, जिससे नित्य कुछ झड़ता है और जिस पर नित्य कुछ उगता है।

‘परफैक्शन’ शब्द गिरजा की दीवार पर लगी हुई ईसा की तस्वीर की तरह है, जिसके सामने खड़े होकर बात खड़ी हो जाती है।

पर तुम्हारे साथ बात करने से बात चलती है, एक सहजता से, जैसे एक सांस में से दूसरी सांस निकलती है। तुम जीती-जागती हड्डियों के ईसा हो।

एक पराये मुल्क से तुम्हें खत लिखते समय याद आया है कि आज पंद्रह अगस्त है, हमारे मुल्क की आज़ादी का दिन।

अगर कोई इंसान किसी दिन का चिन्ह बन सकता है, तो कहना चाहूंगी कि तुम मेरे पंद्रह अगस्त हो। मेरे अस्तित्व की और मेरे मन की अवस्था की स्वतंत्रता का दिन...

दुब्रोवनिक (यूगोस्लाविया)।

अमृता

## खत इमरीज़ का

मेरी आशी,

आज सवेरे मनोज<sup>1</sup> का फ़ोन आया। मैं उससे मिलने उसके होटल गया।

बातचीत करते-करते बात चल पड़ी पंजाबी फ़िल्म बनाने की, पंजाब जैसी ठोस और पंजाबियों जैसी सच्ची फ़िल्म बनाने की।

बात तुम्हारे नॉवेल ‘पिंजर’ पर आ गई। मनोज यह नॉवल पढ़ चुका है।

मैंने अपने शब्दों में फिर कहानी सुनाई, पात्रों का निर्माण, गठन और वातावरण और उस वातावरण में रची हुई पंजाबी सभ्यता।

मनोज बड़ी संजीदगी से सुनता, पूछता और समझता रहा। बात चलती दिख रही थी।

भोपी के आने का समय हो गया था। मैं वापिस घर आ गया।

घर आकर तुमसे बातें करने लगा, कभी अपने कमरे में बैठकर, कभी तुम्हारे कमरे में खड़े होकर। मैं देख रहा था पूरो<sup>2</sup> को बोरी पर बैठे हुए फलियों से मटर निकालते हुए, रशीद को घोड़ी पर उसे उठाकर ले जाते हुए और सुन रहा था, बहुत आवाजें वारिस शाह को पुकार रही हैं।

9.8.67

जीती

1. मनोज कुमार : एक्टर व फिल्म प्रोड्यूसर
2. पूरो : पिंजर की मुख्य पात्र।

## खत अमृता का

मेरे जीती,

आज 21 तारीख । इस शहर (दुब्रोवनिक) में मेरा आखिरी दिन है। कल सवेरे नौ बजे के प्लेन से आरबरिद जाना है। वहां से शतरुगा, जहां कविता की शाम मनाई जाती है और वहां से वापिस बेलग्रेड।

किताबों का बहुत बोझ है। मालूम हुआ है, दफ्तर वाले अधिक सामान का किराया नहीं देंगे। अगर सवेरे वह किराया देना पड़ा, तो रोटी खाने के लिए पैसे नहीं रह जाएंगे।

वो इक्कीस दिन के पैसे एक साथ दे चुके हैं।

आज 22 तारीख को आरबरिद पहुंच गई हूं।

कल शाम जाली का एक थैला खरीदकर सब किताबें उसमें डाल लीं, बाकी बड़े पर्स में और दोनों थैलों को दोनों बाहों में उठा लिया। दोनों बाहों में पीड़ा हो रही है, लेकिन अधिक सामान के पैसे नहीं देने पड़े।

यहाँ प्लेन में पानी तक नहीं पूछते।

बहुत लंबा सफर था। आधी जान निकल गई, पर यहाँ पहुंच कर फिर जान में जान आई है।

यह शहर आरबरिद एक बहुत बड़ी झील के किनारे पर बसा हुआ है। कोई ढाई सौ कवि इकट्ठे हो रहे हैं। 25, 26, 27 तीन दिन कविताओं की शाम मनाई जाएगी।

अभी आते ही उन्होंने मेरी कविता अंग्रेज़ी में टाइप कर ली है, ‘आग की बात’ इसका अनुवाद करने के लिए।

किताबें उठाने से थकी बांहों को दबा रही हूं, पर थकान सफल हो रही है।

‘नागमणि’ के डिज़ाइन देख-देखकर सब खुश हो रहे हैं। हैरान हैं कि हिन्दोस्तान में ऐसे पर्चे निकलते हैं और रश्क कर रहे हैं कि उनकी ज़बान में इस जैसा कोई पर्चा क्यों नहीं निकलता?

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

जीती जान,

आज शतरुगा के मेले में कविता पढ़ते समय लोगों ने जो प्यार दिया है, उससे आंखें  
छलक आई हैं।

पंजाब ने मुझे सारी उम्र निरादर सहते रहने की आदत डाल दी है, इसलिए बेगाने देशों में  
मिली इस नई चीज़ को झेलते समय बहुत अजीब लगता है।

26.8.67

.....

## खत अमृता का

.....,

यहां से एक लेख लिखकर ‘नागमणि’ के लिए पोस्ट कर रही हूं। नए अंक में डाल देना। दुब्रोवनिक में भी एक आर्टिकल लिखा था, पर वह बीस पन्नों का था। उसकी कॉपी नहीं की गई। वह दिसंबर अंक में वापिस आकर छाप लूंगी।

27.8.67

.....

## खत अमृता का

.....,

जर्मनी से एक इन्वीटेशन मिला है, एक हफ्ते के लिए। बैलग्रेड पहुंचकर तारीख पक्की करूँगी। एक इन्वीटेशन तेहरान से भी मिला है, तीन दिन के लिए, हमारी एम्बैसी के ज़रिए। सोचती हूँ, सफर बहुत ही लंबा हो जाएगा...

24.4.67

माजा

## खत इमरीज़ का

माजा,

इन तीन महीनों के लिए घर की ज़िम्मेदारियां हमारे ऊपर छोड़ दो।

ये तीन महीने अमृता के साथ अमृता के हैं, जो सिर्फ लेखक है, सारी की सारी लेखक । भोपी<sup>1</sup> वैसी की वैसी है, प्यारी-प्यारी। भोपी के इस अंकल में मम्मी शामिल हो गई हैं। इस शामिल होने का एहसास बड़ा ही नया है और पहला अनुभव है।

जीती की तरह मैं दिन-भर काम करता हूं और तुम्हारी तरह दिन-भर घर पर रहता हूं। घर के लिए और अपनी दोनों बेटियों के लिए।

मेरा हर खत तुम्हारे नाम एक टोस्ट होगा।

23.8.67

तुम्हारा  
जीती

---

<sup>1</sup> अमृता की बेटी कंदला।

## संदर्भ

अमृता जब हँगरी में थी, उनके जन्मदिन पर लिखा इमरोज़ का खत।

## खत इमरीज़ का

मेरी अपनी आशी,  
आज का आंगन भरा हुआ है,  
सारे मौसमों से,  
मौसमों के सब रंगों से,  
सुगंधों से,  
सभी त्यौहारों से,  
सारे अदब, सारी पाकीज़गी से,  
365 सूरजों से।

मैं आधी सदी के सारे सूरजों को लेकर इस आज को, 31 अगस्त को तुम्हारे होने को  
टोस्ट दे रहा हूं, सदी के आने वाले सारे सूरजों का।

31.8.67

जीती

## खत अमृता का

ओ, मेरे जीती,

कल सवेरे तड़के ही बैलग्रेड पहुंची थी।

आने पर तुम्हारे तीन खत मिले। ऐसे जैसे यहां एयरपोर्ट पर तुम खुद मुझे लेने आए हो।

इस समय तुम्हें खत लिखकर मैं अपना जन्मदिन मना रही हूं...

कल रात यहां बोहेमियन गली देखी।

यहां कवि, एक्टर, पेन्टर्स मिलकर उन्नीसवीं सदी की परंपरा के अनुसार एक महीने के लिए जश्न मना रहे हैं।

रात को मोमबत्तियां जलाकर पैटिंग्स बेचते हैं।

उन्नीसवीं सदी की साइलेंट फिल्में देखते हैं।

पुराने नाटक खेलते हैं।

एक ओर कोई मछली तल रहा है।

यहां वे कविताएं भी पढ़ते हैं और भुने हुए कवाब भी खाते जाते हैं।

कल रात उन्होंने मुझे बुलाया था, कवाब खिलाए और मेरी कविताएं सुनी।

एक एक्टर ने मेरी कविताओं का अनुवाद इतनी अच्छी तरह पढ़ा कि यह शाम हमेशा  
मुझे याद रहेगी।

31.8.67

**तुम्हारी माजा**

## खत अमृता का

जीती जान,

कल पहली तारीख को दोपहर के एक बजे के प्लेन से हंगरी आ गई हूं।

बैलग्रेड की चमक-दमक के बाद हंगरी की प्राचीन और समय की धूल से मैली इमारतें बहुत चुप और उदास लगती हैं।

कल शाम को पांच बजे पी.ई.एन. लेखकों की एक मीटिंग थी, उन्होंने बुलाया था।

वहां बहुत सारे लेखक मिल गए, मिस्टर हुब्बा भी, जो कभी हमारे घर पर दिल्ली में हमसे मिले थे और भी कितने ही कवि बड़े अपनेपन से मिले।

31 तारीख को बैलेग्रेड में अचानक मुझे पूर्वी अफ्रीका के एक कवि जंबेरी ने फोन किया, जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। यह तारीख उसने ‘ब्लैक रोज़’ में पढ़ी थी। और बहुत सारे फूल होटल के रिसेप्शन-रूम में आकर दिए।

कलम की शाखाएं देखो, कहां तक पहुंच जाती हैं।

उस दिन दोपहर तक शॉपिंग की थी। तुम्हारे लिए एक ट्रांजिस्टर और एक यूगोस्लाव कढ़ाई की नैशनल कमीज़ खरीदी। सैली के लिए कुछ रिकॉर्ड और कंदला के लिए एक ज़ीन और एक नेशनल कढ़ाई वाला जीन टॉप।

यहां अजीब कीमतें हैं, ट्रांजिस्टर बहुत सस्ते हैं। कमीज़ से सस्ते।

दोपहर से लेकर रात तक बैलग्रेड से कोई सवा सौ किलोमीटर दूर उस शहर गई थी, जहां 1944 में जर्मन फौज ने शहर का एक-एक जीव (पूरे सात हजार) एक ही दिन में कत्ल कर दिया था।

‘खून की कथा’ कविता, जो हमने ‘नागमणि’ में छापी थी, इसी शहर के बच्चों के बारे में है।

मरे हुए बच्चों की याद में यहां पत्थर के दो मरोड़े हुए पंख बनाए हुए हैं, बच्चों की टूटी हुई उड़ान के प्रतीक।

यह लगभग 18 गज़ चौड़े और धरती से 10 गज़ ऊंचे हवा में खड़े हैं। पत्थरों पर बच्चों के छोटे-छोटे चेहरे अंकित हैं।

संग्रहालय में उनकी कुछ कॉपियां संभालकर रखी हुई हैं जिन पर ज्यामिति के प्रश्न हल किए हुए हैं, और बच्चों के नाम लिख हुए हैं – दरागी, कक्षा 7, शीलिया, कक्षा 6...

सात हजार मृतकों के प्रतीक के रूप में दो सफेद बुत बनाए गए हैं, एक मर्द का और एक औरत का।

ये मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं। पत्थरों में पीड़ा रेखांकित की हुई, मैंने कभी ऐसी नहीं देखी थी।

यूगोस्लाविया की मूर्तिकला बहुत एडवांस्ड लगती है। कल सवेरे आने से पहले बैलग्रेड का संग्रहालय भी देखा था, पिकासो की पेंटिंग की नुमाइश भी।

मैक्सीकन आर्ट की नुमाइश भी इन दिनों वहां हो रही थी, वह भी देखी।

यह आर्ट मनुष्यों और जानवरों के आकार को अजीब तरह से मिलाकर पेश करता है।

हर जगह तुम्हें याद किया। ये सब चीजें तुम्हारे देखने योग्य हैं।

यूगोस्लाविया की एक औरत आर्टिस्ट जर्मनों के कॉन्सटेंशन कैम्प में रही थी। वह अभी जीवित है। उससे मिल नहीं सकी। वक्त नहीं था, पर उसके बनाए हुए बुत देखे।

लोहे और पत्थर से बनाई हुई उसकी सैलफ-पोर्टेट भी, दर्द की लोहे में उतारी हुई तस्वीर।

यूगोस्लाविया के लोग (उस शहर के जहां जर्मनों ने सात हज़ार लोग मारे थे) मुझे 21 अक्टूबर को फिर बुला रहे हैं, एक हफ्ते के लिए और वह कविता पढ़ने के लिए, जो मैंने ‘नागमणि’ में छापी थी। (खून की कथा का अनुवाद)।

पर लौटकर जाना बहुत मुश्किल है।

खैर देखूँगी...

तुक्हारी  
माजा

## खत अमृता का

ओ, मेरे जीती,

कल सवेरा होते ही तुम्हारा 31 तारीख का लिखा हुआ ऐसा खत मिला, ऐसा अगर एक जन्म में न मिल सकता हो, तो उसे पाने के लिए दूसरा जन्म भी लिया जा सकता है।

तुम मेरे 31 अगस्त भी और हर बरस के 365 दिन भी।

ऐसा खत पढ़कर वर्तमान के उबले हुए अंडे में से भी कोई भविष्य जन्म ले सकता है।

‘नागमणि’ का नया अंक हँगरी में मिल गया था।

यह पहली बार है, जब मैंने ‘नागमणि’ को एक दूर बसने वाले पाठक की तरह एक-एक पृष्ठ पलटकर देखा है।

टाइटल बहुत प्यारा है। सिर्फ प्रूफ की गलतियां बहुत हैं। आरबरिद से मैंने एक आर्टिकल भेजा था, भातरूँगा में हुए कविताओं के मेले के बारे में। वह संभालकर रखना, अभी मत छापना। बैलग्रेड में भी एक आर्टिकल लिखा है। सब कुछ एक अंक में छापेंगे, तस्वीरों के साथ।

मैं यहां से 22 तारीख को रोमानिया जाऊंगी। वहां से अगले महीने की 12 को सोफिया, फिर 20 तारीख को जर्मनी।

कल 8 तारीख को यहां से चार दिन के लिए एक झील के किनारे जाना है। वहां कोई आरामगाह है।

हंगरी देश पहली नज़ार में उदास और मैला लगता है, लेकिन यह अपनी खूबसूरती को धीरे धीरे दिखाता है, जल्दी नहीं करता।

रात को डैन्यूब दरिया के किनारे पर बिजलियों से झिलमिलाता हुआ बुदापेस्ट बहुत खूबसूरत लगता है।

यहां मिस्टर नेथन के साथ मिलकर हिन्दी कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाले मिश्रा जी भी आए हुए हैं, दो साल के लिए अमरीका जा रहे हैं। इसी मेरे वाले होटल में ठहरे हैं। गंगा जल भी साथ लाए हैं।

कल मैंने अपनी कविता की एक पंक्ति उनको सुनाई थी, ‘गंगाजल से लेकर वोदका तक, यह सफरनामा है मेरी प्यास का...’

7.9.67

तुम्हारी  
माजा

## खत इमरीज़ का

मेरी शायरा,

तुम किसी एक धरती, किसी एक देश, किसी एक जबान या किसी एक कौम को बिलोंग नहीं करती।

तुम ‘बिलोंग’ करती हो उस धरती को, जहां धरती दिल की तरह विशाल होती है और जज़बात से महकती है।

तुम ‘बिलोंग’ करती हो हर उस देश को, जहां अदब और कल्चर रात-दिन बढ़ते हैं, हर तरह की हदबंदी से मुक्त।

तुम ‘बिलोंग’ करती हो हर उस ज़बान को, जहां दिलों को सुनना भी आता है, देखना भी और पहचानना भी।

तुम ‘बिलोंग’ करती हो हर उस कौम को, जिसके लोग किसी भी अतीत में नहीं जीते, निरे पूरे आज में जीते हैं और आज की तरह ही अपने आप के साथ जीते जागते हैं, और एक-दूसरे के साथ बसते हैं।

तुम ‘बिलोंग’ करती हो, हर उस रात और हर उस दिन को, जहां हर रात एक नई कृति के ख्याल को कोख में डालकर सोती है और जहां हर सवेरा एक नया गीत गुनगुनाते हुए दिन की सीढ़ियां चढ़ता है।

माजा, तुम्हें रोमानिया भी जाना है और वैस्ट जर्मनी भी, जहां लोग तुम्हें अदब और प्यार से बुला रहे हैं, वो तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं।

माजा, तुम मुझसे मिलने को वहां बेकरार हो और मैं तुमसे मिलने के लिए यहां। इसी बेकरारी के अव्याम में मैं तुम्हें वहां, हर जगह, हर मुल्क, हर शहर और हर महफिल में मिलूंगा। जहां भी तुम होगी, मैं वहां ज़रूर होऊंगा।

इकरार की हद से इधर अब कोई हद नहीं रही।

इन मुल्कों की सब ज़बानों में अब मेरे नए नाम होंगे, जो शायद तुम्हें बोलने में मुश्किल लगें, लेकिन जिन्हें पहचानना बिल्कुल मुश्किल नहीं होगा।

हर नई इमारत में मेरी सूरत और हर पुराने गिरजाघर में तुम मेरे कदमों के निशान पहचान लोगी।

हर फूल में मेरा रंग और हर हवा में मेरी महक पाओगी।

हर झील से मेरी गहराई और हर दरिया से मेरी रवानी को जान लोगी।

हर नज्म के नए ख्याल से और हर गीत की धड़कती हुई लय से मैं तुम्हारी तरफ बार-बार देखूंगा।

माजा, मैं तुम्हें कभी थकने नहीं दूंगा।

हर सुबह एक नया हौसला बनकर मैं तुम्हारी आँखों में जागूंगा और जीने की एक रौ बनकर मैं दिन के वक्त तुम्हारे पैरों में चलूंगा॥

शायरा, तुम्हें तेहरान भी जाना है। फारसी की अमीर तरीन शायरी के घर। उमर ख्याम और उसकी रुबाइयों से जीते-जागते और महकते हुए मुल्क में।

तुम जब किसी पर्शियन आर्च में खड़ी उमर ख्याम के बारे में सोच रही होगी, मैं उस वक्त उमर ख्याम की रुबाइयों में एक और रुबाई को मिलते हुए देख रहा होऊंगा।

ओ, मेरी आरबरिद झील<sup>1</sup>

तुम क्या जानो कि यहां एक समुद्र तुम्हारे सामने है।

2.9.67

**जीती**

- 
1. आरबरिद झील : यूगोस्लाविया के दक्षिण की वह झील, जहां शायरी के जश्न के लिए गए शायर ठहरते हैं।

## खत इमरीज़ का

माजा,

तुम्हारे खत के इंतजार में सोच रहा हूं कि मैं एक साज़ हूं।

दिन आता है, तो मेरे तार को.... एक-एक तार को जगाता है और चला जाता है।

पर रात की महफिल में कोई गीत नहीं जागता.... नहीं जीता।

मैं तीस दिनों से यह जुल्म जी रहा हूं, एक साज़ की शक्ल में, खामोशी का।

एक पूरब की शक्ल में... एक गीत के न होने का।

एक दिन की शक्ल में... एक खड़ी हुई जिंदगी का।

ओ, मेरे सूरज, तुम पच्छिम से कब लौटोगे? तुम्हें क्या पता कि यहां एक महीना हो गया है। एक भी दिन नहीं चढ़ा, एक लंबी रात चल रही है, तीन महीने लम्बी रात!

अभी तुम्हारा खत आया है। हंगरी के नीले आसमानी रंग के कागजों से जैसे एक सूरज निकला हो....

9.9.67

तुम्हारा  
जीती

## खत इमरीज़ का

माजा,

एक सूरज आसमान पर चढ़ता है, आम सूरज, सारी धरती के लिए। साझे का सूरज, जिसकी रोशनी से धरती पर सब कुछ दिखाई देता है, जिसकी तपिश से सब कुछ जीता है, जन्मता है और फलता है, लेकिन एक सूरज धरती पर भी उगता है, खास सूरज, एक मन की धरती के लिए। सिर्फ एक मन के लिए, सारे का सारा।

इससे एक बात, एक रिश्ता बन जाती है, एक ख्याल, एक रचना और एक सपना, एक हक्कीकत। इस सूरज का रूप इंसान का होता है। इंसान के रूपों की तरह इसके भी कई रूप हो सकते हैं।

आमतौर पर यह सूरज एक ही धरती के लिए होता है, लेकिन कभी-कभी आसमान के सूरज की तरह आम भी हो जाता है, सबके लिए, तब यह देवता, गुरु या पैगम्बर के रूप में आता है।

मैंने इस सूरज को पहली बार एक लेखिका के रूप में देखा है, एक शायरा के रूप में। किस्मत कह लो या संयोग, मैंने इसे हूंडकर अपना लिया है, एक औरत के रूप में, एक दोस्त के रूप में, एक आर्टिस्ट के रूप में और एक महबूबा को रूप में।

13.9.67

जीती

## खत अमृता का

जीती,

आज सवेरे इंडियन एम्बेसेडर ने अपने घर बुलाया था।

कल एयरपोर्ट पर भी किसी को भेजा था, ग्रीट करने के लिए।

इस समय मेरे कमरे में दो देशों के बड़े लाल-लाल फूल सजे हुए हैं, एक यूगोस्लाविया से विदा होने के मौके पर और दूसरे हंगरी के स्वागत के अवसर पर।

हंगरी में अच्छी चाय नहीं मिलती, कॉफी अच्छी है, पर चाय कड़वी, बेस्वाद और लिसलिसी भी।

आज इंडियन एम्बेसी ने मुझे हिन्दुस्तानी चाय का एक बड़ा पैकेट दिया है।

रोमानिया से बुलावा आ गया है।

लगभग 21 तारीख को रोमानिया जाऊंगी। 15 अक्टूबर तक वहां रह कर फिर बलगारिया और फिर जर्मनी।

रास्ते में कोई तीन दिन तेहरान और नवंबर के पहले हफ्ते में वापिस दिल्ली पहुंच जाऊंगी।

सच, जीती, फासिज़म के अर्थ हमारे हिन्दुस्तान में किसी की समझ में नहीं आ सकते। यूरोप ने इसे भुगता है। अभी तक हंगरी में शहरों की दीवारें बमों के धूएं से काली और छिली हुई हैं। मारे हुए लोगों के सिर्फ मॉनूमेंट रह गए हैं या कुछ तस्वीरें...

कैंडी और नागी<sup>1</sup> को मेरा प्यार

तुम्हारी माजा

---

1. कैंडी से तात्पर्य है कंदला और नागी से नागमणि।

## खत अमृता का

मेरे जीती,

तुम्हारे खतों में दोहरी भाक्ति है।

वो मुझे वहां भी बुलाते हैं और यहां भी ठहराते हैं।

सैली का कभी बड़ौदा से खत आया है या नहीं?

कंदला बेटी बहुत याद आती है।

अभी मेरी इंटरप्रेटर आई है। दफ्तर से तुम्हारा खत लाई है।

मेरी जान जीती, तुम्हारा हर खत मेरे होंठों पर ताजा सांस की तरह आता है...

16.9.67

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

मेरी नागी के कलाकार, हंगेरियन लेखक बहुत अच्छे लोग हैं।

बड़े सादा दिल, पाक नज़र दुनिया भर के साहित्य को जानने के लिए प्यासे।

तुम्हारी ‘नागमणि’ के अंक देख-देख अघाते नहीं।

रोज़ बारी-बारी से उनके घर जाती हूं। वो रोज़ बारी-बारी से मेरे होटल आते हैं।

मेरा कमरा नित्य ताज़ा फूलों से महकता रहता है। वो हाथ में फूल ज़रूर लाते हैं।

दो हंगेरियन कवियों की किताबें इस समय पेंगुइन सीरीज़ में छप रही हैं। लेखन में नए प्रयोगों के लिए अब ये आतुर हैं।

लगभग 10 साल इनकी कलमों पर बहुत सख्ती रही है। यह समय इन्होंने सांस रोककर काटा है, अब इनकी रचनाएं स्वीकार की जा रही हैं।

कल यहां का एक कवि केवल गिंसबर्ग की कविताएं मुझसे सुनने आया था। झूम रहा था और सोच रहा था कि अभी भी ये कविताएं क्यों उसके मुल्क में नहीं छप सकतीं।

आज अभी हंगरी से जाने के दिन तुम्हारे तीन खत एक साथ मिले हैं, 6 तारीख का, 12 का और 13 का।

मुझे लग रहा है कि आज तुम और मैं एक साथ रोमानिया जा रहे हैं।

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

कमाल है जीती,

रात को सवा दस बजे रोमानिया पहुंची थी। एयरपोर्ट पर इंडियन एम्बेसी की ओर से भी गाड़ी आई हुई थी।

संदेश मिला.... सवेरे किसी समय मैं एम्बेसी आऊं।

सवेरे चाय पीकर गई, तो जाते ही तुम्हारे दो खत मिले, जैसे तुम मुझसे भी पहले मुझे लेने के लिए यहां रोमानिया पहुंच गए थे।

तुम्हारा होना हर फ़ासले से बेनियाज़ है। तुम्हारा होना राह भी है और मंज़िल भी। हँकीँकँत की तरह धरती पर एक जगह खड़ा भी है और कल्पना की तरह हर जगह, हर पसारे में भी॥

इस दुनिया में मुझे जहां भी, जो कुछ अच्छा लग रहा है, वह सब तुम्हारे होने के कारण। तुम्हारा होना इसकी पृष्ठभूमि, तुम्हारा होना इसका क्षितिज।

एम्बेसी से तुम्हारे खत लेने के बाद अपनी इन्टरप्रेटर के साथ दफ्तर की गाड़ी में घूमकर शहर देखा। पांच मंज़िल, नौ मंज़िल, ग्यारह मंज़िल की इमारतों का हर बरामदा फूलों से भरा हुआ। चौक बुतों से सजे हुए। सड़कों के बीच की पटरियां फूलों से लाल-हरी लकीरें बनाती हुई। बड़ा मनोरम शहर है। शहर में कितने ही बाग और झीले हैं।

डेढ़ बजे राइटर्स यूनियन का बुलावा था। तुम्हें शायद ज़हरिया स्टांकों का नाम याद हो, जिनके नॉवल 'बेयर फुट' के संबंध में बहुत समय हुआ अपने एक लेख में मैंने उनका

उल्लेख किया था, वह मुझे एशियन राइटर्स सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली में मिले थे। यहां वह यूनियन के प्रेसिडेंट हैं।

दोपहर का खाना उनके साथ खाना था।

कुछ रूसी-लेखक भी आए हुए थे। दो बजे खाना शुरू हुआ। पांच बजे खत्म हुआ। बहुत लंबे और शायराना टोस्ट दिए गए।

रूसी लोगों का एक टोस्ट था, शायरी, क्योंकि स्त्रीलिंग शब्द है, इसलिए अमृता को मिलने के बाद हम कह सकते हैं कि शायरी हिन्दुस्तान में पैदा हुई...

और कई टोस्ट थे।

मेरा टोस्ट था, हमारी ज़बान में साकी शब्द उसके लिए है, जो जाम भरे... (उस समय मेज़बान जहारिया स्टांको हम सबके गिलासों में वाइन डाल रहे थे), पर इस शब्द का अगर रोमानिया की ज़बान में तर्जुमा करें, तो बनता है-जहारिया स्टांको।

मेरी जान, जीती,

मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा टोस्ट, तुम्हारे होने का नाम...

23 सितम्बर, 1967, नार्थ होटल, बुखारेस्ट।

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

....,

जर्मनी का टिकट आज दोपहर तक भी इंडिया एम्बेसी में नहीं पहुंचा था।

जर्मन एम्बेसी ने बताया कि टिकट वहां से भेजा जा चुका है। उन्होंने केबल देकर टिकट का नंबर भी मालूम कर लिया है, लेकिन टिकट कहीं से भी नहीं मिल रहा था।

आखिर एक बूढ़े रोमानियन ने बताया कि हवाई जहाज़ के दफ्तर से मालूम करें, वह टिकट रख लेते हैं, पहुंचाते नहीं।

आज सारा दिन खपने के बाद पता चला कि टिकट हवाई जहाज़ के दफ्तर में पड़ा है।

यहां लोग बताते हैं, हमें अगर साठ दिनों में भी अपने दफ्तरों से खत का जवाब मिल जाए, तो हम अपने आपको खुशनसीब समझते हैं।

यह भी सोशलिज़्म है...

12 अक्टूबर, 1967

तुम्हारी  
माजा

## खत इमरीज़ का

माजा,

चारों ओर दुनिया एक ऐसी भीड़ दिखाई दे रही है, जो सच को जीते जी ही किसी गंगा में बहा आई हो, या कहीं दफन कर आई हो और अब इस सच की समाधि को, इस सच के मकबरे को, सब पूज रहे हों, सजदा कर रहे हों।

नज़र-नज़र में, बात-बात में, रिश्ते-रिश्ते में, एक-एक आदमी में इस समाधि की, इस मकबरे की परछाई दिखाई देती है।

कितनी अजीब बात है, इन्हें लाश स्वीकार है, लेकिन ज़िन्दगी नहीं।

कोई वक्त था, हम कोई रिश्ता बनाते वक्त, कोई काम करते वक्त, कोई व्यापार शुरू करते वक्त और कुछ भी करने लगते तो बिस्मिल्लाह कहा करते थे, लेकिन अब ‘कम्प्रोमाइज़ सुन रहे हैं, ये जानते हुए भी कि ‘कम्प्रोमाइज़’ कमज़ोरी और डर की पैदावार है...

ज़िन्दगी एक ऐसा फूल बनती जा रही है, जिस पर समय की धूल पड़ रही है, लेकिन नज़र की भाबनम नहीं।

9.10.67

जीती

## खत इमरीज़ का

माजा,

मैं अकेला बैठा तुम्हें सोच रहा हूं।

तुम वेस्ट जर्मनी पहुंच रही होगी...

मेरे ख्यालों का हिसाब सुनो—

वेस्ट जर्मनी जमा दस दिन, जमा अमृता बराबर है – एक हसीन सफर।

भोपी आज साड़ी पहन कर घर में ऐसे घूम रही है, जैसे किसी छोटी-सी चिड़िया को अचानक पंख मिल गए हों, जिसकी वजह से उससे टिका न जा रहा हो।

वह अपने ब्वाय फ्रैंड का इंतज़ार कर रही है। कभी पानी पीती है, कभी बरामदे से बाहर झांकती है, कभी कमरे में जाकर शीशे में, जैसे अपना आप घड़ी-घड़ी देखना पड़ रहा हो, पंखों समेत।

सो आज का हिसाब है –

जवानी, जमा पंख, जमा सपने, जमा इंतज़ार, बराबर है – एक मैडनेस।

खतों के ज़रिये बातें करने की यह लड़ी आज आखिरी है।

जब तुम्हें यह खत मिलेगा, तुम वापसी की तैयारी कर रही होगी।

मैं मोमबत्तियां रखकर दीवाली का इंतजार करूँगा, अपनी दीवाली का, जो लोगों की पहली तारीख की दीवाली के तीन दिन बाद आएगी।

तुम्हारे आने के साथ ही ये मोमबत्तियां जल उठेगी, यह घर जगमग कर उठेगा, मैं जाग उतूंगा, मेरा 'होना' जगमगाएगा।

21.10.67

**जीती**

## खत अमृता का

मेरे इमरोज़,

आज मेरे हाथ से मेरी कलम छूट गई। शायद आज वह मेरे एक सौ चालीस लाख पंजाबियों के घर-घर जाकर कुछ पूछने कुछ बताने चली गई है।

आज मैं रोमानिया की उस लाइब्रेरी में बैठी थी, जिसका नाम है, बी.पी.टी. (यह ब्रिब्लोपिका पैनतर्ल तोतास का संक्षेप, है और इसका अर्थ है, 'हर मनुष्य लाइब्रेरी।')

इस लाइब्रेरी में प्रकाशक हर सप्ताह एक किताब छापते हैं। हर किताब के 400 से 500 सफे होते हैं और हर किताब का पहला संस्करण 75,000 का होता है और हर किताब के कई संस्करण छपते हैं, किसी-किसी के बीस संस्करण भी।

यह हर सप्ताह छपने वाली किताब कभी किसी रोमानियन लेखक की लिखी हुई होती है और कभी किसी परदेसी किताब का तर्जुमा।

पर यह सारे प्रकाशन का एक हिस्सा है, देसी और परदेसी साहित्य को छापने वाला। अगर इसके साथ केवल देसी साहित्य के प्रकाशन को भी लिया जाए, तो हिसाब बनता है, हर डेढ़ दिन बाद एक किताब का प्रकाशन।

1931 की बात है मुल्क में बहुत बड़े एक शायर की एक किताब छपी थी, जिसकी गिनती सिर्फ 500 कॉपियां थीं।

चौदह साल बीत जाने के बाद किसी को उस किताब की ज़रूरत पड़ी। उसने खरीदी तो पता चला कि अभी तक वे 500 कॉपियां भी पूरी नहीं बिकी थीं।

पर 1963 चढ़ा, तो जैसे लोगों को उस किताब की प्यास लगी।

उसी साल उस किताब का दूसरा संस्करण छपा 6,000 और छपने के 24 घंटे बाद उस किताब की एक कॉपी भी मिलना मुश्किल हो गई और फिर उसी किताब का एक और संस्करण छापा गया बीस हजार का और अब उसी किताब का एक नया संस्करण छपा है, अस्सी हजार।

यह सब मेरे सपनों से बाहर नहीं, पर समझ से बाहर ज़रूर है। पता नहीं ऐसे सपने समझ से बाहर क्यों होते हैं...

‘1934 में यह सपना हमारी समझ से बाहर था।’ ये लोग कहते हैं और बताते हैं। अब हर रोमानियन पहली तारीख को तनख्वाह लेकर सबसे पहले किताबों की दुकान पर जाता है।

इस साल किताबों की मांग लोगों की गिनती पर पूरी नहीं उतरी, इसलिए अगले साल से हर सप्ताह में एक किताब छापने की जगह दो किताबें छाप रहे हैं। (महंगी किताबें भी छपती हैं, अस्सी या सौ लई तक की कीमत की, पर हर सप्ताह छपने वाली किताब की कीमत सिर्फ पांच लई होती है।)

‘सपने समझ की सीमा में किस तरह आते हैं।’

शायद यही बात अपने लोगों से पूछने और बताने के लिए आज मेरी कलम मेरे हाथ से छूट गई है और मुझे रोमानिया में बैठी को लग रहा है कि वह इस समय हैरान और परेशान पंजाब की गलियों में भटक रही है...

नार्थ होटल, बुखारेस्ट, 26.9.1967

**तुम्हारी माजा**

## खत अमृता का

जीती,

‘या अल्लाह, गौड़ो से आगे भी कुछ है!'

कहते हैं, एक ब्राह्मण-भोज की पूरियां और खीर से लदी थालियों को देखकर एक गैर हिन्दू का मन ललचा गया और उसने उस भोज में शामिल होना चाहा।

एक दोस्त ने सलाह दी कि वह धोती-कुर्ता पहनकर चुपचाप पंक्ति में बैठ जाए। अगर किसी ने सवाल किया कि वह कौन है, तो कह दे कि हिन्दू है।

अगला सवाल यह भी हो सकता है कि वह कौन हिन्दू है? सो उसने वह जवाब भी रट लिया कि वह गौड़ हिन्दू है।

पर जब वह पंक्ति में बैठ गया, तो उसके बैठने के अंदाज़ से किसी को भाक हो गया। सवाल किया गया, ‘भई, तुम कौन हो?’

उसने तपाक से जवाब दिया, ‘मैं हिन्दू हूं।’ फिर अगला सवाल हुआ, ‘कौन हिन्दू?’ उसने रटा-रटाया जवाब दिया, ‘गौड़ हिन्दू। जवाब तसल्लीबरखा नहीं लगा। इसलिए सवाल किया गया, ‘कौन गौड़?’

अब वह घबरा गया और उसके मुँह से अचानक निकल गया, ‘या अल्लाह गौड़ के आगे भी कुछ है?’

मेरे इमरोज़?

कल रोमानिया के प्रकाशन हाउस में जाकर हर डेढ़ दिन बाद एक किताब के प्रकाशन का जो हिसाब देखा था, तो आज पता चला कि वह सिर्फ एक प्रकाशन हाउस का हिसाब है।

आज यूनिवर्सल पब्लिकेशन हाऊस में जाकर देखा है, दो सौ लाख की आबादी के इस छोटे से देश में हर साल आठ हज़ार नई किताबें छपती हैं, प्रति व्यक्ति चार किताबें।

यह सारा प्रकाशन कई सिरलेखों में बंटा हुआ है – पोहज़ी (पोयट्री), समकालीन-असमकालीन क्लासिक्स, आज की कथा-कहानी, साहित्य की तवारीख, नाट्य-कला, रिसर्च, समालोचना इत्यादि।

दुनिया भर के साहित्य का इन्होंने अपनी ज़बान में तर्जुमा किया है। कोई तीस किताबें अमरीकन साहित्य से, तीस लैटिन अमरीका के साहित्य से, तीस सोवियत साहित्य से, तीस फ्रांसीसी साहित्य से, पच्चीस अंग्रेजी साहित्य से, पन्द्रह जर्मन साहित्य से, पन्द्रह इतालवी साहित्य से, भारतीय साहित्य से महाभारत, रामायण और उपनिषदों के कुछ हिस्सों के अलावा इन्होंने कालिदास और टैगोर की कई रचानाएं भी प्रकाशित की हैं।

आज के साहित्य से यह प्रेमचंद, आर.के. नारायण, यशपाल, रेणू, शिवशंकर पिल्ले, राजाराव और राजेन्द्र यादव की कुछ पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं, कुछ कर रहे हैं।

शेक्सपीयर के बारे में हर मुल्क के विचार, अमरीका में मानववाद, लैटिन साहित्य की तवारीख, उत्तरी अमरीकन साहित्य की तवारीख, आज के साहित्य की तवारीख आदि मुश्किल और महंगी किताबें भी दस-बारह हजार की गिनती में छपती हैं।

या अल्लाह! आज इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा जा रहा। सिर्फ चमड़े की और सिल्क की जिल्दों में बंधी हुई इन किताबों को अपने हाथ से बार-बार छू रही हूं, जैसे एक सपने को छूकर देखने का यत्न कर रही हूं।

27 सितम्बर, 1967, बुखारेस्ट।

तुम्हारी  
अमृता

---

शीर्षकों (विधाओं)।

## खत अमृता का

प्यारे इमरोज़,

एक परेशानी-सी हुई। 21 अक्टूबर को यूगोस्लाविया के एक शहर करागूयेवाच में जर्मन फौजों ने 7000 लोग कल्प किए थे।

मैं अगस्त का महीना यूगोस्लाविया में गुजार आई थी, लेकिन करागूयेवाच के लोगों ने 21 अक्टूबर को मुझे फिर आने का बुलावा दिया है।

300 मरे हुए बच्चों की याद में यूगोस्लाव शायरा डीसाकां मेक्सीमोटिच ने जो नज़म लिखी थी, उसका पंजाबी तर्जुमा वो उस दिन मुझसे सुनना चाहते थे।

देश-देश घूमते ढाई महीने हो गए हैं। इसलिए इस बुलावे को किसी और साल पर टाल कर मैं यूगोस्लाविया जाने की जगह पर जर्मनी आ गई हूं। अजीब इत्तिफ़ाक है कि जर्मनी पहुंचने की तारीख भी वही है, 21 अक्टूबर।

पूर्वी यूरोप के कई देश देखे हैं, पर पश्चिमी यूरोप में आने का यह पहला मौका है। इसलिए आना चाहती थी, पर एक अजीब बेचैनी थी। इस तारीख में वहां नहीं गई, जहां तीन सौ बच्चे मारे गए थे। वहां आई हूं, जहां की फौजों ने उन बच्चों को मारा था।

उसी तारीख फ्रैंकफर्ट में एक लेखक हाइनरिख बाउल को जर्मनी का गबोरग अवार्ड मिला था और उसी समागम में शामिल होने का मुझे बुलावा था।

शामिल तो हुई, लेकिन मन की रौ मेरे साथ चलने से, मेरे साथ बैठने से इनकारती रही, फिर हाइनरिख बाउल की जवाबी तकरीर ने मेरी मदद की।

उसने कहा—यहां आप लोग मुझे इंसानी जज्बात की पैरवी करने के लिए सम्मानित कर रहे हैं, पर यह सम्मान लेते हुए मुझे खुशी नहीं। यहां से कुछ दूर वियतनाम पर बम गिर रहे हैं और मैं कुछ नहीं कर सकता...

राजनीति की दुनिया और होती है और इंसानियत की दुनिया और, सोच सकती थी, फिर भी सबसे पहले जिस जर्मन लेखक से मिली, सवाल किया, ‘उस समय, हिटलर के दिनों में लेखकों का क्या हाल हुआ होगा?’

‘तीन बातें सामने थीं, मौत, जलावतनी और खामोशी, चौथी बात कोई सामने नहीं थी?

जर्मन नॉवलिस्ट डरडगेज़र मुस्काराया और कहने लगा, ‘सिर्फ तब नहीं, उससे दस साल बाद तक भी तीन हालात थे।’

‘एक हालत बिल्कुल बेजान होने की थी।’ ‘एक बची हिम्मत को फिर से हड्डियों में डालकर जीने की कोशिश और सारी दुनिया से टूट गए तार को फिर से जोड़ने के प्रयत्न में इस सोच की कि यह सब कुछ कैसे हुआ और क्यों हुआ?’

‘कार्ल मार्क्स यहीं पैदा हुआ था, मुझे तवारीखी इमारतों और नकशों को दिखाते हुए वैरंड दावी ने कहा, ‘उससे भी पहले उसकी थ्योरी को गेवोरग बाअशनर ने लोगों तक पहुंचाया था। वह 23 साल का मर गया था...

अगर कहीं वह जीता रहता...

और फ्रैंकफर्ट में गेटे का घर और स्टुटगार्ट में शिलर का घर देखते हुए सोच रही थी, इस धरती ने इतने फिलॉस्फर पैदा किए..पर... और मेरी दुभाषिया मिसेज़ मूलर ने मुस्कुरा कर कहा, ‘हिटलर ऑस्ट्रियन था जर्मन नहीं।

और फ्रैंकफर्ट में कहे दावी के लफ्ज़ कानों में बिलख पड़े, पर उस समय को माफ़ नहीं किया जा सकता। उसे लोग भी भुगतते हैं और साहित्यकार भी।

हमारे दार्शनिक अडोरनो का कहना है, ‘जिस ज़बान के लोगों ने दुनिया में इतना क्रत्त्व मचाया है...उस ज़बान में अब कोई कहानी या नज़्म नहीं लिखी जा सकती.

अब मैं परेशान नहीं, एक अजीब-सा चैन है। इसलिए कह सकती हूं कि जिस भाषा में ऐसी सोच है, चेतना है, उस भाषा में कुछ भी रचा जा सकता है।

26 अक्टूबर, 1967, स्टुटगार्ट।

अमृता

## खत अमृता का

जीती,

कल ब्रेख्ट का नाटक देखा था।

आज शाम की गाड़ी से म्यूनिख जाना था।

तेहरान का बुलावा मिला है, पर अभी तक वीज़ा नहीं मिला।

रोम से तेहरान के लिए प्लेन का कनेक्शन भी नहीं मिल रहा।

अगर तेहरान न गई, तो बहुत जल्दी वापस आ जाऊँगी।

मेरे इमरोज़,

इस वक्त रात के ग्यारह बजे हैं। कल ठीक इसी वक्त तेहरान पहुंचूँगी। यहां म्यूनिख से वापस फ्रैंकफर्ट, फिर वहां से तेहरान की सीधी फ्लाइट मिल जाएगी।

म्यूनिख जर्मनी के दक्षिण में बवैरिया प्रांत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केंद्र है।

हिटलर का ट्रायल यहीं हुआ था। यहां के लोग हिटलर का नाम तक नहीं लेते। अगर उसकी बात करनी हो, तो मिस्टर एच कहकर ही काम चला लेते हैं।

ये दक्षिण के लोग उत्तर के लोगों से बहुत अलग स्वभाव के हैं। इनका स्वभाव जीवंत, सादा और मिलनसार है। उत्तरी हिस्से के लोगों को ये अपने साथ मिला नहीं सकते।

मेरी आज की शाम जर्मन लोक-गीतों में भीगी हुई थी, सात बजे से लेकर पौने ग्यारह बजे तक।

कोनिएक (Coghac) में भीगे हुए फल खाती रही और गीतों में भीगी हुई शाम का मज़ा लेती रही। इन गीतों में एक गीत था—

आज बवैरिया में परदेसी आए हैं  
अमरीका से आए हैं  
फ्रांस से आए हैंबर्लिन से आए हैं

सो बर्लिन से आए लोग भी इन लोगों के लिए, अमरीका या फ्रांस से आए लोगों की तरह परदेसी हैं।

जिस रेस्तरां में वह गीत सुन रही थी, वह देहाती वातावरण का खास रेस्तरां है।

यहां गाय के गले में बंधी घंटियों का संगीत सुनाया जाता है। कौमी लिबास पहने लड़कियों का नाच दिखाते हुए बीच-बीच में अजीब मज़ाक खेले जाते हैं।

लोग लकड़ी की सुराहियों से बीयर पीते हैं। सफेद सौसेज और कोनिएक में भीगे फल खाते, बराबर तालियों से, सीटियों से, लोक गीतों-की कुछ पंक्तियां दोहराते हुए एक्टरों का साथ देते रहते हैं। किसी वक्त बैरे कागज़ की मूछे भी हरेक को दे जाते हैं। लोग ये मूछे नाक से जोड़ लेते हैं और एक्टरों में शामिल हो जाते हैं।

आरंभ सादा व गम्भीर लोक-गीतों से हुआ—

शहर की दीवार के बाहर एक पेड़ है  
इस पेड़ के नीचे मैंने बहुत से गीत गढ़े हैं  
और इस पेड़ के नीचे मैंने बहुत से ख्वाब देखे हैं  
बर्फ से भीगी हवा बह रही है

मेरे सिर का पल्लू उड़ गया है।  
कहीं चैन नहीं, पर लोग कहते हैं—  
बहुत कहीं दूर एक पेड़ है, वहां चैन मिलता है  
मैं भी सोचता हूं, जो भी अपहुंच है, वही खूबसूरत है—

फिर ये गीत हल्के से हो गए –  
दोनों लड़कियां खूबसूरत हैं...  
पर एक बहुत ही हसीन है,  
खैर, मैं दूसरी से शादी करूँगा,  
क्योंकि उसके घर में पांच गाय ज़्यादा हैं।

और फिर लोग ज़िन्दगी के मजाक खेलने लगे। कुछ भी हो, लोक राजवाले देशों में  
लिखने और बोलने की जो स्वतंत्रता होती है, उसका कोई मुकाबला नहीं। ये मजाक कुछ  
इस प्रकार थे –

‘हमारी ट्रामों के किराये बढ़ गए हैं, पर कोई बात नहीं,  
हमारा मेयर कभी-कभी अपनी कार छोड़ कर एक इश्तहारबाजी  
की खातिर ट्राम में जाता है  
पिछली बार उसने टिकट नहीं लिया  
मैं भी मेयर की तरह ट्राम की टिकट नहीं लूँगा।’  
‘इस बार हमारा चांसलर चुनाव में जीत नहीं सका,  
पर कोई बात नहीं  
अब वह अमरीका जाएगा और जॉनसन का बैरा बन जाएगा।’

‘हमारा फाइनेंस मिनिस्टर आजकल क्या कर रहा है?  
वह बहुत मसरूफ़ है।  
शाहे-ईरान को और उधार देने के लिए वह पैसे जमा कर रहा है।

‘अगर रूसी और अमरीकी लोग कभी स्पेस में मिलें, तो वहां कोई दुभाषिया नहीं  
होगा।’

वो बातें कैसे करेंगे?  
बड़ी आसान सी बात है,  
वे दोनों जर्मन ज़बान बोलेंगे।’

‘मैं मनचाहे गीत गाता हूं और नित नए गीत गढ़ता हूं  
मैं अपने मुल्क के प्रधानमंत्री की तरह गुलाम नहीं हूं।  
‘वह अपनी तकरीर का हर्फ पहले कागज पर लिखता है,  
फिर कागज को देख-देखकर बोलता है  
वह एक पंक्ति भी बढ़ा नहीं सकता,  
पर मैं अपने गीतों में नित नई पंक्ति बढ़ाता हूं।’  
कल दोपहर एक कन्सन्ट्रेशन कैम्प देखा,  
शहर से कोई बीस किलोमीटर दूर।  
कभी यह भयावह कांड यहीं हुआ था,  
1845 की अप्रैल 19 को 32335 यहूदी यहीं पर...

यह सिर्फ एक कैम्प की बात है। इस जैसे कितने कैम्प कितनी जगह...

सिर्फ मुझे ही नहीं... आज जर्मन लोगों को भी समझ में नहीं आता कि यह सब कुछ  
कैसे हुआ था, क्यों हुआ था...

कुछ और लोग भी यहां आए हुए थे। कुछ जर्मन लड़कियों की आंखें मैंने आंसुओं से  
भीगी हुई देखी थीं।

एक जर्मन लड़की ने मेरा हाथ पकड़ लिया था और पूछा, ‘आपका क्या ख्याल है कि  
हमारे लोगों ने यह जो कुछ किया था, कभी हमें इसका फल भुगतना पड़ेगा?’

आज वही देश है, पर ख्यालों के बिल्कुल नए कोण पर खड़ा है। शहर में बहुत बड़े-बड़े  
पोस्टर लगे हुए हैं –

‘जो कोई जॉनसन की वियतनाम में बरती जा रही नीति का समर्थक है, वह कातिलों में  
शामिल है।’

जाती इंसानी ताकत को हर जगह और हर वक्त किस तरह ज़िन्दगी के निर्माण के लिए  
इस्तेमाल किया जा सकता है। यह एक तवारीखी सवाल है।

किसी एक मुल्क की प्लॉसफी ने ज़िन्दगी से दूर रहकर इसका जवाब ढूँढना चाहा है, तो किसी मुल्क की प्लॉसफी ने हर सतह को खोलकर।

लेकिन अभी फ़लसफे भी भटक रहे हैं और कलमें भी।

इस तलाश में कभी पश्चिम पूर्व की ओर, तो कभी पूर्व पश्चिम की ओर। यह हर देश का सवाल है, पर जहां जितनी ज़्यादा चेतना है, यह उसकी सामर्थ्य पर निर्भर करता है।

जर्मनी के बारे में एक बात ज़रूर कह सकती हूं, यहां आम लोगों की यह चेतना बहुत तीखी है।

मेरी गाइड, लड़की भी बड़ी खूबसूरत और विचारवान है। उसने जब मेरे पास खड़े होकर आज बड़ी गहरी आँखों से वियतनाम के जलमां से भीगे उस पोस्टर को देखा और उसकी आँखें एक गहरी हमदर्दी में भीग गई, तो मुझे लगा, पोस्टर का हर हर्फ कुछ और हो गया है.....

28 अक्टूबर, 1967, म्यूनिख ।

तुम्हारी  
अमृता

## खत अमृता का

सच इमरोज़,

कभी अपनी किसी नज़्म को पढ़ने पर इस तरह लगता है, जैसे कोई अपनी नज़़ देख रहा हो।

यह किसी एक नज़्म के बारे में ही कहा जा सकता है।

नज़में कई होती हैं और कई... अपने ही हाथ-पैर, बांह या नाक-कान छूने के बराबर भी।

लेकिन बांह की नज़़ देखने के बराबर सिर्फ एक नज़्म होती है... और किसी का पता नहीं, पर मुझे इसी तरह लगता है...

तेहरान में बसते जिन पंजाबियों ने यूरोप से देश लौटती को कुछ दिनों के लिए यहां बुलाया है, उन्होंने आज शाम नज़में सुनना चाहीं... सुनाना थी, इसलिए सुनाई।

इससे पहले सिवाय किसी एक के, किसी ने भी मेरा कुछ पढ़ा हुआ नहीं था, सिर्फ नाम सुना था, इसलिए बुला लिया।

आज नज़में पढ़ने से पहले भी और पढ़ते हुए भी ऐसा लग रहा था कि खुद ही सब कुछ कहना-सुनना है, पढ़े जा रही थी। और वह भी वे नज़में, जो सुनना चाहती थीं। अगर खुद ही सुनना था, तो फिर वह क्यों नहीं, जो सुनना चाहती थी।

नज़में पांच-छह थीं, पर एक नज़्म पढ़ते यूं लगा, जैसे मैं अपनी बांह पर अपने दूसरे हाथ की उंगलियां रखकर अपनी नज़़ देख रही थी।

यह अचानक नहीं लगा, कल से पता था।

कल यहां एक ईरानी अमीर के घर दावत थी। शाह ईरान की ताजपोशी के सिलसिले में कई दिनों से ये दावतें चल रही हैं।

यह दावत एक ऐसे घर में थी, जहां मौसीकी के इश्क की रवायत ईरानी गलीचों की तरह बिछी हुई थी। अदबो-आदाब का एक खास माहौल था। गिटार के कांपते हुए स्वर थे (कांपते हुए नहीं कहूँगी) और फिर वहां ऐनी भी मिल गई, कुर्तुल ऐन हैदर। उसकी ठंडी सी दोस्ती मुझे हमेशा अच्छी लगती है, बर्फ में लगी व्हिस्की की तरह और इन सबको मिलाकर मुझमें एक अजीब-सा करार था। ऐसा करार जो शराब के धूट की तरह तलब भी लगाता है और खुमार भी देता है।

फिर मेज़ पर आए खाने की कई चीज़ों में एक चीज़ आई, तहेदेग।

पुलाव एक अलग प्लेट में, पर उसका निचला हिस्सा देग के बर्तन से सटा हुआ हिस्सा उतार कर प्लेट में डाला हुआ था। उसके नाम ने हौले से मुस्कराकर पूछा, जो मैं अपनी नज़्मों में से किसी नज़्म को तहेदेग कह सकू... वह कौन सी नज़्म है?

जवाब जैसे सवाल के बीच में ही था, कहीं बाहर नहीं गिटार के तारों में चुपचाप पड़ी गूंज की तरह, सिर्फ उस पर एक उंगली रखने की देर थी... टोस्ट... टोस्ट... मेरी वह नज़्म है, जो मेरी तहेदेग है।

आज कुछ और नज़्मों के पढ़ने के बाद फिर यही नज़्म पढ़ी और फिर इसके बाद कुछ और नहीं, क्योंकि इसके बाद मैं कुछ और पढ़ ही नहीं सकती थी।

अगर कुछ पढ़ सकती थी, तो फिर इसे ही पढ़ सकती थी, क्योंकि फिर से सिर्फ इसे ही सुन सकती थी, पर अपने सुनने का भार किसी दूसरे पर नहीं डाल सकती थी। इसलिए इसके बाद फिर कुछ नहीं पढ़ा।

अब सोने से पहले इसे मैं एक बार खुद पढ़ना और खुद ही सुनना चाहती हूँ।

इसलिए तुझे खत लिख रही हूं, नज़म भी लिख रही हूं।

‘मैंने कल रात शीशे की सुराही में  
ख्यालों की शराब भरी थी  
ख्याल बड़े सुर्ख थे  
दोस्तों ने जाम दिए थे  
और उन लफ़ज़ों के टोस्ट दिए थे,  
जो छाती में नहीं उगते,  
वो कौन से पेड़ पर उगते हैं  
और होंठों के गमलों में कैसे आते हैं,  
यह सोचने का वक्त नहीं था  
या ऐसे कहूं सोचने का सहम लगता है  
यह लफ़ज़ों का जश्न था  
गुलाबों की सालगिरह  
मैं थी, रात थी, ख्यालों की शराब थी और बहुत दोस्त...  
दोस्त, जो कुछ बुलाने पर आए थे, कुछ बिना बुलाए  
सिर्फ एक कोई ‘वह’ था,  
जो बहुत बार बुलाने पर भी नहीं आया था

अभी सुबह हुई है  
अभी मैंने एक घना जंगल देखा है  
और ग़रज़ों के पेड़ देखे हैं।  
उन पर आया अजीब पतझड़ भी,  
पतझड़, जो लफ़ज़ों पे नहीं आता, सिर्फ मायनों पर आता है।  
दोस्तों के लफ़ज़ अब भी गुलाबी हैं  
बहार के फूल की तरह  
सिर्फ मायने झ़ड़ते देख रही हूं  
और भरे जंगल में मैं बिल्कुल अकेली हूं

मैं हूं, एक किरन है और शीशे की खाली सुराही है

यह कैसी चुप है, जिसमें पैरों की आहट शामिल है  
कोई चुपचाप आया है

चुप से टूटा हुआ, चुप का हिस्सा

यह एक कोई 'वह' है, जो बहुत बार  
बुलाने पर भी नहीं आया था

और अब मैं अकेली नहीं, मैं अपने साथ खड़ी हूं

शीशे की सुराही में, मैंने नज़रों की शराब भरी है  
और हम दोनों जाम पी रहे हैं।

वह टोस्ट दे रहा है, उन लफ़ज़ों के,  
जो सिर्फ छाती में उगते हैं

यह मायनों का जश्न है—

मैं हूं, वह है, और शीशे की सुराही में नज़रों की शराब है।

मैंने अभी कहा था कि इस नज़म को मैं एक बार खुद ही पढ़ना और खुद ही सुनना चाहती हूं।

इसका यह मतलब नहीं कि यह तेरे तक उस तरह नहीं पहुंच सकती, जिस तरह मेरे तक सिर्फ यह कि इसे किसी तक भी पहुंचने की इस समय ज़रूरत नहीं, मेरे तक भी नहीं।

इसे इस समय सिर्फ अपने से अपने तक रखना चाहती हूं।

तुम्हें खत लिख रही हूं, नज़म भी, सिर्फ इसलिए कि इस 'मैं' को, जो इस आज की शक्ल में मैं है, यह शक्ल देने में 'तू' भी शामिल बहुत देर पहले के 'मैं' के पास, सोचती हूं, बहुत कुछ नहीं था, सिर्फ रहती उम्र के साल बहुत थे, पर आज के 'मैं' के पास चाहे रहती उम्र के साल बहुत कम रह गए हैं, पर और बहुत कुछ बढ़ गया है।

इस आज के ‘मैं’ के पास जो कुछ बढ़ा है, उसमें मिले कितने कुछ का कारण तेरा होना है। नज्म अब भी ‘मैं’ से ‘मैं’ तक ही रखी है।

सिर्फ मेरे दोस्त,

आई बैंक यू फॉर व्हाट यू आर।

2 नवम्बर, 1967, तेहरानतेरी।

अमृता

## संदर्भ

रोजी-रोटी के लिए इमरोज़ को दिल्ली छोड़कर कई बार बम्बई जाना पड़ता था, जो अपने आप में एक बनवास होता था। इमरोज़ वहाँ बम्बई में अकेले और अमृता यहाँ दिल्ली में। ये खत उन्हीं दिनों के हैं।

## खत इमरीज़ का

मेरी माजा,

यह दुनिया आज मुझे एक बहुत बड़े अखबार की तरह दिखाई दे रही है और हर शख्स इस दुनिया का अखबार के अलग-अलग लफ्ज़ की तरह है।

इस अखबार के हैंडिंग से लेकर हर प्रिंट लाइन तक सारे लफ्ज़ एक अजीब घबराहट से घिरे हुए खड़े हैं.... वह एकशन-रिएक्शन की अजीबो-गरीब भीड़ बन चुकी है।

अगर एक शब्द किसी शिखर की बात करता है, तो हज़ारों शब्द किसी अंधेरी खाई की डरावनी खबर बता रहे हैं।

अगर एक शब्द चांद पर पहुंचने का सपना पूरा कर रहा है, तो हज़ारों, लाखों, करोड़ों शब्द एटम बमों से हज़ारों-लाखों मील तक हज़ारों-लाखों सपनों की तबाही कर सकने के दावे कर रहे हैं।

अगर एक शब्द प्यार की बात करता हुआ अमृता प्रीतम बनता है, कविता बनता है, तो करोड़ों-अरबों शब्द नफरत या धृणा का प्रचार करते हैं। नफरत का ग्रंथ और नफरत का कुरान उठाए हुए फिर रहे हैं।

मेरा वश चले तो मैं इस अखबार के ये सारे-के-सारे शब्द मिटाकर एक शब्द लिख दूं  
सिर्फ एक शब्द, अमृता, जो देखते-देखते कविता बन जाए और फिर फैलकर सारी इबारत,  
एक सभ्यता पूर्व से पश्चिम तक।

6.12.1967, बनवास।

ਤੁਮਹਾਰਾ  
ਜੀਤੀ

## खत अमृता का

मेरे जीती,

बनवास में मैं भी शामिल हूं।

अपने जीती के बनवास में दिल्ली में रहकर भी शामिल हूं।

अभी जापान के एक उपन्यास की एक पंक्ति पढ़ी – Here in ley the loneliness implicit in his vitality.

यह पंक्ति जैसे बिल्कुल तुम्हारी बात कर रही है। अपनी ताकत की कीमत हमेशा अकेलेपन से चुकानी पड़ती है। पर गनीमत है, अब तुम्हारे अकेलेपन में मेरा अकेलापन शामिल है और मेरे अकेलेपन में तुम्हारा अकेलापन।

चुप से टूटे हुए चुप के एक टुकड़े की तरह किरन से टूटे हुए किरन के एक टुकड़े की तरह। आज बूंदाबांदी हो रही है। इसलिए शायद डाकखाने नहीं जाया जाएगा। एक-दो दिन में कुछ पैसे मनीऑर्डर करवा दूंगी।

कल शाम चैकोस्लोवाकिया के दो राइटर्स आए थे। ‘नागमणि’ का एक-एक अंक बड़ी हैरानी से देख रहे थे। हर अंक के डिज़ाइन की जब बात कर रहे थे तो लग रहा था, जैसे हर वाक्य में तुम्हारी बातें कर रहे हों।

मैं तुममें शामिल हूं, लेकिन जब तुम्हारे हुनर का ज़िक्र छिड़ता है, तुम्हारे हुनर को सलाम करने के लिए एक फासले पर भी खड़ी हो जाती हूं।

तुम्हारी माजा

## खत इमरीज़ का

आशी,

एक प्रोड्यूसर के पास बैठे बातें हो रही थीं, फिल्मों की।

कहानी से लेकर पेश करने तक की। बातों को जैसे अच्छी कहानी की प्यास लग गई हो, भूख लग गई हो और फिर यह प्यास, यह भूख कहानियों की तलाश में कहानियां ढूँढ़ने चल दी, और चलते-चलते अमृता के पास पहुंच गई, अमृता से ‘डॉ. देव’<sup>1</sup> तक, ‘डा. देव’ से ‘पिंजर’<sup>2</sup> तक, ‘चक न. छत्तीस’<sup>3</sup> तक।

प्रोड्यूसर सयाना भी लगता है और सूझबूझ वाला भी। उसने मुझे डिजाइन बनाने के लिए बुलाया था।

तुम्हारा नॉवल पढ़ लेने के बाद... कौन जाने... यह ‘कौन जाने अचानक मेरे भौक़ का पता बन जाए... और फिर यह पता... अपने सपने का पता बन जाए....

और मेरा बनवास मेरी अयोध्या बन जाए और मेरी ज़िन्दगी का एक-एक पल तुम्हारा रामराज्य हो जाए

9.12.1967, बनवास

जीती

---

<sup>1, 2, 3</sup> अमृता के नॉवलों के नाम हैं।

## खत इमरीज़ का

आशी,

शाम का समय था।

सूरज हौले-हौले समुद्र में उतरता दिखाई दे रहा था।

सारा महौल धुंधला-धुंधला, गुलाबी-गुलाबी, जैसे धीमे सुरों में दिन का अखिरी गीत गा रहा था। वह गीत, जो जब खत्म होता है, तो उसमें एक नया गीत जन्म लेता है और जीता है, आगे आने वाले नए गीत तक।

कार में मैं और बब्बन यह सब कुछ देखते, सुनते और सराहते हुए मीना कुमारी के घर की तरफ जा रहे थे।

जुहू की एक सड़क थी, खामोश, इर्द-गिर्द के नारियल के पेड़ों से घिरी हुई। शाम के सारे हुस्न से सजी और महकती हुई।

मीना का घर समुद्र के किनारे एक कॉटेज है। खामोश भी और सादा भी।

मीना हमें अपने कमरे में ले गई। बब्बन अपनी फिल्म के कुछ सीन उससे डिस्कस कर रहा था और मैं कमरे की हर चीज़ को देख रहा था, जांच रहा था।

हर चीज़ उसकी तबीयत की गवाही दे रही थी।

तुम्हारा एक नॉवल ‘पिंजर’ मीना ने पढ़ा है और उससे वह इतनी इम्प्रेस्ड है... फिदा होने तक इम्प्रेस्ड है।

अब सुबह का वक्त है।

मेरा जागना एक खत से दिन शुरू कर रहा है।

यह दिन एक जदोजहद से खत्म होता है।

खत तुम तक पहुंचाता है मुझे और जदोजहद अपने सपने की ओर...

11.12.1967, बनवास।

## खत इमरोज़ का

माजा,

कल का यह शहर एक डर में सांस ले रहा है।

आज भी इस शहर की कल की ही तरह डरी-डरी, सहमी-सहमी-सी हालत है।

लोग कल के ज़लज़ले (मूंकप) से डरे हुए अपने घर छोड़कर पार्कों में रात बिता रहे हैं।  
बहुत-सी ऊपर की मंज़िलें खाली हो चुकी हैं।

जहां इस शहर को सबसे ज़्यादा बिजली मिलती थी, वहां सब से ज़्यादा नुकसान हुआ है।

सारा कस्बा ढह गया है। शहर के सिनेमाघर, स्टूडियो, कारखाने, मिलें बिजली के बन्द होने से आधे बंद हैं।

लेकिन इंसान के अंदर की इंसानियत, जो दिनों-दिन ढहती जा रही है, किसी को नज़र नहीं आ रही है।

सिर्फ उसका ‘आज’ एक डर में सांस ले रहा है।

यह डर फ़िज़ा में फैल चुका है—

हर झूठ से लेकर हर सच तक

हर अजनबी से लेकर अपने तक

हर ज़फ़ा से लेकर वफ़ा तक

हर भूख से लेकर हर ऐश तक

हर कालिख से लेकर हर कला तक  
हर जंग से लेकर एक सुलह तक  
हर बरबादी से लेकर हर आबादी तक  
हर कैद से हर आज़ादी तक  
हर गुनाह से हर रूवाब तक  
हर शैतान से हर खुदा तक  
हर जहालत से हर इल्म तक  
इंसानियत की और तहज़ीब की इमारत पल-पल, ईंट-ईंट  
करके गिर रही है, जैसे नीचे बुनियादें ही खोखली हो गई हों।  
एहसास की बुनियाद, हुस्न की खूबसूरती की बुनियाद, बोलों  
की पाकीज़गी की बुनियाद,

माजा!

यह कैसी ट्रेजडी है कि आदमी धरती पर सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं पा रहा है।

चांद पर जाकर भी जैसे उसकी तलाश ही भटक गई है, नज़र से लेकर एहसास तक की

13.12.1967, बनवास

जीती

## खत इमरोज़ का

मेरी कौम, नया साल मुबारक!  
मेरी दोस्त, नया साल मुबारक!  
मेरी नज़र, नया साल मुबारक!  
मेरे नुक्ताए नज़र, नया साल मुबारक!  
मेरी कला, नया साल मुबारक!  
मेरे माहौल, नया साल मुबारक!  
मेरी पहचान, नया साल मुबारक!  
मेरे ईमान, नया साल मुबारक!  
मेरी हँकीँकँत, नया साल मुबारक!  
मेरे करिश्मे, नया साल मुबारक!  
मेरी माजा, नया साल मुबारक!  
मेरे खुदा, नया साल मुबारक!

चारों तरफ एक शोर मच गया है, चीखों जैसी खुशियों का शोर, जो एक धुंध की तरह हर तरफ फैल चुका है, पैरो से लेकर सिर तक, कदमों से लेकर सोच तक, झोपड़ी से लेकर स्काईस्क्रपर तक, मिट्टी से लेकर चांद-सितारों तक, नज़र से लेकर नुक्ताए नज़र तक, कायदे से लेकर कुरान, बाइबल और ग्रंथ तक और पहली सांस से लेकर ज़िन्दगी तक।

ज़िन्दगी की नज़म इस शोर में बिखरती जा रही है।  
हर नज़म काग़ज़ के सलीब पर टंगी हुई खामोशी लग रही है।  
हर तस्वीर कैनवास में फंसी हुई बेरंग दिखाई दे रही है।  
हर कला हमारे अंगों के खंडहर में दिन-ब-दिन दबती दिखाई दे रही है।

मैं इस शोर में खड़ा इसमें शामिल न होते हुए भी शामिल हूं। नया साल शुरू होने की आवाज़ सुन रहा हूं।

लेकिन यह आवाज़ किसी मुबारकबाद की नहीं। मेरे अन्दर से ‘मुबारक’ लफ़्ज़ अभी बाहर नहीं आ रहा। नए साल और ‘मुबारक’ में इस शोर का फासला है।

1.1.1968

**जीती**

## खत इमरीज़ का

माजा,

एक काली रात में मैं खड़ा अपनी राह खोज रहा हूं। राह, जो मेरे अपने पैरों में है।

एक वीरान शहर में खड़ा मैं अपना सपना ढूँढ़ रहा हूं। सपना, जो मेरे होने' में शामिल है।

एक खाली आसमान के सामने मैं खड़ा अपना तसव्वुर ढूँढ़ रहा हूं। तसव्वुर, जो मेरे ख्याल में है।

एक 'कल' नाम की बस्ती में मैं अपना आज ढूँढ़ रहा हूं। आज, जो मेरी नज़र में है।

लेकिन मैं बाहर क्या ढूँढ़ रहा हूं, कहां से और क्यों जहां कि मेरे अपने सिवा कुछ मेरा नहीं है।

4.1.68

जीती

## खत इमरीज़ का

.....,

एक राह, सारी और साबुत राह,  
आज अपने ही हर कदम से बिखरती जा रही है।

ओस की बूंद, हंसती, ताज़ा,  
आज अपनी ही आंख का आंसू बनती जा रही है।

एक जहान खुशबू का,  
आज अपने ही अंदर घिरा हुआ, जैसे धुंआ बनता जा रहा है।

एक इंकलाब, अपने आपमें मुकम्मल आज बेपहचान,  
अपने आप में मरता जा रहा है।

एक हुंकारा, विकास-दर-विकास का, मज़हब की तरह बेहुंकारा,  
अपने आप सिकुड़ता जा रहा है।

एक ख्याल, हर सांस के साथ नया,  
ईश्वर की तरह हर घड़ी बासी होता जा रहा है।

एक सवेरा, आज, बिन दोपहर,  
बिन महक ढलता जा रहा है।

एक नज़र, नुकताए नज़र जितनी,  
नज़रों की भीड़ में बेनज़र होती जा रही है।

एक फिकरा पूरे इल्म जितना, अकेला,  
अनजान खत्म होता जा रहा है।

7.1.1968

## खत इमरीज़ का

माजा,

एक आदमी मस्जिद के अहाते में शीशे में देखकर खुदा की तस्वीर बनाता हुआ पकड़ा गया। उसका सेल्फ पोर्ट्रट' फाड़कर उसके गले में डाल दिया गया और उसे उम्र-भर के लिए जलावतन कर दिया गया।

गिरजाघर के अंदर ईसा सलीब से उतरकर गुनगुनाता हुआ अपने कपड़े पहन रहा था और बाहर देख रहा था। बाहर दिन के उजाले में एक दुनिया सारे कपड़ों समेत अपने सलीब पर चढ़ी एकदम खामोश दिखाई दे रही थी।

जब से भगवान गंगा में बह गया है, लोगों ने मरने से इनकार कर दिया है

सिर्फ कभी-कभी तस्वीर की, किसी नज़म की या किसी कला की मौत की खबर सुनाई देती है।

8.1.68

जीती

## खत इमरीज़ का

माजा,

ज्यों-ज्यों मैं अपने आपकी तरह चलता जा रहा हूं, इस भरे शहर में हर सांस से और अकेला होता जा रहा हूं।

इस अकेलेपन में तुम्हारे दो खत भी आकर खड़े हो गए हैं।

कोई कमरा, कोई मकान अभी तक नहीं मिला। मैं यहां खानाबदोश की तरह इधर-उधर भटक रहा हूं।

जब मकान मिल भी जाएगा, मैं एक खानाबदोश की तरह ही उसमें रह रहा होऊंगा।

बसने के लिए एक धरती को खोजना बाकी है।

माजा,

तुम्हारे और मेरे जैसे लोग खोजना इन मकानों, इन शहरों, इन देशों में रहते हुए भी खानाबदोश हैं।

बसने के काबिल धरती की तलाश हमारी सोच, हमारे कृत्य और हमारे 'होने' में है।

यह तलाश ही हमारी खानाबदोशी है।

यह फिल्मी दुनिया एक अजीब अदृश्य चक्कर में सांस ले रही

उखड़ी-उखड़ी सांस और उखड़ी-उखड़ी ज़िन्दगी, इनसिक्योरिटी से लेकर बॉक्स ऑफिस तक, फेल होने से लेकर फेम तक।

डर का चक्कर इन्हें चकराए जा रहा है। इनकी नज़रों को, इनके विचारों को, इनके क़दमों को, इनकी मान्यताओं को और इनकी कृतियों को।

इस चकराई हुई हालत की पैदावार हम रोज़ देखते हैं, सुनते हैं, पढ़ते हैं।

बेसिर-पैर के विचार, बेसिर-पैर की कहानी, इस बेसिर-पैर सब कुछ के सिर-पैर मेरी तलाश है, तुम्हारी तलाश है।

इसी अधूरेपन के खिलाफ हमारी ‘रेज़िस्टेंस’ है।

इस रेजिस्टेंस’, इस तलाश इस संघर्ष का एक रूप ‘नागी’ है।

तुम्हारे शब्दों और मेरी लकीरों के संघर्ष का एक हुंकारा।

10.1.68

जीती

## खत इमरीज़ का

माजा,

कल का कैनवास एक रात की तरह आसमान के ईंज़ल पर उदास खड़ा है। रंग तारों की तरह बिखरे हुए अपनी राह खोज रहे हैं।

आज वक्त एक फ्रेम की तरह बेबस, अपनी प्रकृति के विरुद्ध, जैसे हर राह की हदबन्दी बना सिकुड़ता जा रहा है।

अब मैं और मेरा ब्रश, अपने पैरों में अपनी चाल और सिर में अपना चिंतन पकड़े हुए पल-पल थकते जा रहे हैं....

13.1.68

जीती

## खत इमरोज़ का

आशी,

यह कैसा शाप है, बहार अपने पत्तों के ज़रिये, फूलों के ज़रिये, ज़िन्दगी के पेड़ को एक दीमक की तरह खोखला करने लग पड़ी है।

14.1.68

जीती

## खत अमृता का

.....,

‘हाय ओ रब्बा, नहियों लगदा दिल मेरा!’

रेशमा के गले से होकर मेरी आवाज मेरे सारे सेहरा (रागिस्तान) में घूम रही है। अगर तुम्हारा शहर भी इस सेहरा में है, तो तुमने भी यह आवाज़ सुनी होगी....

‘काला गुलाब’ के प्रूफ मेरे सामने पड़े हैं, सेहरा में भटकती हुई मेरी आवाज़ का इतिहास....

सारा इतिहास नहीं... केवल कुछ कांड।

आगे के कांड अनलिखे, सब तुम्हारे पास हैं, मेरे पास और रेशमा के पास।

8.2.68

तुम्हारी  
ऐमी

## खत इमरोज़ का

मेरी ज़ोरबी, मेरी बाल कटी,

कल रात से मैं खलील जिब्रान से भरा हुआ हूं।

खलील जिब्रान, जिसने ग्यारह साल पहले ‘युगदृष्टा’ में पहली बार मेरे अंदर के मर्द को  
झकझोरा था, जगाया था, ललकारा था।

वह अपनी बात करते सबकी बात कर जाता है, बड़ी सादगी से, सहज भाव से...

Love is the only freedom in this world.

28.9.68

इमरोज़

## खत अमृता का

इमा,

इस बार  
ब्रश में  
होली का रंग  
भरकर लाना...  
तुम्हारे सफेद हाथों की कसम...

9.2.68

## खत अमृता का

मेरी जान जीती,

तुम्हारे बड़े प्यारे खत मिले, इतने की ज़िन्दगी में विश्वास आ जाए...

हर कदम पर इस विश्वास तोड़ने वाली दुनिया में तुम, तुम्हारा होना और तुम्हारे खत, ज़िन्दगी की रहमत हैं।

नहीं तो ज़िन्दगी की कहानी कितनी लंबी होती है, यह तुम्हें भी मालूम है और मुझे भी।

आज सवेरे ‘लैंगेज डिपार्टमेन्ट’ की ओर से मेरी किताब के लिए एक सौ पच्चीस रुपए का चैक मिला, जो उनके शब्दों में ‘इनाम’ है, मेरे अल्फाज़ में हिमाकत। यह हिमाकत मेज़ पर नहीं रख सकती, इसलिए 75 पैसे पास से खर्च करके रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा वापस भेज रही हूँ।

अब कमरा साफ़-साफ़, सुथरा-सुथरा लग रहा है। अब यहां सिर्फ तुम्हारे खत हैं और मेरी कविताएं।

कल शाम देविन्दर ‘स्क्रीन’ ले आया था, तुम्हारा डिज़ाइन दूर से ही मेरी आंखों ने पहचान लिया।

6.4.68

माजा

## खत अमृता का

जीती,

हम दीवानों का क्या कहना! दोपहर को सोई हुई थी कि दरवाजे पर खट-खट हुई। आंख खुल-सी गई, लेकिन यह सोचकर सो गई कि खुद जीती दरवाजा खोल देगा।

दरवाजे पर फिर खट-खट हुई। फिर जाग गई।

समझ में नहीं आ रहा था कि जीती, दरवाजा क्यों नहीं खोल रहा?

उठी और तुम्हारे कमरे की ओर गई कि जीती, दरवाजा क्यों नहीं खोला?

तो कमरा खाली था, कितनी ही देर बाद होश आया कि जीती बम्बई में है।

15 तारीख, इतवार को दोपहर के समय कंदला आ गई। तीन-चार छुट्टियां लेकर।<sup>1</sup> वैसे वह 19 तारीख को आने वाली थी। खत पढ़ कर आ गई कि मामा अकेली है।

आज दोपहर अचानक कुछ जापानी औरतें आईं, बाटिक देखने के लिए। पूरे 500 रुपए की चीजें खरीदकर ले गईं। इस समय मेरा बटुआ भरा हुआ है।

वैसे दिल भी भरा हुआ है...

पर तुम्हारी जोरबी हूं, तुम्हारे कामों की कसम उदास नहीं होऊंगी।

## तुम्हारी ज़ोरबी

1. कंदला चंडीगढ़ होस्टल में थी।

## खत अमृता का

जीती,

तुम जितनी सब्जी लेकर दे गए थे, वे खतम हो गई हैं।

जितने फल लेकर दे गए थे, वे भी खतम हो गए हैं।

फ्रिज खाली पड़ा है।

मेरी ज़िन्दगी भी खाली होती हुई लग रही है। तुम जितनी सांस छोड़ गए थे, वे खतम हो रही हैं।

जीता, मेरे इस ऊपर लिखे खत को लेकर दुःखी मत होना। रात के गहरे अंधेरे में लिखा था।

मैं उदास हूं, लेकिन जोरबी हूं, तुम्हारे काम का ख्याल आता है, तो अपने अकेलेपन को बहला लेती हूं। वैसे नहीं मालूम यह उम्र का तकाज़ा है या ज़िन्दगी के बाकी रहते थोड़े दिनों का एहसास।

जीती, अगर वहां काम का कोई भविष्य दिखाई देता है, तो जरूर स्ट्रगल करना, वरना व्यर्थ में मत भटकना। यहां घर बैठे हमें सूखी दाल-रोटी भी बहुत है। आज मैं अस्सी बरस की या पिछले ज़माने की औरत की तरह बातें कर रही हूं।

शायद शाश्वत यही होती है।

वही शाक्षत  
माजा

## खत अमृता का

मेरे मज़हब, मेरे ईमान,

तुम्हारे चेहरे का ध्यान करके मज़हब जैसा सदियों पुराना लफ़ज़ भी ताज़ा लगता है और  
तुम्हारे खत?

लगता है जहां गीता, कुरान, ग्रंथ, बाइबल आकर रुक जाते हैं उसके आगे तुम्हारे खत  
चलते हैं...

अवतार दो-तीन दिन मेरे पास रह गई है। कल शाम गई है।

मेरी मेज़ पर खलील जिब्रान का स्कैच देखकर पूछने लगी, ‘यह इंद्रजीत का स्कैच है?’

मुझे अच्छा लगा। उसने धोखा भी खाया, तो खलील जिब्रान के चेहरे के साथ।

नक्शों में फर्क हो सकता है, पर असल बात तो विचारों की है।

सचमुच तुम्हारे इस नए खत को पढ़कर तुम्हारा और खलील का चेहरा मेरे सामने एक  
हो गया है।

एक पाकीज़गी जो तुममें देखी है, वह मैंने किताबों में पढ़ी तो ज़रूर है, लेकिन और  
किसी परिचित चेहरे में नहीं देखी।

तुम्हारे जाने के बाद एक कविता लिखी है ‘रचनात्मक क्रिया’ और एक ‘आर्टिकल’, एक  
कहानी भी, पर यह सब कुछ मेरी छोटी-मोटी कमाई है।

मेरी ज़िन्दगी की असल कमाई मेरा इमरोज़ है।

अब घर कब आओगे? मुझे तारीख लिखो, ताकि उंगलियों पर दिन गिनूं तो उंगलियां  
अच्छी लगने लगें।

6.10.68

तुम्हारी  
ज़ोरबी

## खत अमृता का

इमूँ

जो शहर तुम्हारे हाथों को काम से भर दे, वह शहर तुम्हें मुबारक!

कल ‘नागमणि संध्या थी, नारियल फोड़ा, गुड़ तोड़ा और सब से पहले एक टुकड़ा तुम्हारी याद के मुंह से लगा दिया।

लगभग अठारह व्यक्ति आए थे, अच्छी संध्या थी, गहरी, गम्भीर!

सैलू<sup>1</sup> अभी नहीं आया। पन्द्रह तारीख से हर खटखटाहट से चौंक पड़ती हूं। कल दोपहर घबराकर तार दे दिया।

अभी जवाब नहीं आया है। उसकी मिस स्टालिन<sup>2</sup> भी फोन करके पूछ चुकी है, “खत नहीं आया?” मैं उससे पूछती हूं, “तुम्हारे पास भी खत नहीं आया?” बीच में एक जैनरेशन का फर्क है-पर औरत है, चाहे मां हो या महबूबा।

नेहरू प्राइज़ के लिए जो रूसी आए थे, वे मिलने आए।

मरियम तीन-चार बार घर आई। दो प्यारी रूसी कविताएं दे गई हैं ‘नागमणि’ के लिए। एक को अनुवाद कर लिया है। उस कवि की तस्वीर भी वह दे गई है।

कल सवेरे जर्मन प्रतिनिधि से मिलकर, जर्मन शब्दों के ठीक उच्चारण नोट करूँगी। प्रैस में देने से पहले।

जर्मनी से खत आया है कि कहानियों की इस किताब 'जंग के बाद' की तरह जर्मन कविताओं की किताब भी छापी जाए।

अगले साल सोचूंगी। इस साल तो इन पचीस कहानियों के अनुवाद कर-करके थक गई हूँ।

साउथ अफ्रीका वालों का दिल्ली का दफ्तर मिल गया है। रिचर्ड रॉयल की तस्वीर के लिए उन्होंने अपने लंदन ऑफिस को लिखा है। किसी दिन घर आकर मुझसे मिलना चाहते हैं

18.11.68

तुम्हारी  
ज़ोरबी

- 
1. अमृता का बेटा नवराज, जिसे प्यार से सैलू भी कहते हैं।
  2. उन दिनों नवराज की एक दोस्त।

## खत अमृता का

मेरे इमवा,

तुम्हारा परमानेंट पता मैं, मेरा परमानेंट पता तुम।

अभी मिले तुम्हारे खत से लगता है कि मेरे खत तुम तक नहीं पहुंच रहे हैं। मेरे खतों के साथ अभी यह जुल्म होना बाकी था?

आज सवेरे तुम्हारी बेटी रुखसत की है। तुम्हारा कमरा इस समय उस आंगन जैसा लग रहा है, जहां से डोली रवाना की हो, सुर्खरू भी और खाली भी।

सैलू का फोन आया था कल रात। वह 25 तारीख को आएगा। फोन पर ‘जन गण मन’ गा रहा था..

उसकी आवाज से एक ख्याल सूझ आया, गुरु नानक पर महाकाव्य लिखने के लिए ‘नवयुग’ वाले कह रहे थे। वह तो मैं नहीं लिखूँगी। पर एक ख्याल आया है, तृप्ता (नानक की मा) जब गर्भवती थी, उसे गर्भ के दिनों में कैसे सपने आते होंगे, वह लिखूँ।

कविता का नाम हो, ‘गर्भवती’। नानक जैसा पुत्र गर्भ में डालकर उसे ज़रूर बड़े प्यारे सपने आते होंगे।

21.11.68

तुम्हारी  
ज़ोरबी

## खत अमृता का

मेरे जीती,

सैली बहुत अच्छी किताबें लाया है।

इस समय जो पढ़ रही हूं, वह है, “The true Believed by eric hoffer. तुम्हें भी बहुत अच्छी लगेगी।

क्या ‘क्लीयरिटी’ है सोच में।

सैली के साथ शाम भरी-भरी है। वह सिर्फ किताबों की बातें करता है और किताबों की बातें कोई मेरे साथ चाहे हश्र तक करता रहे।

इस समय दोपहर है। सैली अपने कमरे में रिकॉर्ड बजा रहा है और उसके पास मिस स्टालिन बैठी है।

मेरे पास हर समय तुम...

29.11.68

तुम्हारी  
ज़ोरबी

## खत अमृता का

जीती,

अभी-अभी तुम्हारे हाथों की बनी रचना देखी। ऐसा लगा कि तुम से मिलन हो गया। इस समय मेरे सामने ‘अतीत की परछाइयां’ हैं। अभी डाकिया यह किताब देकर गया है। इसके टाइटल से आंखें परे नहीं हो रहीं। टाइटल पर इतना अपना चेहरा दिखाई नहीं दे रहा, जितना तुम्हारा।

तुम्हारी कला को सौ-सौ नमस्कार!

और सुनो, मेरी आज की कविता में तृप्ता अपनी कोख के आगे मस्तक झुकाती है।

कोख उन हाथों का ‘सिंबल’ है, जिन्होंने नानक जैसी रचना रची।

मैं तुम्हारे हाथों के आगे मस्तक झुकाती हूं, तुम्हारे रचनकार हाथों के आगे। किसी भी कलाकार की कोख उसके हाथ होते हैं।

21 तारीख को डाक की स्ट्राइक खुल गई थी। इसलिए ‘नागमणि’ लेकर पोस्ट आफिस गई थी। वहां उन्होंने कहा, ‘हम लेने से इनकार नहीं करते, पर आपको सलाह देते हैं कि आज पोस्ट न करें। पिछले बैग कई दिनों से भरे पड़े हैं और कर्मचारी इतना काम एक साथ नहीं निकाल सकते। इसलिए पर्चे, अखबार फाड़-फाड़कर फेंक रहे हैं। सोमवार फोन कर लीजिएगा। अगर हालात ठीक हो गए, तो ‘नागमणि’ पोस्ट कर दीजिएगा।

सो आज अभी ‘नागमणि’ पोस्ट करके आई हूं।

इस समय मेरे शरीर पर एक पसीना धूप का है, एक तुम्हारी गैरहाज़िरी का।

मैं दो तरह के पसीने से भीगी हुई हूं।

तुम्हारी ज़ोरबी, तुम्हारी ऐमी, तुम्हारी माजा,

तुम्हारी  
बिन्ना

## खत अमृता का

जीती,

कितना अजीब लग रहा है।

सैली की पहली कमाई हाथ में ली।

उसे छुट्टियों में कोई एक प्रॉस्पैक्टिव बनाने के 80 रुपए मिले हैं। चार रुपए बोर्ड के काटकर 76 रुपए नकद दिए गए हैं।

वह आते समय तीन रुपए की रीजेंट सिगरेट खरीदकर मेरे लिए ले आया और 73 रुपए नकद।

दोपहर के वक्त यह कमाई हथेली पर रखी। शाम के वक्त तुम्हारा खत।

मेरी दोनों हथेलियां इस समय अमीर हैं।

24.12.68

तुम्हारी  
ज़ोरबी

## खत अमृता का

....,

यहां मैं इस तरह अकेली पड़ी हूं, जैसे अंधे की माँ उसे मस्जिद में अकेला छोड़ आए।

टूट जाए रेलगाड़ियां, जो तुम्हें लौटाकर नहीं लातीं।

गुस्से से भरी  
ज़ोरबी

कल गुलज़ार आया था, ‘सुना, आपकी तबीयत ठीक नहीं है। खबर लेने आ गया। क्या बात है?’

मैंने जवाब दिया, ‘वैसे तो ठीक हूं, पर शाम को दर्द शुरू हो जाता है, जैसे ही सूरज झूबता है।’

गुलज़ार हंसने लगा, ‘पुराने समय में किसी ने ‘काल’ को पाये से बांधा था, आप सूरज को पाये से बांध लीजिए। इसे मत ढूबने दीजिए।

मैंने उसे बताया, ‘वह तो मैंने बांध रखा है शाम को जब जीती का खत आता है, तो वह सूरज ही तो होता है।’

सच जीती, तुम्हारा खत शाम का सूरज ही तो होता है।

क्या मैं कम करामाती हूं। मैं भी सूरज को पाये से बांध सकती हूं...

सांस-सांस से तुम्हारा इंतज़ार करती हूं...

3.1.69

ज्ञोरबी

## खत अमृता का

जीती,

तुम्हारे साथ जीना मिले, तो एक ज़िन्दगी थोड़ी है। एक तो आज इतवार है। दूसरे बेहद ठंड है, फिर एक कंधे में दर्द भी है।

शाम का अंधेरा मेरी हड्डियों में घुलता जा रहा था कि तुम्हारा खत आ गया।

अब लग रहा है, बाकी उम्र थोड़ी क्यों रहती है? ‘शी’ तो अपने महबूब को मिलने के लिए हज़ारों साल जीती रही, पर मैं वह ‘शी’ हूं, जो तुमसे मिलने के बाद हज़ारों साल जीना चाहती है।

मेरी तबीयत ठीक नहीं, पर कल जश्ने कृश्न चन्द्र था, गुलज़ार गाड़ी में ले गया था। वहां दो मिनट कृश्न को स्टेज पर ग्रीट करना था। रेवती का तकाजा था। इसलिए दो-एक मिनट बोली। डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने प्रिज़ाइड किया था।

पता है, मैंने क्या कहा? उर्दू में कहा था –

‘तूने देखी है वह पेशानी, वो रुखसार,  
वो होंठ, ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर में लुटा दी हमने।’

फ़ैज़ का यह शेर अपने रकीब के लिए था। सोचती हूं, हम लोग जो एक कलम से मोहब्बत करते हैं, हम भी रकीब हैं एक-दूसरे के।

हम ही जानते हैं, यह दर्द क्या है? हम ही जानते हैं,

हम अपनी ज़िन्दगी क्यों लुटाते हैं? कृश्न हमारा प्यारा दोस्त है, प्यारा रकीब है।

आज उसे सबसे बड़ा यही कम्पलीमेंट देती हूं कि हम, उसके रकीब, उसे सलाम करते हैं और तहेदिल से उसकी सेहत की दुआ मांगते हैं। इस समय मेरी तबीयत ठीक नहीं। बिस्तर में बैठकर तुम्हें खत लिख रही हूं।

यह खत मेरी नौ सौ मील लंबी बांह है।

12.1.69

तुम्हारी  
ज़ोरबी

# खत अमृता का

माजा

सैली

इमरोज़

कैंडी

नागी

मेरे जीती,

यह पोर्टेट दुनिया की किस दीवार पर लगाऊं, इमा, कोई दीवार भी तो साबुत नहीं है।  
किसी दीवार में तरेड़े-ही-तरेड़े हैं, तो किसी दीवार पर सीलन-ह-सीलन है।

ईश्वर न जाने कैसा आर्किटेक्ट है।

मैं तो जब भी किसी से मिली हूं और अकेली हो गई हूं।

हर मिलन, हर परिचय, जैसे अकेलेपन का समर्थन करने के लिए होता है।

पहले सब मुझसे और तुम से दुखी थे, अब सैली और नागी भी इसी गिनती में आ गए हैं।

मिस स्टालिन की माँ सैली से दुखी है और पंजाबी की साहित्यिक दुनिया नागी से।

नए अंक की छपाई के लिए जितनी बार प्रैस को फोन किया, चुभता हुआ जवाब मिला,  
'नागमणि शाम का पर्चा न छपे तो क्या क्यामत आ जाएगी।'

मैटर कुछ बढ़ता हुआ लगता था। आज फोन पर कहा, आखिरी आर्टिकल ज़रूर जाएगा। अगर कहानी कुछ बढ़ गई है, उसे पूरा कर लें। कविताओं में पृष्ठ घटा लेंगे। तो जवाब मिला, ‘आखिरी आर्टिकल नहीं छपेगा, तो कौन-सा इंकलाब आने वाला है, जो रुक जाएगा?

बहुत रुखी, खीझी हुई आवाज़ थी। जी करता है, अपने सोने के कमरे में एक मशीन लगा लूं, खुद कम्पोज़ करूं खुद प्रिंट कर लूं।

कागज़ वाले जैन को भी कोई पंद्रह बार फ़ोन किया। वह खुद सिर्फ एक बार मिला, बाकी बार संदेशां छोड़ा, पर वापसी फ़ोन कभी नहीं आया। अभी तक लिफाफे नहीं मिले।

आज बालज़ाक याद आ रहा है। उसने भी मेरे जैसी हालत भुगती थी। पहले पब्लिशर बना, फिर कागज़ वालों से दुखी होकर कागज़ बनाने का कारखाना खोल लिया। अब तो इमा खुद ही खुदा बनने का वक्त आ गया है। यह सारी दुनिया छांटकर नई दुनिया बनाने का वक्त...

15.1.69

ज़ोरबी

## खत अमृता का<sup>1</sup>

.....

तुम्हारी गैरहाज़िरी में अपना आप भी ज़िन्दगी से गैरहाज़िर लगता है।

आज किसी होम्योपैथ डॉक्टर के पास जाओ और कहो कि अब तुम्हें वह पुढ़िया दे, जिससे आदमी इट स्टेशन पर चला जाए, टिकट बुक कराए और घर आने की बात करे।

हाय ओ रब्बा!

तुम्हारी  
रेशमा

---

एक पोस्ट कार्ड।

## खत अमृता का

इमा,

जुहू के किनारे पत्तों से ढका हुआ एक कॉटेज ख्यालों में अभी बस गया है। जी करता है, सारे बिखराव सिमट जाएं।

बिल और टैक्स सब कांटों की तरह चुभ रहे हैं। अभी पानी का बिल आया है, कार की इंश्योरेंस का भी आने वाला है और हाऊस टैक्स का भी।

‘नागमणि’ की मोहताजी है, प्रैस वालों के मूड की। सब समेट दूं और कॉटेज में फूल-पत्ते उगाती रहूं, पौधों को पानी देती रहूं और बस, दो वक्त तवा रखकर कुछ रांध-पका लूं।

न शोहरत चाहिए न पैसा।

बस, फूलों के साथ मिलकर फूलों की तरह खिलूं और फिर चुपचाप मुझ जाऊं।

तुम जो भी कमाकर लाओ, आटा-दाल पका लूं दो जून का। ओ, मेरे इमू!

23.7.71

माजा

## खत अमृता का

इमवा,

शुक्र है हर सूरज तुम्हारा खत लेकर आता है और किरनों जैसे तुम्हारे ख्याल... नहीं तो  
यह दुनिया रहने के काबिल नहीं है।

आज टी.वी. की रिकॉर्डिंग थी। वहां जाकर मालूम हुआ, हरिभजन अपनी कड़छियां-  
चमचे लेकर बैठा हुआ है।

घर से 'काज़ानज़ाकिस' पढ़ती हुई गई थी, ग्रीक पैशन। वहां जाकर 'कन्ट्रास्ट' देखा।

पर शुक्र है, आते ही तुम्हारा खत मिला, पाक 'काज़ानज़ाकिस' के दिल की तरह  
खूबसूरत।

सो रास्ते की गर्द झाड़कर मैंने तुम्हारा खत पढ़ा और अपनी रौ में आ गई।

इस बार तुम्हें जल्दी आना पड़ेगा। तुम्हें भी यूरोप जाने की तैयारी करना है, फिर वापिस  
आकर बम्बई में रह लेंगे।

11.7.72

तुम्हारी  
ऐमी

## खत अमृता का

ओ, मेरे इमा,

अगर किसी दिन तुम्हारे बिना जीना पड़ा, तो ईश्वर से कह दूंगी, ‘नहीं।’

तुम्हारे बगैर लाचार होकर जीने से मुझे बिल्कुल इनकार है।

अगर ज़िन्दगी में से ज़िन्दगी को घटा दें, तो बाकी जो कुछ रहता है, वह मुझे नहीं चाहिए। तुम्हारा कल रात का फोन मेरी सांसों में जान डाल गया।

यूरोप की कोई बात नहीं। अगर बम्बई हमें कुछ भविष्य दे जाए, तो वहीं ठीक है।

19.7.72

माजा

## खत अमृता का

ओ, मेरे इमवा,

आज सैली दो-तीन दिन के लिए पटियाला गया है।

अकेलापन और गाढ़ा हो गया है, बिल्कुल रोमन अम्पायर की तरह बेसिर-पैर।

एच.जी.वेल्स लिखता है... रोमन अम्पायर बढ़ता गया अनप्लेंड नॉवल की तरह और फिर एक ही बार में 'कोलेप्स' हो गया।

यह अकेलापन भी एक बार में 'कोलेप्स' हो जाएगा, जब तुम आओगे।

27.7.72

तुम्हारी  
ऐसी

## खत अमृता का

इमवा,

आज तुम्हें एक दिलचस्प बात बताऊं। कल देविंदर आया था। बताने लगा कि उर्दू का कोई शायर है, वहीं रेडियो स्टेशन में।

देविंदर से कहने लगा, अमृता प्रीतम से मुझे 3000 रुपए ले दो, बड़ी ज़रूरत है। सुना है, वह लोगों की बड़ी मदद करती है।

नवराज पास ही बैठा हुआ था। कहने लगा, ‘देविंदर अंकल, उससे कहिए कि धीरे बोले, अगर कहीं इंदिरा गांधी ने सुन लिया, तो अमृता प्रीतम को नेशनलाइज़ कर देगी।’

आज सोमवार है। अभी-अभी ही सूरज चढ़ा है। ज़रा ऊंचा होगा, तो तुम्हारा खत आएगा।

तुम्हारी आवाज़ न जाने कब आएगी, पैरों की आवाज़, सीढ़ियों को चढ़तें।

27.5.74

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

इमवा,

ज़िन्दगी सचमुच निरर्थक है। मुझे लगता है, ‘आई एम द विक्टिम ऑफ माई ओन आइडियलिज़म ।’

जो कुछ आज तक लिखा, सोचा, उसका इस दुनिया में क्या मतलब है?

‘गुलाग आर्चीपेलेगो’ पढ़ रही हूं, कितना भयानक इतिहास! कभी रात के दो बजे जाग जाती हूं, कभी तीन बजे, लेकिन रात का अंधेरा कभी खत्म होने को नहीं आता।

ऊपर से दिसंबर का महीना। लगता है, हम ज़िन्दगी के कर्जदार हैं, इन्कमटैक्स की किस्त, कार टैक्स की किस्त, बीमा की किस्त और फिर ऊपर से कम्पलसंरी टैक्स भरो, फिर खाटे-पीढ़े गिनवाओ और फिर आनेवाले समय की कोई सिक्योरिटी नहीं।

अब तो कुछ लिखने का भी दिल नहीं करता। इंसान की अच्छाई की झूठी आशा अपने आप भी सारी उम्र भुगती और लोगों को भी झूठे सपने देखने के लिए कहा है।

यह सब लिखा हुआ किसके काम आया है?  
क्या इससे दुनिया पहले से कुछ अच्छी हुई है?  
बिल्कुल गलत...

कभी कुछ नहीं होगा।

रही बात फिल्म की अगर बासु को उसकी बात भी याद नहीं रही, तो मैं याद कराने के लिए बम्बई नहीं जाऊंगी।

मैं बहुत थक गई हूँ।

जहां और सब फिजूल लिखा हुआ पड़ा है, वहां यह भी सही।

मुझे कोई गिला नहीं, न ही कोई उम्मीद ।

14.6.75

**माजा**

## खत अमृता का

इमा,

कल तुम्हारा कमरा बंद रखा था।

आज बहुत दिल घबराया, तो कमरा खोल दिया...

पर सारे फर्श पर फैली हुई और छत तक पसरी हुई चुप नहीं टूटती।

12.7.75

तुम्हारी  
ऐमी

## खत अमृता का

मेरे इमवा,

चंडीगढ़ से फोन आया कि पंजाब गवर्नमेंट 'औरत की पंजाब को देन' पर फिल्म बनाना चाहती है। वही पूजा कपूर और भारती डायरेक्टर का फोन था। मैं गवर्नमेंट को उसका सिनोप्सिस लिखकर भेजूँ। सिनोप्सिस एप्रूव हो गई, तो पूजा फिल्म बनाएगी।

मैंने एप्रूव होने की भार्त के कारण स्क्रिप्ट लिखने से इनकार कर दिया।

गवर्नमेंट की फाइलों और कमेटियों के रौशन दिमाग मैंबरों के लिए मैं कुछ नहीं कर सकती।

पहले एफ.एफ.सी. को बहुत भुगत चुकी हूँ।

ज़िन्दगी के दो-चार दिन बाकी हैं। वे अपने आप के साथ, तुम्हारे साथ और दुनिया की बढ़िया किताबों के साथ गुज़ारूँगी।

5.15.75

तुम्हारी  
माजा

## खत अमृता का

इमा,

कल रात एक अजीब बात हुई। रात को देर तक सोल्जेनिट्सिन की ‘गुलाग’ पढ़ती रही।

उसका पहला चैप्टर किसी अरेस्ट के बारे में है कि कैसे आधी रात को अचानक दरवाजे पर खट-खट हुई और कुछ लोग एक मासूम आदमी को पकड़कर ले जाते हैं।

वह पूछता रह जाता है ‘मैं? पर क्यों?’

इस क्यों का जवाब आज तक किसी को नहीं मिला और वह आदमी बीसियों बरस के लिए जेल की कोठरी में डाल दिया जाता है या उसी रात को बाहर कहीं गोली से मार दिया जाता है...

और रात को मुझे सपना आया, हमारे दरवाजे पर खट-खट हुई। वे लोग मेरे दारजी को पकड़कर ले गए... सपने में दारजी अभी जिंदा है, फिर सवेरे पता लगा कि उन्होंने दारजी को बंदूक की गोली से मार दिया है... भला यह सपना क्यों आया?

क्या लाखों मासूम लोगों की मौत मेरे दिल को इतना हिला गई कि उनकी मौत मुझे अपने पिता की मौत जैसी लगी?

या यह कि दारजी की मौत वास्तव में स्वाभाविक नहीं हुई थी... मेरी आंखों से दूर हुई थी... मैं कुछ नहीं जानती, कैसे हुई थी, पर यह ख्याल इन तीस बरसों में कभी नहीं आया था... पहली बार आया है।

तुम जानते हो, दारजी की मौत के बाद उस लड़के ज्ञानसिंह ने उनकी ज़मीन जाली दस्तखत करके बेच दी थी। क्या पता... शायद उनकी मौत एक राज हो... जो मैंने कभी नहीं जाना।

अजीब सपना था!

28.12.75

**माजा**

## खत इमरीज़ का

मेरी माजा,

तुम यह किताब पढ़ रही हो, महसूस कर रही हो, उस मुद्दे पर एक सवाल उठा रही हो,  
यह एक बहुत बड़ी कोशिश है और इसी कोशिश का नाम ‘अमृता है।

मेरी शायरा, तुमने अपने लिए और दुनिया, दोनों के लिए हसीन सपने देखे हैं... अमन के  
सपने... मोहब्बत के सपने... उम्मीद के सपने! यह क्यों सोचती हो कि दिलों पर कुछ भी  
असर नहीं होने वाला।

यह क्यों भूल जाती हो कि बेइंसाफ़ी और मजबूरी के खिलाफ तुम्हारी आवाज़ बहुत  
बुलंद है, मगर आह... को चाहिए इक उम्र असर होने तक।

मेरी महबूबा, यह नहीं कह सकता कि अब इस दुनिया में किसी और ईसा को सलीब पर  
नहीं चढ़ाया जाएगा, लेकिन इतना कह सकता हूं कि उसके बाद भी दुनिया कुछ बदलेगी  
ज़रूर, जैसे पहले बदली थी....

मेरी जान, मुझसे इक वायदा करो... खुश रहने का...

30.12.75

इमा

## खत अमृता का

मेरे इमा,

तुम्हारे जैसी सोच, तुम्हारी जैसी शख्सियत अगर इस दुनिया में न होती, तो तुम्हीं  
बताओ, कहां जाती मैं।

अच्छा, अब जल्दी से घर लौट आओ।

4.1.76

तुम्हारी  
माजा

•••

चित्र



वह जब भी मिलती है अक्सर एक  
अनलिखी नज़म नज़र आती है इस  
अनलिखी नज़म को मैं कई बार  
लिख चुका हूं पर यह अनलिखी ही  
रह जाती है।

जवान सोच के साथ उड़कर मैं  
ज़िन्दगी का आसमान भी देख आया  
और एक सच भी कि मनचाही  
ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी का आसमान  
है...



पैर खोलो तो धरती अपनी है पंख  
खोलो तो आसमान...



तू मेरी समाज और मैं तेरा समाज  
इस से ज्यादा और कोई नहीं समाज





ना किसी से बात करके बात बनी ना  
किसी के साथ चलकर कहीं पहुंच ना  
किसी के साथ सोकर जागे

वह मिली उसने मुझे देखा पता नहीं  
क्या देखा मैंने उसे देखा पता नहीं  
क्या देखा बोले भी नहीं पर बात बन  
गई चले भी नहीं और पहुंच गये  
सोये भी नहीं और जाग गये...



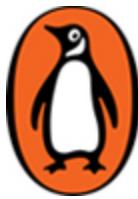
मनचाहीं नस्ल सिर्फ तब पैदा होगी  
जब बच्चा ना अनचाहे मर्द का होगा  
ना अनचाहीं औरत का...



खाली काग़ज़ भी साफ़ दिल जैसा  
होता है जिस पर लिख सकते हैं  
अपनी जान किसी के नाम...



मैं रंगों से खेलता हूं रंग मुझसे खेलते  
हैं रंगों से खेलता-खेलता मैं भी रंग  
हो जाता हूं कुछ बनने कुछ ना बनने  
से बेफिक्र बेपरवाह...



# THE BEGINNING

Let the conversation begin...

Follow the Penguin [Twitter.com@PenguinIndia](#)

Keep up-to-date with all our stories [Youtube.com/PenguinIndia](#)

Like 'Penguin Books' on [Facebook.com/PenguinIndia](#)

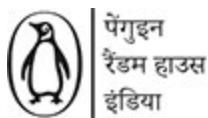
Find out more about the author and  
discover more stories like this at [Penguinbooksindia.com](#)

# हिन्द पॉकेट बुक्स

यूएसए। कैनेडा। यूके। आयरलैंड। ऑस्ट्रेलिया  
न्यू ज़ीलैंड। भारत। दक्षिण अफ्रीका। चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ का हिस्सा है,  
जिसका पता [global.penguinrandomhouse.com](http://global.penguinrandomhouse.com) पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा. लि.,  
सातवीं मंज़िल, इनफिनिटी टावर सी, डी एल एफ साइबर सिटी,  
गुडगांव 122002, हरियाणा, भारत



प्रथम हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा 2011 में प्रकाशित  
यह हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2018 में प्रकाशित  
कॉपीराइट © इमरोज  
अनुवाद © हिन्द पॉकेट बुक्स, 1997  
सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, जिनका यथासंभव तथ्यात्मक सत्यापन किया गया है, और इस संबंध में  
प्रकाशक एवं सहयोगी प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

This digital edition published in 2019.

eISBN: 978-9-353-49474-2

[www.penguin.co.in](http://www.penguin.co.in)

अमृता प्रीतम  
और इमरोज़ के

# ख़तों का सफ़रनामा



सतयुग  
मनचाही जिन्दगी  
का ही नाम है,  
किसी आने वाले  
युग का नहीं...

संपादक  
उमा त्रिलोक

